विशद
वृहद् नन्दीश्वर विधान

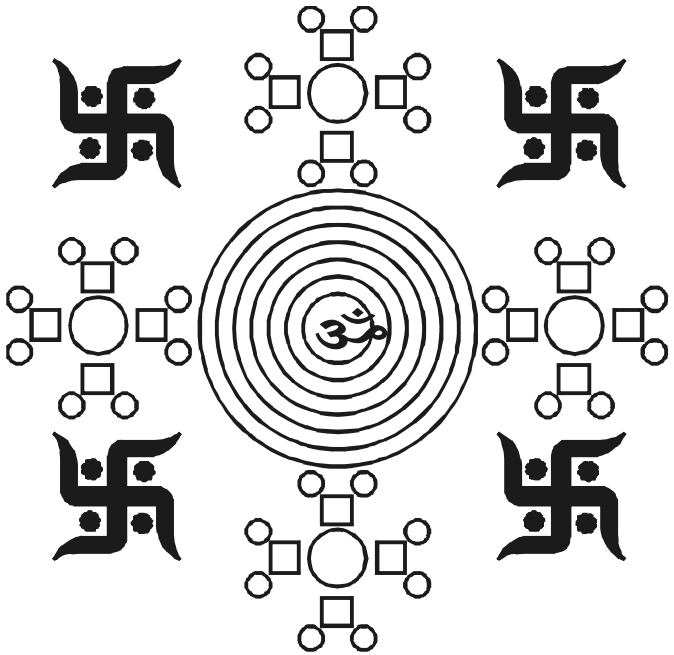

जाप्य मंत्र

(1) ॐ ह्रीं नन्दीश्वर संज्ञाय नमः।
(2) ॐ ह्रीं महाविभूति संज्ञाय नमः।
(3) ॐ ह्रीं त्रिलोकसार संज्ञाय नमः।
(4) ॐ ह्रीं चतुर्मुख संज्ञानय नमः।
(5) ॐ ह्रीं पंचमहालक्षण संज्ञाय नमः।
(6) ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान संज्ञाय नमः।
(7) ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय संज्ञाय नमः।
(8) ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः।

रचयिता

प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति – **विशद वृहद् नन्दीश्वर विधान**

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – द्वितीय-2017 ● प्रतियाँ :1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती, क्षुल्लक 105 श्री विसोमसागरजी
क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी
सपना दीदी, आरती दीदी

सम्पर्क सूत्र – 9660996425 ,09829127533,

प्राप्ति स्थल –
1. सुरेश जी सेठी,
पी-958, गली नं. 3, शांति नगर, जयपुर मो. 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301
3. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
4. जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली
मो. 9818115971

मूल्य – 101/- रु. मात्र

अर्थ सौजन्य (गायत्री नगर, महारानी फार्म)

1. संगीता, सौरभ, शुभम जैन (छाबड़ा)
2. संतोष-निर्मला, अंकित-आयुषी, युवान गंगवाल
3. कपूरचन्द पाटनी
4. हीरालाल - सुशीला बगड़ा
5. आलोक चौकड़ायत
6. संतोष, स्नेहलता, नगेन्द्र, सीमा, ईशा राँवका
7. पन्नालाल - कमला सोनी
8. मूलचन्द छाबड़ा
9. विजय - रेखा, गुँजन - सीमा
प्रगीत - प्रीति सौगाणी
10. संतोषचन्द, मनोज, प्रमोद, विनोद कुमार जैन (बाँसखो वाले)

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● मो.: 9829050791

भक्ति के पल

नन्दीश्वर-सद्द्वीपे, नन्दीश्वर-जलधि-परिवृते धृत शोभे ।
चन्द्रकर-निकर-सन्निभ-रुद्र-यशो-वितत-दिङ्-मही मण्डलके ।।
तत्रत्याञ्जन-दधिमुख-रतिकर-पुरु-नग-वराख्य-पर्वत-मुख्याः ।
प्रतिदिश-मेषा-मुपरि, त्रयो-दशेन्द्रार्चितानि जिन भवनानि ।।

अर्थ- श्रेष्ठ नंदीश्वर समुद्र जिसको घेरे हुए है जिसकी पृथ्वी अत्यंत शोभनीय चन्द्रमा की किरणों के समान चारों तरफ यश को फैला रही इस प्रकार नंदीश्वर द्वीप में चारों दिशाओं के मध्य में अञ्जनगिरि इसके चारों कोंणो पर दधिमुखगिरि दधिमुखों के बाह्य कोंणो पर रतिकरगिरि शोभित हो रही है जिन पर जिन भवन में इन्द्र आदि निरन्तर जिनपूजा अर्चा करते हैं।

जो श्रावक अपने कर्त्तव्यों से विमुख रहता वह श्रावक नहीं माना जाता है। जिसके पास श्रद्धा, विवेक एवं क्रिया नहीं वह कैसा श्रावक, क्रिया के साथ श्रावक धर्म के परिपालन करने की भूमिका में कुन्दकुन्द स्वामी ने रयणसार में बताया है कि-

दाणं पूजा मुक्खं सावय, धम्मो सावया तेण विणा।
झाण झयणं मुक्खं, जई धम्मो तेण विपणा सो वि।।

अर्थात् दान और पूजा श्रावक का मुख्य धर्म है, जो प्रतिदिन दान और पूजा नहीं करता वह श्रावक की श्रेणी में नहीं है तथा ध्यान और अध्ययन साधु का मुख्य धर्म है। ध्यान और अध्ययन से दूर रहने वाले साधुओं की श्रेणी में नहीं आते। अपनी-अपनी श्रेणी के अनुसार अपने धर्म, कर्त्तव्य में आगे रहना चाहिए।

परम पूज्य आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज ने अपनी प्रज्ञा के माध्यम से **'नंदीश्वर विधान'** को बड़े सुन्दर शब्दों में निर्मल भावों से एक-एक शब्द संजोकर विधान का रूप दिया। श्रावक पहले एक पूजा करना शुरू करता है, धीरे-धीरे विधान, यज्ञ आदि करने में सक्षम हो जाता है। यह विधान विशेष तौर पर अष्टाह्निका पर्व में किया जाता है, अष्टाह्निका पर्व वर्ष में 3 बार कार्तिक, फाल्गुन एवं आषाढ़ मास में आते हैं। इन पर्वों के अलावा अन्य समय में जो भी विशुद्ध भावों से नंदीश्वर विधान करता है वह देवगति में जाकर साक्षात् ही जाकर पूजा विधान करता है।

पूज्य गुरुदेव की लेखनी को क्या उपमा दी जाए, मेरे पास कोई शब्द नहीं। हे गुरुदेव ! आप संयम के मार्ग पर निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हों। साथ ही हम भी आपके चरण चिह्नों के पीछे बढ़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करें। त्रय बार कोटिशः नमोस्तु-3

जब-जब आपसे मिलने की उम्मीद नजर आयी, तब-तब मेरे पाँव में जंजीर नजर आयी।
गिर पड़े आँसू आँख से, हर एक आँसू में, मेरे गुरुदेव आपकी तस्वीर नजर आयी।।

चरण चंचरिका
ब्र. सपना दादी (संघस्था)

श्री अष्टाह्निका नन्दीश्वर (व्रत कथा)

वन्दो पाँचों परम गुरु, चौबीसों जिनराज। अष्टाह्निका व्रत की कहूँ, कथा सबहि सुखकाज।।

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र सम्बन्धी आर्यखण्ड में अयोध्या नामका एक सुन्दर नगर है। वहाँ हरिषेण नाम का चक्रवर्ती राजा अपनी गन्धर्व श्री नाम की पट्टरानी सहित न्यायपूर्वक राज्य करता था एक दिन वसंत ऋतु में राजा नगरजनों तथा अपनी 96000 रानियों सहित वनक्रीड़ा के लिए गया।

वहाँ निरापद स्थान में एक स्फटिक शिला पर अत्यन्त क्षीणशरीरी महातपस्वी परम दिगम्बर अरिंजय और अमितंजय नाम के चारण मुनियों को ध्यानारूढ़ देखे। सो राजा भक्तिपूर्वक निज वाहन से उतरकर पट्टरानी आदि समस्तजनों सहित श्री मुनियों के निकट बैठ गया और सविनय नमस्कार कर धर्म का स्वरूप सुनने की अभिलाषा प्रगट की। मुनिराज जब ध्यान कर चुके तो धर्मवृद्धि का आशीर्वाद दिया और पश्चात् धर्मोपदेश करने लगे।

मुनिराज बोले- राजा ! सुनो, संसार में कितने लोग गंगादि नदियों में नहाने को, कोई कन्दमूलादि भक्षण को, कोई पर्वत से पड़ने में, कोई गया में श्राद्धादि पिंडदान करने में, कोई ब्रह्मा, विष्णु शिवादिक की पूजा करने में, कालभैरों, भवानी काली आदि देवियों की उपासना में धर्म मानते हैं अथवा नवग्रहादिकों के जप कराने और कुतपस्वियों आदि को दान देने में कल्याण होना समझते हैं, परन्तु यह सब धर्म नहीं है और न इससे आत्महित होता है, किन्तु केवल मित्थात्व की वृद्धि होकर अनन्त संसार का कारण बन्ध ही होता है।

इसलिये परम पवित्र अहिंसा (दयामई धर्म को धारण कर), जो समस्त जीवों को सुखदायी है और निर्ग्रन्थ मुनि (जो संसार के विषयाभोगों से विरक्त ज्ञान ध्यान तप में लवलीन हैं, किसी प्रकार का परिग्रह आडम्बर नहीं रखते हैं और सबको किसी हितकारी उपदेश देते हैं।) को गुरु मानकर उनकी सेवा वैयावृत्त कर, जन्म, मरण, रोग, शोक, भय, परिग्रह, क्षुधा, तृषा, उपसर्ग आदि सम्पूर्ण दोषों से रहित, वीतराग देव का आराधन कर जीवादि तत्त्वों का यथार्थ श्रद्धान करके निजात्म तत्त्व को पहिचान, यही सम्यग्दर्शन हैं। ऐसे सम्यग्दर्शन तथा ज्ञानपूर्वक सम्यक्-चारित्र को धारण कर, यही मोक्ष (कल्याण) का मार्ग है।

सातों व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुण धारण, पंचाणु व्रत पालन इत्यादि गृहस्थों का चारित्र है और सर्वप्रकार आरम्भ परिग्रह रहित द्वादश प्रकार का तप करना, पंच महाव्रत, पंच समिति, तीन गुप्ति आदि का धारण करना सो, अट्ठाइस मूलगुणों सहित मुनियों का धर्म है (चारित्र है), इस प्रकार धर्मोपदेश सुनकर राजा ने पूछा- प्रभो ! मैंने ऐसा कौनसा पुण्य किया है जिससे यह इतनी बड़ी विभूति मुझे प्राप्त हुई है।

तब श्री गुरु ने कहा, कि इसी अयोध्या नगरी में कुबेरदत्त नामक वैश्य और उसकी सुन्दरी नामकी पत्नी रहती थी, उसके गर्भ से श्रीवर्मा, जयकीर्ति और जयचन्द ये तीन पुत्र हुए।

सो श्रीवर्मा ने एक दिन मुनिराज को वन्दना करके आठ दिन का नन्दीश्वर व्रत किया और उसे बहुत काल तक यथाविधि पालन कर आयु के अन्त में संन्यास मरण किया जिससे प्रथम स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुआ, वहाँ असंख्यात वर्षों तक देवोचित सुख भोगकर आयु पूर्णकर अयोध्या नगरी में न्यायी और सत्यप्रिय राजा चक्रबाहु की रानी विमलादेवी के गर्भ से हरिषेण नामका पुत्र हुआ हैं और तेरे नन्दीश्वर व्रत

के प्रभाव से यह नव निधि चौदह रत्न, छयानवें हजार रानी आदि चक्रवर्ती की विभूति यह छ: खण्ड का राज्य प्राप्त हुआ है। और तेरे दोनों भाई जयकीर्ति और जयचन्द्र भी श्री धर्मगुरु के पास से श्रावक के बारह व्रतों सहित उक्त नन्दीश्वर व्रत पालकर आयु के अन्त में समाधिमरण करके स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुए थे सो वहाँ से चयकर हस्तिनापुर में विमल नामा वैश्य की साध्वी सती लक्ष्मीमती के गर्भ से अरिंजय अमितंजय नाम के दोनों पुत्र हुए सो वे दोनों भाई हम ही हैं। हमको पिताजी ने जैन उपाध्याय के पास चारों अनुयोग आदि संपूर्ण शास्त्र पढ़ाये और अध्ययन कर चुकने के अनंतर कुमार काल बीतने पर हम लोगों के ब्याह की तैयारी करने लगे, परन्तु हम लोगों ने ब्याह को बंधन समझकर स्वीकार नहीं किया और बाह्याभ्यंतर परिग्रह त्याग करके भी गुरु के निकट दीक्षा ग्रहण की, सो तप के प्रभाव से यह चारण ऋद्धि प्राप्त हुई है। यह सुनकर राजा बोले- हे प्रभु ! मुझे भी कोई व्रत का उपदेश करो, तब श्री गुरु ने कहा कि तुम नंदीश्वर व्रत पालो और श्री सिद्धचक्र की पूजा करो। इस व्रत की विधि इस प्रकार है सो सुनों-

इस जम्बूद्वीप के आसपास लवण समुद्रादि असंख्यात समुद्र और धातकीखण्डादि असंख्यात द्वीप एक दूसरे को चूड़ी के आकार घेरे हुए दूने विस्तार को लिये है। उन सब द्वीपों में जम्बूद्वीप नाभिवत् सबके मध्य है। सो जम्बूद्वीप को आदि लेकर, जो धातकी खण्ड पुष्करवर, वारुणीवर, क्षीरवर, धृतवर, इक्षुवर और नंदीश्वर द्वीप में प्रत्येक दिशा में एक अंजनगिरि चार दधिमुख और रतिकर इस प्रकार (13) तेरह पर्वत हैं। चारों दिशाओं के मिलकर सब 52 पर्वत हुए। इन प्रत्येक पर्वतों पर अनादी निधन (शाश्वत्) अकृत्रिम जिन भवन हैं और प्रत्येक मंदिर में 108 जिनबिंब अतिशययुक्त विराजमान हैं, ये जिनबिंब 500 धनुष ऊँचे हैं। वहाँ इन्द्रादि देव जाकर नित्य प्रति भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं। परन्तु मनुष्य का गमन नहीं होता इसलिये मनुष्य उन चैत्यालयों की भावना अपने-अपने स्थानीय चैत्यालयों में ही भाते हैं और नंदीश्वर द्वीप का मण्डल मांडकर वर्ष में तीन बार (कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ मास के शुक्ल पक्षों में ही अष्टमी से पूनम तक) आठ दिन पूजनाभिषेक करते हैं और आठ दिन व्रत करते हैं। अर्थात् सुदी सप्तमी से धारणा करने के लिये नहाकर प्रथम जिनेन्द्र देव का अभिषेक पूजा करें, फिर गुरु के पास अथवा गुरु न मिले तो जिनबिंब के सन्मुख खड़े होकर व्रत का नियम करें।

सप्तमी से एकम् तक ब्रह्मचर्य रक्खें, सप्तमी को एकासन करें, भूमि पर शयन करें, सचित पदार्थों का त्याग करें। अष्टमी को उपवास करें, रात्रि जागरण करें, मंदिर में मण्डल मांडकर अष्टद्रव्यों से पूजा और अभिषेक करें, पंचमेरु की स्थापना कर पूजा करें, चौबीस तीर्थंकरों की पूजा जयमाला पढ़ें, नंदीश्वर व्रत की कथा सुनें और **ॐ नंदीश्वर संज्ञाय नमः।** इस मन्त्र की 108 बार जाप करें।

अष्टमी के उपवास से 10 लाख उपवासों का फल मिलता है नवमी को सब क्रिया अष्टमी के समान ही करना, केवल **ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूतिसंज्ञाय नमः।** इस मन्त्र की 108 जाप करें और दोपहर पश्चात् पारणा करें। इस दिन दश हजार उपवासों का फल होता है।

दशमी के दिन भी सब क्रिया अष्टमी के समान ही करें। **ॐ ह्रीं त्रिलोकसार संज्ञाय नमः।** इस मन्त्र की 108 जाप करें और केवल पानी और भात खावें। इस दिन के व्रत का फल साठ लाख उपवास के समान होता हैं।

ग्यारस के दिन भी सब क्रिया अष्टमी के समान करें, सिद्धचक्र की त्रिकाल पूजा करें और **'ॐ ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः'** इस मन्त्र की 108 बार जाप करे और ऊनोदर (अल्प भोजन) करें। इस दिन के व्रत से 50 लाख उपवास का फल होता हैं। बारस को भी सब क्रिया ग्यारस के ही समान करें और **ॐ**

ह्रीं पंचमहालक्षणसंज्ञाय नमः इस मन्त्र की 108 जाप करें तथा एकाशन करें। इस दिन के व्रत से 84 लाख उपवासों का फल होता हैं। तेरस के दिन भी सर्व क्रिया बारस के समान करें, केवल **ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान संज्ञाय नमः** इस मन्त्र की 108 जाप करे और इमली और भात का भोजन करें। इस दिन के व्रत से 40 लाख उपवास का फल मिलता है। चौदस के दिन सब क्रिया ऊपर के समान ही करें और **ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय नमः** इस मन्त्र की 108 जाप करे तथा त्रण (सूखा) साग आदि शुद्धि हो तो उसके साथ अथवा पानी के साथ भात खावें। इस दिन के व्रत का फल एक करोड़ उपवास का फल होता है।

पूनम के दिन सब क्रिया ऊपर के ही समान करे केवल **ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः** इस मन्त्र की 108 जाप करे तथा चार प्रकार के आहार त्याग करें (अनशन व्रत करें) इस दिन के व्रत का तीन करोड़ पाँच लाख उपवास के जितना फल होता है। पश्चात् एकम के दिन पूजनादि क्रिया के अनन्तर घर आकर चार प्रकार के संघों को चार प्रकार का दान करके आप पारणा करें। जो कोई इस व्रत को तीन वर्ष तक करता हैं उसे स्वर्गसुख मिलता हैं। पीछे कितने भव में नियम से मोक्षपद पाता हैं और जो पाँच वर्ष तक करता हैं वह उत्तमोत्तम सुख भोगकर सातवें भव मोक्ष जाता हैं तथा जो सात वर्ष एवं आठ वर्ष तक व्रत करता हैं वह द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की योग्यतापूर्वक उसी भव से मोक्ष जाता है। इस व्रत को अनन्तवीर्य और अपराजित ने किया सो वे दोनों चक्रवर्ती हुए और विजयकुमार इस व्रत के प्रभाव से चक्रवर्ती का सेनापति हुआ। जरासिंधु ने पूर्वजन्म में यह व्रत किया, जिससे वह प्रतिनारायण हुआ।

जयकुमार सुलोचना ने यह व्रत किया जिससे वह अवधिज्ञानी होकर ऋषभनाथ भगवान का 72 वाँ गणधर हुआ और उसी भव से मोक्ष गये। सुलोचना भी आर्यिका के व्रत धारण कर स्त्रीलिंग छेदकर स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुई। श्रीपाल का भी इससे कोढ़ गया और उसी भव से मोक्ष भी हुआ। अधिक कहाँ तक कहा जाय ? इस व्रत की महिमा कोटि जीभ से भी नहीं की जा सकती है।

इस प्रकार तीन, पाँच व सात (आठ) वर्ष इस व्रत को करके उद्यापन करें, आवश्यकता हो तो नवीन जिनालय बनावें, सब संघों को तथा विद्यार्थीजनों को मिष्ठान भोजन करावें, चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमा पधरावें, शांति हवन आदि शुभ कार्य करें, प्रतिष्ठा करावें, पाठशाला बनावें, प्राचीन मंदिरों ग्रंथों का जीर्णोद्धार करें और प्रत्येक प्रकार के उपकरण आठ-आठ मंदिर में भेंट करें, इस प्रकार उत्साह से उद्यापन करें यदि उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दूना करें इत्यादि।

इस प्रकार राजा हरिषेण ने व्रत की विधि और फल सुनकर मुनिराज को नमस्कार किया और घर जाकर कितने वर्षों तक यथाविधि यह व्रत पालन करके पश्चात् संसार भोगों से विरक्त होकर जिन दीक्षा ले ली, सो तप के प्रभाव व शुक्लध्यान के बल से चार घातिया कर्मों का नाश करके केवलज्ञान प्राप्त किया और अनेक दोशों में विहार कर भव्यजीवों को संसार से पार होने वाले सच्चे जिन मार्ग में लगाया। पश्चात् आयु के अन्त में शेष कर्मों को नाश कर सिद्ध पद पाया।

इस प्रकार यदि अन्य भव्यजीव भी इस प्रकार पालन करेंगे तो वे उत्तमोत्तम सुखों को अपने-अपने भावों के अनुसार पाकर उत्तम गतियों को प्राप्त होवेंगे। तात्पर्य यह है व्रत का फल तब ही होता है जबकि मिथ्यात्व तथा क्रोध, मान, माया और लोभ आदि कषाय तथा मोह को मन्द किया जाय। इसलिए इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

नन्दीश्वर व्रत फल लियो, श्री हरिषेण नरेश। कर्म नाश शिवपुर गयो, वन्दूं चरण हमेश।।

-संकलन : मुनि विशालसागर

विषय सूची

क्र.	विषय	पे.नं.
1.	मूलनायक सहित समुच्चय पूजन	9
2.	अष्टाह्निका पर्व पूजन	14
3.	नंदीश्वर स्तवन	19
4.	नन्दीश्वर द्वीप समुच्चय पूजन	20
5.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-1	24
6.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्वदधि मुखपर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनपूजा-2	27
7.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिणदधि मुखपर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनपूजा-3	32
8.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनपूजा-4	36
9.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनपूजा-5	41
10.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनपूजा-6	45
11.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनपूजा-7	49
12.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-8	54
13.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-9	58
14.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पंचम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-10	62
15.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकर जिनमन्दिर जिनपूजा-11	66
16.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-12	71
17.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम रतिकर जिनमन्दिर जिनपूजा-13	75
18.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-14	79
19.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्वदधि मुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-15	83
20.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-16	87
21.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-17	91
22.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-18	95
23.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्वदिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-19	99
24.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-20	103
25.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-21	107
26.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-22	111
27.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-23	115
28.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-24	119
29.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-25	123
30.	श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकर जिनमन्दिर जिनपूजा-26	127
31.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-27	132
32.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्वदधि मुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-28	136

क्र.	विषय	पे.नं.
33.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-29	139
34.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-30	142
35.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-31	146
36.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-32	150
37.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-33	153
38.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-34	157
39.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-35	161
40.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिमदिशा स्थित पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-36	165
41.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-37	169
42.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-38	173
43.	श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-39	177
44.	उत्तर दिशा पूजा प्रारम्भ श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-40	181
45.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर अंजनगिरि पूर्वदिशा दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-41	185
46.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-42	189
47.	श्री नन्दीश्वर द्वीप उत्तर अंजनगिरि पश्चिम तृतीय दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-43	192
48.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर अंजनगिरि उत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-44	196
49.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-45	200
50.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-46	204
51.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-47	208
52.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-48	212
53.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-49	216
54.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-50	219
55.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-51	223
56.	श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-52	227
57.	समुच्चय जयमाला	231
58.	नन्दीश्वर की आरती, नन्दीश्वर द्वीप स्तुति	233
59.	प्रशस्ति	234
60.	अष्टाह्निका (नंदीश्वर पर्व) चालीसा	235
61	नन्दीश्वर द्वीप स्तुति	237
62.	प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन	238
63.	प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती	240

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान्।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अष्टाह्निका पर्व पूजन

(स्थापना)

ज्ञान दर्शनावरण वेदनीय, आयू नाम गोत्र अन्तराय।
अष्ट कर्म से बद्ध जीव यह, काल अनादी जगत भ्रमाय।।
आठों कर्म विनाश आठ गुण, पा लेते हैं श्री जिन सिद्ध।
अकृत्रिम श्री जिनगृह शास्वत, तीन लोक में रहे प्रसिद्ध।।

दोहा- पर्व अढ़ाई में विशद, सिद्धों का आह्वान।
करते हैं हम भाव से, पाने शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छंद)

परिशुद्ध प्रभो ! यह निर्मल जल, हम चरण चढ़ाने को लाए।
निर्मम ममता से पीड़ित हो, हे नाथ ! शरण में हम आए।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! मेरा क्रोधानल से, चेतन अनादि से जलता है।
अज्ञान तिमिर के आँचल में, जो छिपकर खुश हो पलता है।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विमुख हुए निज भावों से, तन मन धन अपना मान लिया।
ना ध्यान किया अक्षय निधि का, निज का न कभी श्रद्धान किया।।

यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्य सुरभि का उपवन भी, जलता है काम की ज्वाला से।
हो जाए काम बली वश में, चैतन्य गुणों की माला से।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधा देह का धर्म विशद, जो तृष्णा भाव जगाता है।
जो रमण करे चेतन गुण में, वह तृप्त स्वयं हो जाता है।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे वीतराग मय वैज्ञानिक, शास्वत प्रयोग शाला पाए।
तुम ज्ञान ध्यान में लीन हुए, केवल्य ज्ञान शुभ प्रगटाए।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासाद महकता है अनुपम, हे नाथ ! आपका धूपों से।
तुम निज स्वरूप में लीन हुए, हो गये विरद सब रूपों से।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन में आप शिवालय के, रहकर मुक्तीफल चखते हैं।
सुरतरु के फल भी हों समक्ष, फिर भी कोइ आस ना रखते हैं।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अन्तर वैभव की मस्ती, हे नाथ ! स्वयं हम भी पाएँ।
सब अर्घ्य त्याग पाके अनर्घ्य, हम सिद्ध शिला पर जम जाएँ।।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चिन्मय हे चिद्रूप जिन, तीनों लोक प्रसिद्ध।
देते शांती धार पद, पाने अनुपम सिद्ध।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा– चिर विलास चैतन्य में, चिर निमग्न भगवन्त।
पुष्पांजलि करते प्रभो !, पाने भव का अंत।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली (अधोलोक स्थित जिनालय पूजा का अर्घ)

सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक में हैं जिनधाम।
आठ सौ तैंतिस कोटि छियत्तर, लाख रहे जिनबिम्ब महान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके सप्तकोटि द्वासप्तति लक्ष जिनालयस्थ अष्ट शत त्रयविंशत कोटि षट् सप्ततिलक्ष जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मध्यलोक स्थित जिनालय पूजा का अर्घ)

चार सौ अट्ठावन हैं जिनगृह, मध्यलोक में अपरम्पार।
जिन प्रतिमाएँ सात सौ छत्तिस, कम हैं पंचाशत हज्जार।।

कृत्रिम जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, भी हम पूजें भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके अष्ट पंचाशदधिक चउशत जिनालयस्थ चतु:षष्ठी अधिक शत चतु:सहस्र जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ऊर्ध्वलोक स्थित जिनालय पूजा का अर्घ)

लाख चुरासी सहस सत्यानवे, और तेईस जिनगृह शुभकार।
कोटि इकानवे लाख छियत्तर, सहस अठत्तर अरु सौ चार।।
अधिक चुरासी जिन प्रतिमाएँ, पूज रहे हो भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोके त्रयोविंशति अधिक सप्त नवति सहस्र चतुरसीति लक्ष जिनालयस्थ एक नवति कोटि षट् सप्ततिलक्ष अष्ट सप्तति सहस्र चउ शत चतुरशीति जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ कोटि अरु लाख सु छप्पन, सहस्र सत्यानवे अरु सौ चार।
इक्यासी हैं जिनगृह पावन, तीन लोक में मंगलकार।।
नौ सौ पच्चिस कोटि सु त्रेपन, लाख और सत्ताइस हजार।
नौ सौ अड़तालिस प्रतिमाएँ, पूज रहे हम मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक मध्ये अष्ट कोटि षट् पंचाशत लक्ष सप्त नवति चउ शत एकाशीति जिनालयस्थ नव शत पंचविंशति कोटि त्रिपंचाशत लक्ष सप्त विंशति सहस्र नव शत अष्ट चत्वारिंशत जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के शीर्ष पे अनुपम, सिद्ध शिला स्वर्णाभावान।
सिद्ध अनन्तानन्त परम सुख, में रत रहते लीन महान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर।।5।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोक त्रिलोकोपरि ईषत प्राग्भार भूमि (उपरि) स्थित अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– नित्य निरंजन ज्ञानमय, त्राता आप त्रिकाल।
चिर निमग्न चैतन्य में, गाते हम जयमाल।।

(छन्द पद्धरि)

तुमने करण त्रय हृदय धार, मिथ्यात्व मल्ल पर कर प्रहार।
संशय विमोह विभ्रम विनाश, सम्यक्त्व सुरवि कीन्हा प्रकाश।।1।।
तन चेतन का कर भेद ज्ञान, प्रगटाई आतम रुचि प्रधान।
जग विभव विभाव असार जान, स्वातम सुख को ही नित्य मान।।2।।
तुम मोह शत्रु पर कर प्रहार, संवर कीन्हा नाना प्रकार।
तप अनशन आदिक बाह्य धार, अपनी इच्छाओं को सम्हार।।3।।
छह अभ्यंतर तप कर महान, निज शुद्धातम का किया ध्यान।
एकाकी निर्भय निःसहाय, एकान्त ध्यान का कर उपाय।।4।।
कर्मों का संवर किये नाथ !, अविपाक निर्जरा किए साथ।
अनन्तानुबंधी चउ कषाय, विसंयोजन का कीन्हा उपाय।।5।।
फिर क्षायिक श्रेणी आप धार, घाती कर्मों पर कर प्रहार।
चारों कर्मों का कर विनाश, केवल्य ज्ञान कीन्हा प्रकाश।।6।।
नव केवल लब्धी आप धार, नर भव का पाए श्रेष्ठ सार।
कर सूक्ष्म प्रतिपाती सुध्यान, चारों अघातिया कर समान।।7।।
अन्तर्मुहूर्त में धार योग, बन जाते हैं केवल अयोग।
करके अघातिया कर्मनाश, शिवपुर में कीन्हे आप वास।।8।।
शास्वत शुभ पर्व अठाई जान, आठें से पूनम हो प्रधान।
जो कार्तिक फाल्गुन षाढ़ मास, में करे कोई व्रत या उपवास।।9।।
सुर नंदीश्वर शुभ दीप जाँय, नर सिद्धों की पूजा रचाएँ।
जो करते हैं पूजा विधान, श्री जिन बिम्बों की शरण आन।।10।।

घत्ता छंद–हे लोक प्रकाशी, शिवपुर वासी, अविनाशी पद में वंदन।
हे जिन संन्यासी, ज्ञान प्रकाशी, कर्म विनाशी अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय सिद्ध बिम्ब समूह जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– तीन लोक चूड़ामणि, आप त्रिलोकी नाथ।
चरण कमल में आपके, झुका रहे हम माथ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

नंदीश्वर स्तवन

दोहा– अरहन्तों की वन्दना, जिन सिद्धों का ध्यान।
गुरु भक्ती निर्ग्रन्थ की, करे विशद कल्याण।।
नन्दीश्वर शुभ दीप के, अकृत्रिम जिन धाम।
जिनबिम्बों को भाव से, करते चरण प्रणाम।।

(शम्भू छंद)

श्री जिनेन्द्र के पद में वन्दन, करते हैं हम योग सम्हार।
भाव सहित पूजा करते हैं, पाने को शिवपुर का द्वार।।
हे जगत्राता जगत शिरोमणी, सर्व असाता दूर करो।
रत्नत्रय की निधि पाने में, तुम सहाय भरपूर करो।।1।।
हे पाप निकन्दन आनन्द कन्दन, मेरा हरो पूर्ण संताप।
मुझे सहारा देते रहना, करते रहें आपका जाप।।
केवलज्ञान भानु हे स्वामी, मोह महातम करो विनाश।
तव चरणों में अर्ज यही है, जगे हृदय में ज्ञान प्रकाश।।2।।
तन–मन जीवन किया समर्पित, तव चरणों में दीनानाथ।
दो आशीष शीघ्र ही भगवन्, ऊपर करके अपना हाथ।।
आनन्द कन्द वचन अमृत सम, करते हैं जग का उपकार।
काल अनादी से भव्यों ने, किया आत्मा का उद्धार।।3।।
सुर–नर–पशु विद्याधर आदिक, करते तव वचनामृत पान।
द्रव्य क्षेत्र शुभ काल भाव पा, प्राप्त करें सम्यक् श्रद्धान।।
स्वर्गलोक से चरणाम्बुज में, भक्ति भरे आते देवेन्द्र।
चक्री कामदेव नत होकर, अर्चा करते सर्व नरेन्द्र।।4।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, मिले आपका शुभ दर्शन।
जगे 'विशद' सौभाग्य हमारा, चरणों का हो स्पर्शन।।
ख्याति लाभ पूजादि चाह में, कभी न मन जाए हे नाथ।
शिवपद जब तक मिले न हमको, तब तक रहे आपका साथ।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नन्दीश्वर द्वीप समुच्चय पूजन

(स्थापना)

सब पर्वों में पर्व अढ़ाई, श्रेष्ठ बताया मंगलकार।
सुर सुरेन्द्र नन्दीश्वर जाते, दिव्य द्रव्य ले अपरम्पार।।
हम हैं शक्तीहीन अतः, जिनबिम्बों का कर स्थापन।
पूजा करते विशद भाव से, उर में करके आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पाइता छन्द)

जल की भर लाए झारी, जन्मादिक रोग निवारी।
हम जिनपद पूज रचाएँ, ना भवसागर भटकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन है खुशबूकारी, भव ताप नशावन हारी।
हम जिनपद पूज रचाएँ, ना भवसागर भटकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद दायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
हम जिनपद पूज रचाएँ, ना भवसागर भटकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह पुष्प चढ़ाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
हम जिनपद पूज रचाएँ, ना भवसागर भटकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस शुभकारी, है क्षुधा विनाशनकारी।
हम जिनपद पूज रचाएँ, ना भवसागर भटकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पावन दीप जलाते, जो मोह तिमिर विनशाते।
हम जिनपद पूज रचाएँ, ना भवसागर भटकाएँ।।16।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, आठों हम कर्म नशाएँ।
हम जिनपद पूज रचाएँ, ना भवसागर भटकाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम जिनपद पूज रचाएँ, ना भवसागर भटकाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।
हम जिनपद पूज रचाएँ, ना भवसागर भटकाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, नन्दीश्वर के धाम।
शांतीधारा दे यहाँ, करते चरण प्रणाम।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– जिनगृह जिनवर के चरण, अर्पित करते फूल।
कर्म हमारे पूर्णतः, हो जावें निर्मूल।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

सोरठा– तेरह-तेरह धाम, नन्दीश्वर में चार दिश।
करते चरण प्रणाम, कर प्रभु की स्थापना।।

(शम्भू छन्द)

अष्टम द्वीप श्री नन्दीश्वर, महिमाशाली रहा महान्।
योजन एक सौ त्रेसठ कोटी, लाख चौरासी आभावान।।
पर्व अढ़ाई में इन्द्रादी, पूजा करते मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।1।।

चतुर्दिशा में अंजनगिरियाँ, अंजन सम शोभित हैं चार।
अंजनगिरि की चतुर्दिशा में, दधिमुख पर्वत हैं शुभकार।।
दधिमुख के द्वय बाह्य कोण में, रतिकर दो हैं मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।2।।

योजन सहस्र चौरासी ऊँची, अंजनगिरियाँ चार समान।
दस हजार योजन के दधिमुख, रतिकर हैं इक योजनकार।।
कृष्ण श्वेत अरु लाल हैं क्रमशः, सभी ढोल सम गोलाकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।3।।

चतुर्दिशा में चार बावड़ी, एक लाख योजन चौकोर।
निर्मल जल से पूर्ण भरी हैं, फूल खिले हैं चारों ओर।।

एक लाख योजन के वन हैं, चतुर्दिशा में अपरम्पार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।4।।

एक दिशा में तेरह पर्वत, बावन होते चारों ओर।
स्वर्ण रत्नमय आभा वाले, करते मन को भाव विभोर।।
कलशा ध्वजा कंगूरे घण्टा, से शोभित मंदिर मनहार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।5।।

हैं प्रत्येक जिनालय में जिन बिम्ब, एक सौ आठ महान्।
नयन श्याम अरु श्वेत हैं नख मुख, लाल रंग के आभावान।।
श्याम रंग में भौंह केश हैं, वीतरागमय हैं अविकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।6।।

कोटी सूर्य चन्द्र भी जिनके, आगे पड़ते कांति विहीन।
दर्शन से सद् दर्शन पाकर, प्राणी होते ध्यानालीन।।
मानो बिन बोले ही सबको, शिक्षा देते भली प्रकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।7।।

दोहा– नन्दीश्वर शुभ द्वीप के, हैं जिनबिम्ब महान्।
विशद भाव से हम सभी, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– महिमाशाली श्रेष्ठ हैं, नन्दीश्वर जिन धाम।
जिनबिम्बों को भाव से, करते 'विशद' प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

ऋषभ नाथ के जन्म दिवस की खुशियाँ सभी मनाते हैं।
धर्म प्रवर्तक हैं इस युग के गीत उन्हीं के गाते हैं।।
हो प्रसन्न तन मन से भविजन जिन मंदिर को जाते हैं।
है कितना सौभाग्य हमारा लाडू चरण चढ़ाते हैं।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा–1

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, जिसकी पूर्व दिशा शुभकार।
सहस चौरासी योजन ऊँचा, अंजनगिरी श्याम मनहार।।
ढोल समान गोल पर्वत पर, श्रेष्ठ जिनालय रहा महान्।
एक सौ आठ रहीं प्रतिमाएँ, जिनका हम करते आह्वान्।।

दोहा– अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, शाश्वत् महति महान्।
विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

भव–भव में दुख सहे हैं, ना जाते नाथ कहे हैं।
जन्मादि नशाने आए, यह नीर चढ़ाने लाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनबिम्बेभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्तप्त लोक ये सारा, ना पाए कहीं सहारा।
यह चन्दन घिसकर लाए, हे नाथ चढ़ाने लाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग अनित्य है सारा, न मिलता कहीं सहारा।
हम अक्षत पदवी पाएँ, न और जगत भटकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इस कामदेव की माया, कोई भी जान न पाया।
विषयों में सदा लुभाए, प्राणी को जगत भ्रमाए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधा रोग दुखदायी, यह जग है दुखिया भाई।
हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ, अनुपम नैवेद्य चढ़ाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी को मोह सताए, मोहित हो जग भटकाए।
अब मोह नशाने आये, यह दीप जलाकर लाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने डेरा डाला, आतम को किया है काला।
यह धूप जलाते भाई, कर्मों की होय सफाई।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कार्य में हाथ लगाया, उसका फल हमने पाया।
अब शिवपद पाने आए, फल यहाँ चढ़ाने लाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग में भटके भाई, न शांति कहीं मिल पाई।
यह अर्घ बनाकर लाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने आए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– दुस्तर पाना पार है, क्षार नीर संसार।
शांतीधारा दे रहे, पाने भवदधि पार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– इस असार संसार में, तारण तरण जहाज।
हमको शिवपद दीजिए, दीन बन्धु महाराज।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।*

जयमाला

दोहा– नन्दीश्वर वर द्वीप के, हैं जिनबिम्ब विशाल।
बुद्धि वृद्धि सुख शांति हो, गाते हम जयमाल।।

(पद्धड़ी छंद)

जय नन्दीश्वर शुभ द्वीप जान, जिसकी पूरब दिश में महान्।
अञ्जनगिरी शोभित रही श्याम, जिसमें जिनवर के रहे धाम।।
जय तीर्थंकर त्रिभुवन जिनेश, शत् इन्द्र पूजते हैं विशेष।
तव चरण कमल का है प्रभाव, सुर–नर भक्ती में रखें चाव।।
प्रभु मुख मुद्रा जग में अनूप, है जिनवर का निर्ग्रन्थ रूप।
जय दर्शन ज्ञान अनन्तवान, जय बल अनन्त सुखकर प्रधान।।
जय छियालिस गुणधारी जिनेश, वसु प्रातिहार्य पाए विशेष।
दश जन्म के अतिशय लिए धार, है ज्ञान के अतिशय दश प्रकार।।
चौदह अतिशय सुरकृत महान्, प्रभु समवशरण में शोभवान।
महिमा का तुमरी नहीं पार, चतुरानन हो तुम निराधार।।
हे श्रीधर लोकोत्तर महान्, सुर विस्मय करते हैं प्रधान।
तव दिव्य ध्वनि है घन समान, हो कर्णप्रिय अतिशय महान्।।
है ॐ अक्षर ॐकारवान्, प्राणी त्रय गति के सुने आन।
हिलते नहीं तालू होंठ कोय, नहिं जीभ कण्ठ तल हिले सोय।।
कई प्राणी पाते दर्श ज्ञान, कई हो जाते चारित्रवान्।
मानी का होवे मान चूर, होवें सबके सन्देह दूर।।
गति जाति आदी भेद चार, दर्शाते हैं प्रभु कई प्रकार।
निक्षेप बताए प्रभू चार, चलता जिससे आगम प्रचार।।
प्रभु सप्त तत्त्व का दिए ज्ञान, जिससे जागे उर में श्रद्धान्।

है जीव तत्त्व चैतन्यवान, पुद्गल होता है रूपवान।।
जानो अजीव चेतन विहीन, आश्रव के कारण योग तीन।
कर्मों का करता जीव बन्ध, यह काल अनादी रहा द्वन्द।।
संवर हो आश्रव कर निरोध, हो कर्म निर्जरा सुतप बोध।
हो मोह कर्म का पूर्ण नाश, फिर जीव करे शिवपुरी वास।।

दोहा– नंदीश्वर पूरब दिशा, अञ्जनगिरी महान्।
जिन मन्दिर जिनबिम्ब का, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छंद)

नंदीश्वर शुभद्वीप आठवाँ जानिए, बावन जिनगृह चतुर्दिशा पहिचानिए।
जिन मंदिर प्रतिमाएँ मंगलकार हैं, जिनको वन्दन मेरा बारम्बार है।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्वदधि मुखपर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनपूजा–2

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, पूर्व दिशा में महति महान्।
अञ्जन गिरि की पूर्व दिशा में, नन्द वापिका रही प्रधान।।
जिसके मध्य दधि सम उज्ज्वल, दधिमुख पर्वत आभावान।
उस पर जिन मंदिर प्रतिमाओं, का हम करते हैं आह्वान्।।

दोहा– अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, शाश्वत् महति महान्।
जिनकी अर्चा से जगे, उर में सद् श्रद्धान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

जल पीकर काल अनादी से, हम तृषा शांत न कर पाए।
जो लगा हुआ है मिथ्या मल, हम आज यहाँ धोने आए।।
हम पूर्व दिशा के दधिमुख पर, जिनगृह जो शोभा पाते हैं।
उसमें जिनबिम्बों के पद में, नत् सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस डाले चन्दन के वन कई, पर शीतलता न पाई है।
सम्यक् श्रद्धा की 'विशद' कली, न हमने हृदय खिलाई है।।
हम पूर्व दिशा के दधिमुख पर, जिनगृह जो शोभा पाते हैं।
उसमें जिनबिम्बों के पद में, नत् सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर कई थाल तन्दुलों के, हम चढ़ा–चढ़ाकर हारे हैं।
अक्षय पद पाने हेतु नाथ, अब आए चरण सहारे हैं।।
हम पूर्व दिशा के दधिमुख पर, जिनगृह जो शोभा पाते हैं।
उसमें जिनबिम्बों के पद में, नत् सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

खाई तृष्णा की है असीम, हम उसे नहीं भर पाए हैं।
अटके हैं काम वासना में, छुटकारा पाने आए हैं।।
हम पूर्व दिशा के दधिमुख पर, जिनगृह जो शोभा पाते हैं।
उसमें जिनबिम्बों के पद में, नत् सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को क्षुधा वेदना ने, सदियों से सदा सताया है।
मनमाने व्यञ्जन खाकर भी, यह तृप्त नहीं हो पाया है।।
हम पूर्व दिशा के दधिमुख पर, जिनगृह जो शोभा पाते हैं।
उसमें जिनबिम्बों के पद में, नत् सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है घोर तिमिर मिथ्यातम का, उसमें प्राणी भटकाए हैं।
अब मोह तिमिर हो नाश पूर्ण, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
हम पूर्व दिशा के दधिमुख पर, जिनगृह जो शोभा पाते हैं।
उसमें जिनबिम्बों के पद में, नत् सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जीव सताए कर्मों से, गति-गति में दुःख उठाते हैं।
कर्मों की धूल उड़ाने को, अग्नी में धूप जलाते हैं।।
हम पूर्व दिशा के दधिमुख पर, जिनगृह जो शोभा पाते हैं।
उसमें जिनबिम्बों के पद में, नत् सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना की चाह न शांत हुई, कई सरस श्रेष्ठ फल खाए हैं।
न मिला हमें शुभ शाश्वत् पद, फल हमने चरण चढ़ाए हैं।।
हम पूर्व दिशा के दधिमुख पर, जिनगृह जो शोभा पाते हैं।
उसमें जिनबिम्बों के पद में, नत् सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सारा जग हमने घूमा, किन्तू अनर्घ पद न पाया।
हे नाथ ! आज अब मेरा मन, वह पद पाने को ललचाया।।

हम पूर्व दिशा के दधिमुख पर, जिनगृह जो शोभा पाते हैं।
उसमें जिनबिम्बों के पद में, नत् सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने कर रहे, शांती धारा आज।
सुर-नर चक्री देवगण, सभी झुकाते ताज।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पुष्पित लेकर फूल।
कर्म नाथ मेरे सभी, हो जाएँ निर्मूल।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।*

जयमाला

दोहा- निराकार निर्ग्रन्थ प्रभु, वीतराग अविकार।
चरण वन्दना कर रहे, पाने सौख्य अपार।।

(पद्धड़ी छंद)

जय जय जिनेन्द्र निर्ग्रन्थ रूप, जय वीतराग त्रैलोक्य भूप।
जय सिद्ध शिला पर विद्यमान, जय अष्ट सुगुण पाए महान्।।
जय जिन मूरत शुभ चैत्यवान, जय निराकार आकृति प्रधान।
जय अजर अमर अक्षय अनन्त, जय अविनाशी सुखमय अखण्ड।।
जय अवगाहन् उत्कृष्टवान, शत् पंच धनुष पच्चीस वान्।
जय-जय जघन्य धनु अर्ध्य तीन, जो रहे नित्य निज सुगुण लीन।।
जय मध्यम भेद अनेक वान्, बतलाए आगम में महान्।
जिनके आसन हैं कई प्रकार, कोई खड्गासन या पद्म धार।।
हैं बन्ध रहित प्रभु निर्विकार, जिनदेव शरण जग निराधार।
जो लोक शिखर के कहे शीश, तनु वातवलय में रहे ईश।।
जय दर्श ज्ञान बल वीर्यवान, प्रभु ने पाया कैवल्य ज्ञान।
जय जन्म जरादिक रहित देव, जो गुणानन्त रत हैं सदैव।।

जय क्रोधादिक बिन निष्कषाय, तुम चेतन गुणमय रहित काय।
जय रागहीन ज्ञायक महेश, धारा तुमने निर्ग्रन्थ भेष।।
तव चरण कमल के बने दास, करते हैं अपनी पूर्ण आस।
जय सुर-नर खगपति नाग ईश, तव चरण झुकाते विनत शीश।।
हैं पूर्ण ब्रह्म स्वरूप आप, तव दर्शन से हों नाश पाप।
हे सर्व शिरोमणि सिद्ध देव, अक्षय अखण्ड ज्ञानी सुएव।।
तव भक्ती में जो लीन होय, वह प्राणी मन का भ्रमण खोय।
प्रभु जगनायक हे कृपावन्त, भव सागर का कर दिया अंत।।
जो तीन योग से करें ध्यान, वे प्राणी पावें विशद ज्ञान।
भव सिन्धू का वह करें अन्त, ऐसा कहते ज्ञानी सुसंत।।
प्रभु चरणों करते हम पुकार, अब शीघ्र करें भव सिन्धु पार।
तव चरण कमल में खड़े दास, अब करो शीघ्र प्रभु पूर्ण आस।।
हम अष्ट कर्म का करें नाश, प्रभु विशद ज्ञान का हो प्रकाश।
अब करें कर्म का पूर्ण अन्त, हम भी अपनाए मोक्ष पंथ।।

दोहा- करुणा निधि जिनदेव तुम, तारण तरण महीश।
विनती सुन लो दास की, चरण झुकाएँ शीश।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह-तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिणदधि मुखपर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनपूजा-3

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, अंजन गिरि के दक्षिण जान।
नन्दावती है मध्य वापिका, दधि सम दधिमुख गिरि महान्।।
दश हजार योजन ऊँचा है, उन्नत ढोल की पोल समान।
जिस पर जिन मंदिर प्रतिमाओं, का हम करते हैं आह्वान्।।

दोहा- अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, शाश्वत् महति महान्।
विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द-मोतियादाम)

कराया प्रासुक हमने नीर, प्राप्त करने को भव का तीर।
चढ़ाते चरणों में भगवान्, मेरा भी हो जाए कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसाया चन्दन यहाँ विशेष, नाथ हो भव संताप अशेष।
चढ़ाते चरणों में भगवान्, मेरा भी हो जाए कल्याण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भराए अक्षत के शुभ थाल, मिले अक्षय पद हमें विशाल।
चढ़ाते चरणों में भगवान्, मेरा भी हो जाए कल्याण।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह लाए सुगन्धित खास, काम का होवे पूर्ण विनाश।
चढ़ाते चरणों में भगवान्, मेरा भी हो जाए कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाए व्यंजन यह रसदार, क्षुधा व्याधी का हो संहार।
चढ़ाते चरणों में भगवान्, मेरा भी हो जाए कल्याण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाते दीप में यहाँ कपूर, मोह तम होवे सारा दूर।
चढ़ाते चरणों में भगवान्, मेरा भी हो जाए कल्याण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाते अग्नी में हम धूप, प्राप्त हो हमको निज स्वरूप।
चढ़ाते चरणों में भगवान्, मेरा भी हो जाए कल्याण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ फल लाये यह रसदार, मिले अब मोक्ष महल का द्वार।
चढ़ाते चरणों में भगवान्, मेरा भी हो जाए कल्याण।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।
चढ़ाते चरणों में भगवान्, मेरा भी हो जाए कल्याण।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांती कर शांती मिले, है ऐसा उल्लेख।
शांती मय अपने विशद, भाव बनाकर देख।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पूजा करता भाव से, पुष्पाञ्जलि के साथ।
अल्प समय में भक्त वह, होय श्री का नाथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के जीव सब, पूजें जिन्हें त्रिकाल।
नन्दीश्वर के चैत्य की, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

शुभ दधिमुख पर्वत के ऊपर, जिन चैत्यालय जिन अविकारी।
हे कृपावन्त करुणा निधान, हो जग जीवों के उपकारी।।
तुमने संसार सरोवर से, तरने की कला सिखाई है।
तुम पार हुए भव सागर से, अब बारी मेरी आई है।।
हम पूजा करने को जिनवर, अब द्वार आपके आए हैं।
प्रासुक करके यह द्रव्य श्रेष्ठ, शुभ थाल सजाकर लाए हैं।।
हम भक्त बने हैं हे भगवन् !, जब से तुमको पहिचान लिया।
जो कुपथ कुपन्थी हैं जग में, उन सबको हमने त्याग दिया।।
इस जग में सुख शांती वैभव, सब कृपा आप से मिलता।
श्रद्धा का सम्यक् फूल हृदय, तव दर्शन करने से खिलता।।
तुमने निज का दर्शन करके, शुभ दर्शन गुण प्रगटाया है।
शुभ ज्ञान जगाकर अन्तश् का, प्रभु केवल ज्ञान जगाया है।।
करता है मोहित मोह कर्म, उसका भी मान गलाया है।
इस जग के वैभव को तजकर, प्रभु सुख अनन्त प्रगटाया है।।
है कर्म घातिया अन्तराय, वह भी न कुछ कर पाया है।
पाकर के वीर्य अनन्त प्रभू, जग को सन्मार्ग दिखाया है।।
तुम बने जहाँ में वीर बली, न चली कर्म की माया है।
सुख दुख का वेदन किया प्रभु, फिर अव्याबाध सुख पाया है।।

भव बन्धन भी न बाँध सका, तुम कर्म आयु का नाश किया।
अवगाहन गुण को प्रगटाकर, निज अवगाहन में वास किया।।
न नाम कर्म भी रह पाया, सूक्ष्मत्व सुगुण प्रगटाया है।
कर लिया प्रकट गुण अगुरुलघु, न गोत्र कर्म रह पाया है।।
तुमने कर्मों का नाश किया, फिर शिव स्वरूप प्रगटाया है।
वह पद पाने को हे भगवन् ! अब मेरा मन ललचाया है।।
तव गौरव गाथा को पढ़कर, मेरे मन में यह आया है।
है सत्य यही स्वरूप मेरा, जिसको प्रभु तुमने पाया है।।
तुम सर्व शक्ति के धारी हो, वह शक्ती हम भी पाएँगे।
हम द्वार आपके आए हैं, वह क्षमता लेकर जाएँगे।।
जो शरण आपकी पा लेता, वह इच्छित फल को पाता है।
वह सर्व सम्पदा पाने का, अपना सौभाग्य जगाता है।।
हम भक्ती के वश आये हैं, तव चरणों में कुछ आस लिए।
प्रभु भाव सुमन लेकर आये, निज श्रद्धा अरु विश्वास लिए।।
हे नाथ ! भक्त पर करुणाकर, बस इतना सा उपकार करो।
तुम हुए पार भव सागर से, अब मुझको भी भव पार करो।।

दोहा– तीर्थंकर जिनदेव ने, दिया यही संदेश।
शीतल भावों से विशद, जाना निज के देश।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह–तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनपूजा–4

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, अंजन गिरि के पश्चिम ओर।
मध्य वापिका नन्दोत्तरा है, करता दधिमुख भाव विभोर।।
जिसके ऊपर जिन मन्दिर हैं, जिनबिम्बों से युक्त महान्।
शाश्वत् जिनबिम्बों का करते, विशद हृदय में हम आह्वान्।।

दोहा– अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, शाश्वत् महति महान्।
जिनकी अर्चा से जगे, उर में सद् श्रद्धान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

श्री जिन की वाणी का अमृत, जग को अभय प्रदान करे।
निर्मल नीर चढ़ाते क्षण में, जन्म जरादिक रोग हरे।।
हम नन्दीश्वर के जिन मन्दिर, श्री जिनपद शीश झुकाते हैं।
बन जाएँ शिवपथ के राही, यह विशद भावना भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का शीतल उपवन, अनुपम शांति प्रदायक है।
शीतल चंदन अर्पित करते, जो कर्मों का क्षायक है।।
हम नन्दीश्वर के जिन मन्दिर, श्री जिनपद शीश झुकाते हैं।
बन जाएँ शिवपथ के राही, यह विशद भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय ज्ञानी तीर्थंकर जिन, शुभ अक्षय ज्ञान प्रदान करें।
अक्षय अक्षत द्वारा हम भी, श्री जिनवर का सम्मान करें।।
हम नन्दीश्वर के जिन मन्दिर, श्री जिनपद शीश झुकाते हैं।
बन जाएँ शिवपथ के राही, यह विशद भावना भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुमन सूर्योदय होते, निज आभा बिखराते हैं।
पुष्प चढ़ाते हैं अनुपम जो, काम रोग विनशाते हैं।।
हम नन्दीश्वर के जिन मन्दिर, श्री जिनपद शीश झुकाते हैं।
बन जाएँ शिवपथ के राही, यह विशद भावना भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा से मोहित होकर हम, यह सारा जग भटकाये हैं।
नैवेद्य चढ़ाकर के ताजे अब, क्षुधा नशाने आये हैं।।
हम नन्दीश्वर के जिन मन्दिर, श्री जिनपद शीश झुकाते हैं।
बन जाएँ शिवपथ के राही, यह विशद भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ केवल ज्ञान की ज्योति जगे, जो मोह तिमिर का नाश करे।
यह दीप जलाकर हम लाए, जो सम्यक् ज्ञान प्रकाश करे।।
हम नन्दीश्वर के जिन मन्दिर, श्री जिनपद शीश झुकाते हैं।
बन जाएँ शिवपथ के राही, यह विशद भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का जाल बिछा भारी, हम उसमें फँसते आए हैं।
हम आठों कर्म विनाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।।
हम नन्दीश्वर के जिन मन्दिर, श्री जिनपद शीश झुकाते हैं।
बन जाएँ शिवपथ के राही, यह विशद भावना भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस फल की हमको चाह रही, वह प्राप्त नहीं कर पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल पाने फल, यह सरस चढ़ाने लाए हैं।।
हम नन्दीश्वर के जिन मन्दिर, श्री जिनपद शीश झुकाते हैं।
बन जाएँ शिवपथ के राही, यह विशद भावना भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, शुभ आज चढ़ाने लाए हैं।
हम फँसे रहे भव बन्धन में, वह बंध काटने आए हैं।।
हम नन्दीश्वर के जिन मन्दिर, श्री जिनपद शीश झुकाते हैं।
बन जाएँ शिवपथ के राही, यह विशद भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– निज आतम के ध्यान से, मिले आत्म आनन्द।
शांतीधारा दे रहे, पाने सहजानन्द।।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– आत्म ज्योति प्रगटित किए, अखिल विश्व के नाथ।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, चरण झुकाते माथ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– घाति चतुष्टय नाशकर, होते जिन अरहंत।
शिवपथ के राही बनें, करें कर्म का अंत।।

(शेर छंद)

नंदीश्वर के मंदिर को नमस्कार है।
जिनबिम्बों का जिनमें चमत्कार है।।
दधिमुख गिरि के ऊपर, जिनचैत्य हैं जहाँ।
हम वन्दना शुभ करते हैं, भाव से यहाँ।।
है आठवाँ ये द्वीप, आठ कर्म का नाशी।
भवि जीव के हृदय में, सद् ज्ञान प्रकाशी।।
चिन्तामणी हैं कामधेनु, कल्प वृक्ष हैं।
हैं सौख्यकार जग में, औ रक्ष-रक्ष हैं।।
भक्तों को चक्रवर्ति, सुर इन्द्र बनाते।
चारों गति के चक्कर, से मुक्ति दिलाते।।
हम मोह अंध में फँसे, ये जग भटक रहे।
अब तक न मिली राह, प्रभू हम अटक रहे।।
हम मोक्ष मार्ग पर चले, तो कर्म सताते।
करते हैं विघ्न भारी, जो दूर हटाते।।
आयेंगे कोई काम नहीं, जानते अहा।
पर धर्म का ना भाव बना, कर्मोदय रहा।।
तोते के जैसी मेरी दशा, हो गई प्रभो !।
रटता रहा हूँ आत्मा, ना प्राप्त की विभो !।।
अन्जन को निरंजन बनाके, तार दिया है।
नागों को महामंत्र दे, उबार लिया है।।

श्रीपाल को सागर से प्रभु, आप तिराये।
सोमा के गले नाग का, शुभ हार बनाए।।
बालक पे चढ़ा जहर, प्रभु आप उतारे।
चन्दना सती को बेड़ियों से, प्रभु आप उबारे।।
सीता सती को अग्नि से, प्रभु तुमने बचाया।
खींचा था चीर द्रोपदी, का तुमने बढ़ाया।।
मेंढक ले आया फूल, उसे स्वर्ग भिजाया।
श्रीपाल को सागर से, प्रभु पार कराया।।
करते नहीं हो राग, द्वेष आप हे प्रभो !।
जब उनको तारा क्यों न, हमें तारते विभो !।।
चरणों में आये भक्त, की विनती सुनीजिए।
जब तक चले ये श्वाँस, प्रभु साथ दीजिए।।
हे नाथ ! 'विशद' ज्ञान, से गागर भरीजिए।
भवसिन्धु से हे नाथ !, हमें पार कीजिए।।

दोहा– कर्म भार से दब रहे, जग में हे भगवान।
पूजा करते आज हम, करो नाथ कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह-तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनपूजा-5

(स्थापना)

नन्दीश्वर की पूर्व दिशा में, अञ्जन गिरि है आभावान।
नन्दीवन वापी उत्तर में, दधिमुख गिरि का है स्थान।।
शाश्वत जिन मंदिर है जिस पर, रत्नजड़ित उत्तर प्रमाण।
अकृत्रिम जिन मन्दिर प्रतिमा, का हम करते हैं आह्वान्।।

दोहा- अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, शाश्वत् महति महान्।
जिनकी अर्चा से जगे, अन्तर में श्रद्धान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छंद)

हम निर्मल जल लेकर आए, अन्तर्मन निर्मल करने।
हे नाथ चढ़ाते नीर यहाँ, शुचि सरल भावना से भरने।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकट मोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप सताता है भव का, प्रभु पास आपके आए हैं।
तव पद पंकज में अर्चन को, मलयागिर चन्दन लाए हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकट मोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग का वैभव क्षण भंगुर है, तुमने इसको ठुकराया है।
अक्षय शुभ संयम के द्वारा, अनुपम अक्षय पद पाया है।।

मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकट मोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि कमलों की शोभा से, मानस मधुकर सुख पाते हैं।
निज गुण पाने हे नाथ यहाँ, हम अनुपम पुष्प चढ़ाते हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकट मोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यञ्जन कई सरस प्रभु हमने, भव-भव में रहकर खाए हैं।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकट मोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की झिलमिल लड़ियों से, मिट जाए जग का अंधियारा।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, यह दीपक हमने उजियारा।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकट मोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाने से, सारा नभ मण्डल महकाए।
कर्मों की धूप जलाने को, हे नाथ शरण में हम आए।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकट मोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुकूल ऋतू आ जाने से, उपवन फल से भर जाते हैं।
पर क्षुधा वेदना ना मेरी, हे नाथ मिटा वह पाते हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकट मोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्मावरण हटाने को, हे नाथ शरण में आए हैं।
शिवपद के राही बनने को, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, शीतलता नाथ प्रदान करो।
हे संकट मोचन तीर्थंकर, अपनी अनुकम्पा दान करो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ज्ञान ज्योति जलती रहे, जब तक रहे जहान।
शांती धारा दे रहे, पाने केवल ज्ञान।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– युग–युग के भव भ्रमण से, पा जाएँ अब त्राण।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने पद निर्वाण।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नंदीश्वर शुभ द्वीप में, दधिमुख रहा महान्।
जयमाला गाते यहाँ, उस पर हैं भगवान।।

(त्रोटक छंद)

जयवन्त जगतपति आप रहे, सर्वज्ञ त्रिलोकी नाथ कहे।
वसु प्रातिहार्य प्रगटाते हो, जीवों को अभय दिलाते हो।।
प्रभु दिव्य ध्वनि प्रगटायक हो, सब तत्त्व प्रकाशन लायक हो।
वृष का उपदेश दिए प्रभु जी, उपकार विशेष किए प्रभु जी।।
इक धर्म दयामय आप कह्यो, जिस भेद अनेक प्रकार रह्यो।
मुनिराज महाव्रत धार रहें, श्रावक अणु रूप सम्हार रहे।।
निश्चय व्यवहार विभेद रहा, रत्नत्रय रूप त्रिभेद कहा।
आराधन चार प्रकार कही, जो पंच महाव्रत रूप सही।।

छह भेद दयामय धर्म रह्यो, शुभ सप्त तत्त्व जिनराज कह्यो।
वसु कर्म विनाशक धर्म कहा, क्षायिक नव लब्धी रूप रहा।।
दशलक्षण धर्म कहा भाई, इत्यादिक धर्म की प्रभुताई।
श्रद्धान सुधर्म को मूल कह्यो, फिर सम्यक् ज्ञान प्रकाश भयो।।
अरहंत सुपंथ को धारत हैं, भव सिन्धु से पार उतारत हैं।
गुरुदेव दिगम्बर भेष धरें, मुक्ती पथ का सन्देश करें।।
जिनशासन जो नहिं मानत हैं, जो सत्यासत्य ना जानत हैं।
कई कल्पित धर्म बनावत हैं, सत् पथ हृदय नहिं भावत हैं।।
विपरीत कुरीति जो धार रहे, आचरण सभी दुखकार कहे।
जब तक जिय में मिथ्यात्व रहे, वसु कर्मन का घनघात सहे।।
रत्नत्रय है इक मार्ग सही, जिनवाणी में यह बात कही।
यह मारग ही जिनराज लिए, भवि जीवन को उपदेश दिए।।
जिन जीवन ने यह धर्म धरो, उनने आतम उद्धार करो।
वे ही प्राणी जगपूज्य भये, शुभ काल पाय वह मोक्ष गये।।
वे ही जग धन्य कहाए हैं, उनके पद जग सिर नाए हैं।
हम उनका ही नित ध्यान करें, निज भावों से गुणगान करें।।

(छन्द : घत्तानन्द)

जय–जय जगनायक, मोक्षप्रदायक, कर्म विनाशक शिवकारी।
जय शिव सुखदायक, हे वरदायक, हे अघक्षायक भवहारी।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह–तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा
प्रथम रतिकर गिरि जिनपूजा–6

चौपाई (स्थापना)

नन्दीश्वर शुभ दीप बखानो, पूर्व दिशा में जिसके जानो।
अञ्जन गिरी महानन्दा जानो, बाह्य कोण वापी का मानो।।
रतिकर पर्वत रहा निराला, कनक वर्ण सम आभा वाला।
जिन मंदिर जिस पर शुभकारी, जिनबिम्बों पद धोक हमारी।।

दोहा– शाश्वत् जिन मन्दिर तथा, हैं जिनबिम्ब महान्।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(नरेन्द्र छंद)

इतना नीर पिया है हमने, तीन लोक भर जाए।
तृप्त नहीं हो पाए अब तक, नीर चढ़ाने लाए।।
नन्दीश्वर में जिनमंदिर हैं, इस जग में शुभकारी।
पूजा करके जीवन बनता, भव्यों का मनहारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बार–बार बहु देह धारकर, त्रिभुवन में भटकाए।
चन्दन लेकर नाथ आज, संताप नशाने आए।।
नन्दीश्वर में जिनमंदिर हैं, इस जग में शुभकारी।
पूजा करके जीवन बनता, भव्यों का मनहारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने हमें सताया, आत्म सौख्य न पाए।
अक्षय पद पाने हेतू हम, अक्षय अक्षत लाए।।

नन्दीश्वर में जिनमंदिर हैं, इस जग में शुभकारी।
पूजा करके जीवन बनता, भव्यों का मनहारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव के वश में होकर, प्राणी यह भटकाए।
कामजयी हो आप अतः हम, पुष्प चढ़ाने लाए।।
नन्दीश्वर में जिनमंदिर हैं, इस जग में शुभकारी।
पूजा करके जीवन बनता, भव्यों का मनहारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर का तम हरने को हम, घृत के दीप जलाए।
मोह महातम हो विनाश अब, पूजा करने आए।।
नन्दीश्वर में जिनमंदिर हैं, इस जग में शुभकारी।
पूजा करके जीवन बनता, भव्यों का मनहारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीप जलाने से तो, जग उजियारा होवे।
सम्यक् ज्ञान शिखा ज्योती से, मोह महातम खोवे।।
नन्दीश्वर में जिनमंदिर हैं, इस जग में शुभकारी।
पूजा करके जीवन बनता, भव्यों का मनहारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शान्ती को भूल रहे हम, चतुर्गति भटकाए।
अष्ट कर्म के नाश हेतु यह, धूप जलाने लाए।।
नन्दीश्वर में जिनमंदिर हैं, इस जग में शुभकारी।
पूजा करके जीवन बनता, भव्यों का मनहारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति–भाँति के फल खाकर के, हमने राग बढ़ाया।
चतुर्गती में भ्रमण किया है, मुक्ती फल न पाया।।
नन्दीश्वर में जिनमंदिर हैं, इस जग में शुभकारी।
पूजा करके जीवन बनता, भव्यों का मनहारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्यों का मिश्रण करके, हमने अर्घ्य बनाया ।
व्यय उत्पाद ध्रौव्य सत् मेरा, निज स्वरूप ना पाया।।
नन्दीश्वर में जिनमंदिर हैं, इस जग में शुभकारी।
पूजा करके जीवन बनता, भव्यों का मनहारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांती पाने दे रहे, शांती धारा आज।
सुर–नर चक्री देवगण, सभी झुकाते ताज।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पुष्पित लेकर फूल।
कर्म नाथ मेरे सभी, हो जाएँ निर्मूल।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नंदीश्वर पूरब दिशा, रतिकर पर भगवान।
गाते हैं जयमाल हम, करने निज कल्याण।।

(पद्धड़ी छंद)

हे दीन बन्धु करुणा निधान, तुमको पूजें इह भक्त आन।
हो भवसर तारण तरण आप, तव अर्चा से सब कटें पाप।।
तुम चतुरानन सर्वज्ञ देव, तुम चरण सुरासुर करें सेव।
जय श्रीधर श्री कर ज्ञान धार, तुम गुण महिमा है अति अपार।।
जय ब्रह्मा शिव शंकर महेश, तुमको गणधर पूजें सुरेश।
जय ऋषि मुनि आदी करें ध्यान, निज का प्रगटाएँ ज्ञान भान।।
तव निर्मल गुण का करें गान, वे जीव बनें गुण के निधान।
हम हैं अबोध नर शक्तिहीन, तव गुण महिमा आरम्भ कीन।।

ज्यों सुत रक्षा को हिरण आप, करती केहरि सम्मुख कलाप।
ज्यों बालक शशि प्रतिबिम्ब पाए, पाने हेतू पौरुष दिखाय।।
ज्यों तुम गुण गाने को जिनेश, हम भी प्रयत्न करते विशेष।
तुम हो सबके प्रतिपाल नाथ, शिवपथ में देते आप साथ।।
हम भी आये हैं प्रभू द्वार, हमको भी अब प्रभु करो पार।
ज्यों न्याय वन्त भूपति महान्, जनता की रक्षा करें आन।।
प्रभु आप कहे त्रैलोक्य नाथ, सुर–असुर झुकावें चरण माथ।
ऋषि मुनि करते तव चरण आस, प्रभु ऋद्धि सिद्धि तुम दिए खास।।
यह भक्त पुकारें चरण आन, हम पर भी हे प्रभु करो ध्यान।
तव पद में मेरा रहे वास, यह अर्ज हमारी रही खास।।
कई अधम आप तारे जिनेश, उनको सुबुद्धि दीन्हें विशेष।
दुर्जन पशु भी तारे अनेक, उनके मन में जागा विवेक।।
तुम खड्ग कुसुम की किए माल, नागों की कर दी फूल माल।
तुम विकट दावानल कियो नीर, द्रोपदि का भारी बढ़ो चीर।।
ज्यों जहर सुधा सम किए देव, त्यों मेरी विपदा हरो एव।
अग्नी को तुम ही कमल कीन, कई तारे तुमने ज्ञानहीन।।
तुम मात–पिता सम रहे देव, हम पर भी कर दो कृपाएव।
तव वाणी है जग में विशाल, अतएव चरण में झुका भाल।।

दोहा– वासी तुम शिवमहल के, ऋद्धि–सिद्धि दातार।
भक्त खड़े तव चरण में, कर दो अब उद्धार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह–तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनपूजा-7

(स्थापना)

नन्दीश्वर अञ्जन गिरि भाई, जिसके पूर्व दिशा बतलाई।
नन्दा वापी बाह्य जानिए, कोंण में रतिकर श्रेष्ठ मानिए।।
हेमवर्ण पर्वत बतलाया, उच्च सहस्र योजन का गाया।
जिन मंदिर जिस पर शुभकारी, जिन बिम्बों पद धोक हमारी।।

दोहा- अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, शाश्वत् महति महान्।
जिनकी अर्चा से जगे, अन्तर में श्रद्धान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छंद)

विषय भोग में फँसने से, जीवन यह वृथा गँवाया है।
ना जन्म-मरण के चक्कर से, छुटकारा हमने पाया है।।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं।
है सिद्ध सुपद मेरा अनुपम, उस पद के भाव बनाये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर में निर्मलता पाने यह, चन्दन घिसकर लाए हैं।
मन शांत हुआ न चन्दन से, अतएव शरण में आए हैं।।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं।
है सिद्ध सुपद मेरा अनुपम, उस पद के भाव बनाये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज चेतन की निधियाँ पाने, यह अक्षत धोकर लाए हैं।
अनुपम अक्षय हो प्राप्त हमें, अक्षय पद पाने आए हैं।।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं।
है सिद्ध सुपद मेरा अनुपम, उस पद के भाव बनाये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह चेतन है निष्काम प्रभु, हम काम नशाने आए हैं।
यह पुष्प सुगन्धित उपवन के, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं।
है सिद्ध सुपद मेरा अनुपम, उस पद के भाव बनाये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा रोग दुखदायी है, न नाश उसे कर पाए हैं।
अब चेतन के गुण प्रगटाने, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं।
है सिद्ध सुपद मेरा अनुपम, उस पद के भाव बनाये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो दूर अंधेरा दीपक से, हम दीप जलाने आए हैं।
अन्तर का तिमिर नशाने को, हे नाथ ! चरण में आए हैं।।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं।
है सिद्ध सुपद मेरा अनुपम, उस पद के भाव बनाये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षय कर्मों का प्रभु नहीं हुआ, जग झंझट में भटकाए हैं।
अब कर्मों का क्षय करने को, यह धूप जलाने लाए हैं।।

हम अष्ट कर्म के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं।
है सिद्ध सुपद मेरा अनुपम, उस पद के भाव बनाये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम सुपाड़ी पिस्तादिक, थाली में भरके लाए हैं।
हम मोक्ष महाफल पाने को, हे नाथ चढ़ाने लाए हैं।।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं।
है सिद्ध सुपद मेरा अनुपम, उस पद के भाव बनाये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू, दीपक भी यहाँ जलाए हैं।
यह धूप सुफल का अर्घ्य बना, शाश्वत् पद पाने आए हैं।।
हम अष्ट कर्म के नाश हेतु प्रभु, चरण शरण में आये हैं।
है सिद्ध सुपद मेरा अनुपम, उस पद के भाव बनाये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– देते शांतीधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिनपूजा व्रत में विशद, दोष लगें न कोय।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– जिन पूजा के भाव से, कर्मों का क्षय होय।
जन्म–मरण की श्रृंखला, पुष्पाञ्जलि कर खोय।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– परम ब्रह्म परमात्मा, परमानन्द निलीन।
गाते हैं जयमाला हम, होवें भव दुख क्षीण।।

(छंद–रोला)

जय जय जिनवर देव, तुम त्रिभुवन के स्वामी।
तीर्थंकर जिनदेव, जग जन अन्तर्यामी।।
जय जय विघ्न समूह, नाशक आप कहाए।
ऋद्धि सिद्धि परिपूर्ण, केवलज्ञानी गाए।।1।।
भव समुद्र से पार, सबको करने वाले।
द्रव्य भाव शुभ तीर्थ, हे प्रभु आप निराले।।
चिन्मूरत चिद्रूप, हे जिन ! गुण के सागर।
सम्यक् दर्शन ज्ञान, चरित के रत्नाकर।।2।।
मध्यलोक के द्वीप, अष्टम में तुम राजे।
रतिकर स्वर्ण समान, जिन मंदिर में साजे।।
घंटा तोरण आदि, संयुत मंदिर जानो।
परकोटे शुभ तीन, चहुँ दिश गोपुर मानो।।3।।
प्रति वीथी मानस्तम्भ, नव स्तूप बताए।
मधि कोट प्रथम के बीच, हैं वन भूमि लताएँ।।
कोट द्वितिय के मध्य, दशविधि ध्वज फहराएँ।
तृतिय कोटे बीच, चैत्य भूमि कहलाए।।4।।
चैत्य वृक्ष सिद्धार्थ, तरु भी आगे सोहें।
रचना विविध प्रकार, सबके मन को मोहे।।
प्रति मंदिर के मध्य, गर्भ गृह हैं शुभकारी।
एक सौ आठ जिनबिम्ब, मंगलमय मनहारी।।5।।
है सिंहासन मनहार, जिनकी महिमा न्यारी।
जिन पर जिनवर बिम्ब, शोभा पाते भारी।।
धनुष पाँच सौ तुंग, पद्मासन में गाये।
बृहस्पति भी आन, महिमा न कह पाए।।6।।

आके चौंसठ यक्ष, अनुपम चँवर ढुराते।
वन्दन करें त्रिकाल, प्रभु की महिमा गाते।।
जिन प्रतिमा के पास, श्री देवी भी सोहे।
श्रुतदेवी का बिम्ब, बाजू में मन मोहे।।7।।
सनत कुमार सर्वाण्ह, यक्ष की मूर्ति गाई।
इत्यादिक परिपूर्ण श्रेष्ठ, महिमा बतलाई।।
प्रति जिनबिम्ब के पास, मंगल द्रव्य बताए।
संख्या एक सौ आठ, मंगलमय शुभ गाए।।8।।
श्री मण्डप के अग्र, स्वर्ण के कलश बताए।
स्वर्णमयी मालाएँ सबके, मन को भाए।।
मुखप्रेक्षा अभिषेक, वन्दना मण्डप आदी।
क्रीड़ा नर्तन गुणग्रह, चित्र भवन रचनादी।।9।।
बहु विधि रचना वर्णन, करना कठिन बताये।
गणधर भी निज मुख से, पूरा न कह पाए।।
हम परोक्ष ही जिन वन्दन, के भाव बनाते।
दर्शन हो प्रत्यक्ष चरण, में शीश झुकाते।।10।।

दोहा– चिन्तामणी जिनबिम्ब हैं, चिन्तित फल दातार।
अविकारी जिनदेव को, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह–तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनपूजा–8

(स्थापना)

नन्दीश्वर पूरब दिश जानो, अञ्जन गिरि का दक्षिण मानो।
वापी वाह्य कोंण शुभकारी, तीजा रतिकर मंगलकारी।।
एक सहस्र योजन ऊँचाई, ढोल समान गोल है भाई।
जिस पर जिनगृह हैं प्रतिमाएँ, आह्वानन् कर सौख्य मनाए।।

दोहा– अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, शाश्वत् महति महान्।
जिनकी अर्चा से जगे, उर में सद् श्रद्धान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चामर छंद)

नीर क्षीर सिंधु का, सुभृंग में भराइये।
श्री जिनेन्द्र पाद में, सुधार त्रय कराइये।।
शुद्ध भाव से जिनेन्द्र, गुण श्रेष्ठ गाइये।
भाव से जिनेन्द्र के, चरण शीश नाइये।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दनादि गार के, जिनपाद में सु लाइये।
भवाताप कर विनाश, सिद्ध सौख्य पाइये।।
शुद्ध भाव से जिनेन्द्र, गुण श्रेष्ठ गाइये।
भाव से जिनेन्द्र के, चरण शीश नाइये।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

फेन के समान श्वेत, शालि पुञ्ज लाइये।
श्री जिनेन्द्र पाद में, चढ़ाय हर्ष पाइये।।

शुद्ध भाव से जिनेन्द्र, गुण श्रेष्ठ गाइये।
भाव से जिनेन्द्र के, चरण शीश नाइये।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के सुमन, सुबाग से मँगाइये।
श्री जिनेन्द्र पाद में चढ़ाय, सौख्य पाइये।।
शुद्ध भाव से जिनेन्द्र, गुण श्रेष्ठ गाइये।
भाव से जिनेन्द्र के, चरण शीश नाइये।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस चरु शुद्ध सद्ध, हाथ से बनाइये।
क्षुधा रोग नाश हेतु, चरण में चढ़ाइये।।
शुद्ध भाव से जिनेन्द्र, गुण श्रेष्ठ गाइये।
भाव से जिनेन्द्र के, चरण शीश नाइये।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर लायके, सु आरती सजाइये।
श्री जिनेन्द्र के समक्ष, आरती शुभ गाइये।।
शुद्ध भाव से जिनेन्द्र, गुण श्रेष्ठ गाइये।
भाव से जिनेन्द्र के, चरण शीश नाइये।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध ले सुगंध धूप, अग्नि में जलाइये।
कर्म काठ को जलाय, अपूर्व सौख्य पाइये।।
शुद्ध भाव से जिनेन्द्र, गुण श्रेष्ठ गाइये।
भाव से जिनेन्द्र के, चरण शीश नाइये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फलादि लायके, जिनार्चना को आइये।
श्री जिनेन्द्र को चढ़ाय, आत्म सौख्य पाइये।
शुद्ध भाव से जिनेन्द्र, गुण श्रेष्ठ गाइये।
भाव से जिनेन्द्र के चरण शीश नाइये।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध शालि पुष्प आदि सब मिलाइये।
अर्घ्य ये चढ़ाय के, अपूर्व सौख्य पाइये।।
शुद्ध भाव से जिनेन्द्र, गुण श्रेष्ठ गाइये।
भाव से जिनेन्द्र के, चरण शीश नाइये।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- स्वर्ण पात्र में स्वच्छ जल, से देते जल धार।
तीन लोक में शांति हो, पाएँ भवदधि पार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा- भाँति-भाँति के पुष्प ले, आये जिन दरबार।
पुष्पाञ्जलि अर्पण किए, मिले आत्म सुख सार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- कृत्रिमाकृत्रिम पूज्य हैं, जिनवर बिम्ब महान्।
गाते हैं जयमाल हम, करने निज कल्याण।।

(पद्धड़ी छंद)

कहे जग में जिनदेव प्रधान, कियो जिनने उपकार महान्।
प्रभो गर्भागम मंगल पाए, शचीपति चरणों शीश नवाय।।
जगाये जिन सम्यक् श्रद्धान, जन्म से पाये तीन सुज्ञान।
लियो जब जन्म तभी सुर देव, करे जय शब्द स्वयं सुर एव।।
तभी सौधर्म चढ़ो गज शीश, चरण प्रभु आय झुकावे शीश।
चल्यो प्रभु को ले स्वर्ण गिरीश, लियो प्रभु को वसुधा पति ईश।।
महागिर पे अभिषेक महान्, किए सुर के सब इन्द्र प्रधान।
भरे जल कलशा हाथों आन, सुवर्ण सु रत्न जड़े द्युतिमान।।

धवल जल पंचम सागर वान, दिये द्युति अनुपम क्षीर समान।
करे सुर उत्सव मंगल गान, बजे सुर दुन्दुभि दिव्य महान्।।
नचें सुर नारि सु दे-दे ताल, झुकावत जिनपद में निज भाल।
सभी भक्ती करते कर जोर, महोत्सव मना रहे चऊँ ओर।।
सुगावत गान बजावत ताल, बजैं सब वाद्य सुखद सुविशाल।
झनाझन नूपुर की झंकार, बजे घुंघरू पग दे टंकार।।
टनाटन बाजत है करताल, धनाधन घोर मृदंग विशाल।
बजावत वीन सुरी शुभकार, नवों रस भावमयी मनहार।।
करें जयकार सुनृत्य मझार, सुरासुर हर्षें हिय अनुसार।
सुराधिक श्रेष्ठ करें अभिषेक, करें जयकार सुमस्तक टेक।।
बजे नभ में सुर दुन्दुभि जोर, दशों दिश में हो मंगल शोर।
निरन्तर नृत्य करें सुर आन, असंख्य सुरियाँ करवें गुणगान।।
कहे चिर जीव जिनेश्वर आप, रहे जग में जयवन्त प्रताप।
करो हमको भव सागर पार, तुम्हीं चरणों में है शिवद्वार।।
लहें प्रभु जग के उत्तम भोग, रचें नहिं पाके भोग मनोग।
धरे प्रभु योग निमित्त सुपाय, सकल संयम धारे वन जाय।।
करें निज आतम को नित ध्यान, जगे तव प्रभु को केवल ज्ञान।
किए अपने सब कर्म विनाश, 'विशद' शिवपुर में कीन्हें वास।।

दोहा- जिनवर चरण सरोज में, रहे हमारा शीश।
विशद भावना पूर्ण हो, हे जगतीपति ईश।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह-तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-9

(स्थापना)

पूरब अञ्जन गिरि शुभकारी, जिसकी दक्षिण दिश मनहारी।
नन्दोत्तर वापी शुभ जानो, बाह्य कोंण में रतिकर मानो।।
एक सहस्र योजन ऊँचाई, ढोल समान गोल है भाई।
जिस पर जिनगृह हैं प्रतिमाएँ, आह्वानन् कर सौख्य मनाएँ।।

दोहा- अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, शाश्वत् महति महान्।
जिनकी अर्चा से जगे, अन्तर में सद् श्रद्धान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(नरेन्द्र छंद)

जन्म लिया हमने भव-भव में, भव-भव नीर पिया है।
तृप्ति नहीं मिल पाई अतः अब, जल से धार किया है।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन-वच-तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ अब, छूटें भव बन्धन से।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के सब भोग किए हैं, उनसे शांति न पाई।
चन्दन चढ़ा रहे हम अब यह, शांती पाने भाई।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन-वच-तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ अब, छूटें भव बन्धन से।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने आतम वैभव, खण्ड-खण्ड कर डाला।
अक्षत से पूजा करते सुख, अक्षय देने वाला।।

आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन-वच-तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ अब, छूटें भव बन्धन से।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अपने वश में तीन लोक को, कामदेव कर लीन्हा।
उसके जेता आप अतः यह, पुष्प समर्पण कीन्हा।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन-वच-तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ अब, छूटें भव बन्धन से।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा व्याधि भोजन करने से, मेरी ना मिट पाई।
यह नैवेद्य चढ़ाते हमको, निजपद की सुधि आई।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन-वच-तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ अब, छूटें भव बन्धन से।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर से अंध हुए हम, निज को जान न पाए।
आत्म ज्ञान उद्योत हेतु यह, घृत का दीप जलाए।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन-वच-तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ अब, छूटें भव बन्धन से।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म यह काल अनादी, हमको सता रहे हैं।
धूप जलाते तव चरणों में, दुख ना जात सहे हैं।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन-वच-तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ अब, छूटें भव बन्धन से।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अविनश्वर फल की चाहत में, देव कई हम पूजे।
मोह महाफल देने वाले, नहीं आप सम दूजे।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन-वच-तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ अब, छूटें भव बन्धन से।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य का, अर्घ्य बनाकर लाए।
सर्वोत्तम फल पाने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने आए।।
आज यहाँ पर पूज रहे हैं, प्रभु को मन-वच-तन से।
रत्नत्रय निधि मिले नाथ अब, छूटें भव बन्धन से।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- धारा देते आपके, चरणों में त्रय बार।
विशद शांति सौभाग्य हो, होवे सौख्य अपार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा- कमल चमेली मोगरा, सुरभित हर सिंगार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने शिव आधार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- गिरि रतिकर पर जिन भवन, के जिन बिम्ब विशाल।
उनकी पूजा कर यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छंद)

जय जय तीर्थंकर श्री जिनवर, तुम समवशरण के ईश कहे।
जय अर्हत् लक्ष्मी के स्वामी, जिन जगतीपति जगदीश रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय पाते, तन-मन पसेव से हीन रहा।
शुभ वज्र वृषभ नाराच संहनन, रुधिर श्वेत आकार कहा।।
अतिशय स्वरूप सुरभित तन का, शुभ समचतुष्क संस्थान कहा।
परमौदारिक तन पाते अनुपम, लक्षण सहस अरु आठ महा।।
है अतुल्य बल श्री जिनेन्द्र का, प्रियहित वचन सुनाते हैं।
जिन केवलज्ञान प्रगट होते, प्रभु दश अतिशय शुभ पाते हैं।।

सौ योजन में होता सुभिक्ष, प्रभु विद्यापति कहलाते हैं।
प्रभु चतुर्दिशा में दर्शन देते, गगन गमन कर जाते हैं।।
नहिं भोजन हो उपसर्ग नहीं, हों छाया अरु टिमकार विहीन।
नख अरु केश नहीं बढ़ते हैं, ईश्वर हैं अदया से हीन।।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहार, भव्यों के हितकारी हैं।
सर्वार्ध मागधी भाषा शुभ, मैत्री जगजन मनहारी है।।
सब ऋतु के फल अरु फूल खिलें, दर्पणवत् भूमी होती है।
अनुकूल सुगन्धित पवन चले, भू की रज कंटक खोती है।।
जन-जन में परमानन्द रहे, गंधोदक वृष्टी देव करें।
प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शालि आदिक से खेत भरें।।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुर गण मिल जय-जयकार करें।
शुभ धर्मचक्र चलता आगे, जिनवर जी श्रेष्ठ विहार करें।।
तरुवर अशोक सुर पुष्प वृष्टि, अरु सिंहासन शुभ चंवर कहे।
दुन्दुभि भामण्डल दिव्य ध्वनि, त्रय छत्र शीश पे शोभ रहे।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ महा, सुख ज्ञान वीर्य दर्शनधारी।
ये अनन्त चतुष्टय सहित रहे, गुण छियालिस जिन के शुभकारी।।
क्षुत् तृषा जन्म मरणादि दोष, से विरहित हे जिन आप रहे।
चउ घाति नाश नव लब्धि प्राप्त, अविकारी जिन सर्वज्ञ कहे।।
द्वादश गण के भवि असंख्यात, तव ध्वनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल के द्वारा निज, आतम की कालुष धोते हैं।।

दोहा- त्रिभुवन के चूड़ामणि, हे अर्हत् भगवान।
भक्त खड़े हैं आश ले, विशद दीजिए ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबोला छंद- नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह-तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पंचम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-10

(स्थापना)

नन्दीश्वर पूरब अञ्जन गिरि, पश्चिम दिशा रही शुभकार।
सजल वापिका बाह्य कोंण में, रतिकर गिरि है मंगलकार।।
रत्नमयी पर्वत पर जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ रहीं महान्।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते हैं हम भी आह्वान्।।

दोहा- रत्नमयी गिरि पर बने, रत्नमयी जिन गेह।
पूजा कर शिव पाएँगे, हम भी निःसन्देह।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

यह मानसरोवर का प्रासुक, जल आज चढ़ाने लाए हैं।
हम भव सिन्धू में भटक रहे, अब मुक्ती पाने आए हैं।।
अकृत्रिम जिनगृह प्रतिमाएँ, हम पूज रहे हैं शुभकारी।
प्रभु मुक्ती पथ की राह मिले, मम जीवन हो मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चरणों में चर्चित करने को, चन्दन में केसर घिस लाए।
संसार ताप के नाश हेतु, हम पूजा करने को आए।।
अकृत्रिम जिनगृह प्रतिमाएँ, हम पूज रहे हैं शुभकारी।
प्रभु मुक्ती पथ की राह मिले, मम जीवन हो मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह प्रासुक जल में धोकर के, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
अक्षय अखण्ड अविनाशी पद, पाने को दर पर आए हैं।।

अकृत्रिम जिनगृह प्रतिमाएँ, हम पूज रहे हैं शुभकारी।
प्रभु मुक्ती पथ की राह मिले, मम जीवन हो मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के भोग मधुर लगते, किन्तू दुखदायी होते हैं।
तन–मन को आकुल करते हैं, अन्तर की समता खोते हैं।।
अकृत्रिम जिनगृह प्रतिमाएँ, हम पूज रहे हैं शुभकारी।
प्रभु मुक्ती पथ की राह मिले, मम जीवन हो मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनपद की पूजा करने को, नैवेद्य सरस बनवाए हैं।
है काल अनादी क्षुधा रोग, वह यहाँ नशाने आए हैं।।
अकृत्रिम जिनगृह प्रतिमाएँ, हम पूज रहे हैं शुभकारी।
प्रभु मुक्ती पथ की राह मिले, मम जीवन हो मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन के दीप बनाकर के, घृत में यह दीप जलाए हैं।
छाया है मोह तिमिर काला, वह मोह नशाने आए हैं।।
अकृत्रिम जिनगृह प्रतिमाएँ, हम पूज रहे हैं शुभकारी।
प्रभु मुक्ती पथ की राह मिले, मम जीवन हो मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु चन्दन से अनुपम, यह ताजी धूप बनाए हैं।
हम कर्म श्रृंखला नाश हेतु, प्रभु यहाँ जलाने आए हैं।।
अकृत्रिम जिनगृह प्रतिमाएँ, हम पूज रहे हैं शुभकारी।
प्रभु मुक्ती पथ की राह मिले, मम जीवन हो मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पुण्य–पाप का फल पाकर, चारों गति में भटकाए हैं।
अब मोक्ष महाफल प्राप्त करें, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
अकृत्रिम जिनगृह प्रतिमाएँ, हम पूज रहे हैं शुभकारी।
प्रभु मुक्ती पथ की राह मिले, मम जीवन हो मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अर्घ्य सहित पूजा करने, वसु द्रव्य मिलाकर लाए हैं।
पाने अनर्घ्य पद नाथ चरण, हम भाव बनाकर लाए हैं।।
अकृत्रिम जिनगृह प्रतिमाएँ, हम पूज रहे हैं शुभकारी।
प्रभु मुक्ती पथ की राह मिले, मम जीवन हो मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा के लिए, भरके लाए नीर।
बार–बार हमको नहीं, धरना पड़े शरीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– परम सुगन्धित पुष्प ले, पूज रहे जिनपाद।
नाथ हमारा नाश हो, पर्याय का उत्पाद।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– गुण अनन्त मण्डित प्रभो, करो हृदय मम वास।
भव से पार लगाओगे, पूरा है विश्वास।।

(पद्धड़ी छंद)

गिरि नंदीश्वर सोहे महान्, जिसकी है अपनी अलग शान।
जिस पर रतिकर सोहे विशेष, जिस पर जिन मंदिर हैं जिनेश।।
जिनकी महिमा का नहीं पार, जो भक्तों के हैं कंठहार।
जय वीतराग देवाधिदेव, शत् इन्द्र आपकी करें सेव।।
सर्वज्ञ कहाए प्रभू आप, सब करें आपका नाम जाप।
जय सकल वस्तु ज्ञायक महान्, त्रय लोक कालवर्ती प्रधान।।
जय सभी जानते एक साथ, तुम सबके स्वामी एक नाथ।
जय दर्श अनन्तानन्त धार, तुम विशद ज्ञान पाए अपार।।

जय सुख अनन्त धारी जिनेश, बल तुमने पाया है विशेष।
जय क्षायिक लब्धी आप धार, गुण अन्य पाए तुमने अपार।।
जय निराहार तन ज्योतिमंत, फिर भी शक्ती पाए अनन्त।
जय त्रेसठ प्रकृति कर विनाश, निज चेतन गुण में किए वास।।
जय ज्ञानावरणी पंच भेद, तुम नाश किए सारे प्रभेद।
नव भेद दर्शनावरण आप, इनका तुम खोए पूर्ण ताप।।
अट्ठाइस मोहनीय कर्म चूर, सम्यक्त्व सुगुण से हुए पूर।
जय अन्तराय के पाँच भेद, नाशी हो गये हैं रहित खेद।।
प्रभु सातासाता कर विनाश, निज चेतन गुण में किए वास।
जय नाम कर्म भी नाश कीन, तुम मूर्त देह से हो विहीन।।
फिर गोत्र कर्म का किया अंत, तुम सिद्ध श्री के बने कंत।
जय आयु कर्म का किया नाश, सिद्धों में जाके किए वास।।
जिनराज पंचकल्याण पाय, इन्द्रादि भक्ति के हेतु आय।
लौकान्तिक आते एक बार, कल्याणक तप में कर विहार।।
अहमिन्द्रों का ना गमन होय, वश यही वस्तु स्वभाव सोय।
जो रहें सदा अपने स्थान, वह विनय करें फिर भी महान्।।
जय-जय-जय भवतारक जिनेश, अब कृपा करो हम पर विशेष।
अब 'विशद' आप हो कृपावन्त, मम करो कर्म का पूर्ण अन्त।।

दोहा- नंदीश्वर पूरब दिशा, पञ्चम रतिकर जान।
जिन मंदिर जिनबिम्ब हम, पूजें यहाँ महान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा पञ्चम रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह-तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकर जिनमन्दिर जिनपूजा-11

(स्थापना)

नन्दीश्वर पूरब अञ्जन गिरि, जिसकी पश्चिम दिशा महान्।
सजल वापिका वाह्य कोंण में, रतिकर गिरि हैं हेम समान।।
रत्नमयी पर्वत पर जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ रहीं महान्।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते हैं हम भी आह्वान्।।

दोहा- रत्नमयी गिरि पर बने, रत्नमयी जिन गेह।
पूजा कर शिव पाएँगे, हम भी निःसन्देह।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छंद)

प्रासुक सुरभित नीर सुनिर्मल, स्वर्ण पात्र में पूर्ण भरें।
नाश हेतु हम जन्म जरादी, त्रिभुवन पति पद धार करें।।
नन्दीश्वर के जिन मंदिर की, पूजा करते यहाँ परोक्ष।
आठों कर्म विनाश करें अब, प्राप्त हमें हो जाए मोक्ष।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि का पीत सुगन्धित, चन्दन तन का ताप हरे।
भव संताप नाश करने को, चर्च रहे पद भक्ति भरे।।
नन्दीश्वर के जिन मंदिर की, पूजा करते यहाँ परोक्ष।
आठों कर्म विनाश करें अब, प्राप्त हमें हो जाए मोक्ष।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित अक्षय धवल सुअक्षत, के थाली भर पुँज करें।
पद अखण्ड अक्षय हम पाएँ, कर्म श्रृंखला शीघ्र हरें।।
नन्दीश्वर के जिन मंदिर की, पूजा करते यहाँ परोक्ष।
आठों कर्म विनाश करें अब, प्राप्त हमें हो जाए मोक्ष।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी कुन्द पुष्प ले, त्रिभुवनपति के चरण जजें।
काम रोग का कर विनाश हम, निज स्वभाव से शीघ्र सजें।।
नन्दीश्वर के जिन मंदिर की, पूजा करते यहाँ परोक्ष।
आठों कर्म विनाश करें अब, प्राप्त हमें हो जाए मोक्ष।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के व्यंजन शुद्ध बनाकर, पूजा के शुभ थाल भरें।
क्षुधा वेदना नाश हेतु प्रभु, तव पद पंकज भेंट करें।।
नन्दीश्वर के जिन मंदिर की, पूजा करते यहाँ परोक्ष।
आठों कर्म विनाश करें अब, प्राप्त हमें हो जाए मोक्ष।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूरमय बाती रखकर, रत्न दीप प्रद्योत करें।
मोह महातम दूर हटाकर, निज आतम उद्योत करें।।
नन्दीश्वर के जिन मंदिर की, पूजा करते यहाँ परोक्ष।
आठों कर्म विनाश करें अब, प्राप्त हमें हो जाए मोक्ष।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध संयुक्त सुगन्धित, धूप श्रेष्ठ तैय्यार करें।
अष्ट कर्म की बाधा अपनी, जिन अर्चा से पूर्ण हरें।।
नन्दीश्वर के जिन मंदिर की, पूजा करते यहाँ परोक्ष।
आठों कर्म विनाश करें अब, प्राप्त हमें हो जाए मोक्ष।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस-सरस ताजे फल के हम, आज यहाँ पर थाल भरें।
अनुपम मोक्ष महाफल पाने, तव चरणों में आन धरें।।
नन्दीश्वर के जिन मंदिर की, पूजा करते यहाँ परोक्ष।
आठों कर्म विनाश करें अब, प्राप्त हमें हो जाए मोक्ष।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षत कुसुमादिक, चरू दीप शुभ धूप जले।
फल से पूरित अर्घ्य चढ़ाएँ, सम्यक् ज्ञान प्रसून खिले।।
नन्दीश्वर के जिन मंदिर की, पूजा करते यहाँ परोक्ष।
आठों कर्म विनाश करें अब, प्राप्त हमें हो जाए मोक्ष।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक के नाथ तुम, त्रिभुवन के गुरु आप।
त्रय धारा देते चरण, मिटे सकल संताप।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा- महामंत्र हो तुम प्रभो, महामंत्र तव नाम।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करके चरण प्रणाम।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- जिन चरणों को पूजते, जागी भक्ति विशाल।
रतिकर के जिनबिम्ब की, गाते हम जयमाल।।

चाल छंद (अहो जगत्...)

जय जय जय जिनदेव, जय हे अन्तर्यामी।
तुम हो करुणावान, हे त्रिभुवन के स्वामी।।
इस भव वन के बीच, काल अनन्त भ्रमाये।
मोहित हो भगवान, दुख बहु हमने पाये।।
काल अनन्त निगोद, में अनन्त भव खोये।
जन्म-मरण के दुःख, हमने भारी ढोये।।
एकेन्द्रिय तन पाय, कितने बार मरे हैं।
भू जल अग्नि समीर, तरु की देह धरे हैं।।
फोड़ी तोड़ी फाड़ी, कुचरी देह हमारी।
तोड़ मरोड़ के दुख पाये, हमने अति भारी।।
उदय हुआ दुर्भाग, माटी मोल बिकाए।
नीर हरित तन पाय, अग्नी बीच पकाए।।
पाई त्रस पर्याय लट, आदिक तन धारे।
खाये हैं कई बार, नोंचे कुचले मारे।।
त्रय इन्द्रिय को धार, जू आदिक तन पाए।
जहरादि से घात, मारे खूब सताए।।
चउ इन्द्रिय तन धार, मक्खी आदि घनेरे।
सहे दुःख विनिवार, बहुतक सांझ सबेरे।।
हुए असंज्ञी जीव, मन से हीन कहाए।
ज्ञान हिताहित हीन, हो दुख ही दुख पाए।।
कर्मोदय को पाय, सम्मूर्च्छन तन पाया।
पाया दुख घनघोर, सुख की मिली न छाया।।
पशु के तन को पाय, वध बन्धन दुख पाये।
भार वहन इत्यादिक, के दुख कौन बताए।।

नर की पाई देह, गर्भ विषें जब आये।
गर्भ जन्म के दुःख, हमसे कहे ना जाये।।
कर्मों का फल पाय, स्वर्ग या नरक सिधाए।
पाकर मिथ्याज्ञान, मोहित हो अकुलाए।।
चार गती के मांहि, फिर-फिर देह धरी है।
आतमहित के हेतु, करनी नहीं करी है।।
पुण्योदय से नाथ, जागे भाग्य हमारे।
चरण कमल जिनराज, हमने आज निहारे।।
पाए जिनवर देव, उनके मुख की वाणी।
दिव्य ध्वनि ॐकार, जग जन की कल्याणी।।
गुरु पाए निर्ग्रन्थ, रत्नत्रय के धारी।
धर्म दयामय सार, भविजन को हितकारी।।
मेरी यह है चाह, और न दूजी स्वामी।
पूर्ण करो भगवान, हे जिन अन्तर्यामी।।
जब-जब पाएँ देह, तब-तब तुमको पाएँ।
होके निस्पृह भाव, हे जिन तुमको ध्याएँ।।

दोहा- पाया जो पद आपने, दो वह हमको नाथ।
भव-भव की भटकन मिटे, झुका रहे पद माथ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह-तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-12

(स्थापना)

नन्दीश्वर पूरब अञ्जन गिरि, जिसकी उत्तर दिशा प्रधान।
नन्दोत्तरा वापिका गहरी, एक सहस है योजन मान।।
जिसके वाह्य कोंण पर रतिकर, रत्नमयी है मंगलकार।
आह्वानन् जिनगृह में करते, जिनबिम्बों का बारम्बार।।

सोरठा- किए पूर्व के कर्म, अब ना विशद सताएँ।
दो हमको आशीष, उनसे मुक्ती पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छंद)

कलुषित भावों ने हे प्रभुवर, हमको भव भ्रमण कराया है।
जल से निर्मलता आती है, यह आज समझ में आया है।।
हम रतिकर गिरि के जिनगृह में, जिनबिम्ब पूजते शुभकारी।
शिवपथ के राही बने विशद, मम जीवन हो मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्ष्या से जलकर हे भगवन्, संतापित होते आए हैं।
चन्दन से शीतलता मिलती, संताप नशाने आए हैं।।
हम रतिकर गिरि के जिनगृह में, जिनबिम्ब पूजते शुभकारी।
शिवपथ के राही बने विशद, मम जीवन हो मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपुर के जो वासी वह, भव वन में आज भटकते हैं।
अक्षयपद न मिल पाया है, दर-दर पर माथ पटकते हैं।।

हम रतिकर गिरि के जिनगृह में, जिनबिम्ब पूजते शुभकारी।
शिवपथ के राही बने विशद, मम जीवन हो मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के सुख की अभिलाषा, विषयों में हमें फँसाए है।
है प्रबल काम शत्रू जग में, सबको जो दास बनाए है।।
हम रतिकर गिरि के जिनगृह में, जिनबिम्ब पूजते शुभकारी।
शिवपथ के राही बने विशद, मम जीवन हो मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा सताती है हमको, सन्तुष्ट नहीं हम कर पाए।
न क्षुधा शांत हो पाई कई, नैवेद्य बनाकर के खाए।।
हम रतिकर गिरि के जिनगृह में, जिनबिम्ब पूजते शुभकारी।
शिवपथ के राही बने विशद, मम जीवन हो मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर की आँख न खुल पाई, दुःखों के बादल घिरे रहे।
अज्ञान तिमिर में फँसने से, मिथ्यातम के घन घात सहे।।
हम रतिकर गिरि के जिनगृह में, जिनबिम्ब पूजते शुभकारी।
शिवपथ के राही बने विशद, मम जीवन हो मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप हृदय में छाया है, कर्मों की धूप सताती है।
प्रभु चरण छाँव में आने से, झोली क्षण में भर जाती है।।
हम रतिकर गिरि के जिनगृह में, जिनबिम्ब पूजते शुभकारी।
शिवपथ के राही बने विशद, मम जीवन हो मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पुण्य के फल से मानव गति, पाकर न धर्म कमाया है।
न विशद मोक्ष फल पाया है, यूँ ही कई बार गँवाया है।।
हम रतिकर गिरि के जिनगृह में, जिनबिम्ब पूजते शुभकारी।
शिवपथ के राही बने विशद, मम जीवन हो मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नौका रत्नत्रय की अनुपम, इस भव सिन्धू से पार करे।
जो आलम्बन लेते इसका, वह जीवन में शिव नारि वरें।।
हम रतिकर गिरि के जिनगृह में, जिनबिम्ब पूजते शुभकारी।
शिवपथ के राही बने विशद, मम जीवन हो मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा से मिले, मन में शांति अपार।
आत्म ध्यान से जीव का, नश जाता संसार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– जिन अर्चा जग में भली, करती कर्म विनाश।
भवि जीवों की शीघ्र ही, होती पूरी आश।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– रतिकरगिरि के जिन भवन, पूज रहे हैं आज।
जयमाला गाए शुभम्, मिलकर सकल समाज।।

(तोटक–रेखता)

सुखी हैं इस जग में जिनराज, चरण तब पूजे सकल समाज।
जग्यो सम्यक्त्व सुज्ञान विवेक, किए भव–भव में पुण्य अनेक।।
महातम छाया है घनघोर, नहीं चल पाता कोई जोर।
चेतना अपने से अन्जान, बढ़ाती अपना सकल जहान।।
ज्ञानमय होता आतम राम, उसी में है उसका विश्राम।
नहीं देखा निज शाश्वत् रूप, बना फिरता क्यों स्वयं कुरूप।।
पड़ी जड़ कर्मों की जंजीर, भोगते जिससे प्राणी पीर।
फिरे हम नरक निगोदों मांहि, मिली न हमें धर्म की छांह।।

बिताया यूँ ही काल अनन्त, हुआ ना मोहनीय का अंत।
पशू मानव गति में जा घोर, दुखों का रहा अकथनीय जोर।।
स्वर्ग की है कुछ कथा विशेष, धरे जाके हमने कई भेष।
स्वर्ग में रहते ऊँचे देव, देख मन में हो क्लेश सदैव।।
वहाँ की कैसी अद्भुत आस, अन्त में विलखे छह–छह मास।
दशा चारों गति की दयनीय, मोह वश मान रहे कमनीय।
प्राप्त कर बारम्बार शरीर, कर्म के योग से पाई पीर।।
नहीं जाना निज का स्वरूप, देह में चेतन चिन्मय रूप।
चेतना परम अकर्ता नाथ, पिटे अग्नी सम लोह के साथ।।
बताए मर्म अरे यह कौन, प्रभू जब आप लिए हो मौन।
विधाता शिवपथ के तुम नाथ, पड़े हम तस्कर दल के हाथ।।
मोह का तुमने किया विनाश, हुआ तब केवलज्ञान प्रकाश।
कहाये ज्ञायक लोकालोक, रही न कोई बाधा रोक।।
हुए तुम योग रहित योगीश, चरण में झुकें जहाँ के ईश।
प्राप्त कर तुमने श्रेष्ठ विराग, बुझाई चिर कर्मों की आग।।
जीव कारण परमात्म त्रिकाल, भिन्न है उसकी जग से चाल।
आप हो अनुपम एक निमित्त, लगे जब तुम चरणों से चित्त।।
जीव वह कर जाए कल्याण, अनादि का है यही विधान।
जानकर आये हैं हम आज, झुकाए पाद पद्म में ताज।।
'विशद' हम चलें स्वयं के गाँव, मिले तव अरुणोदय की छाँव।

दोहा– चिन्मय हो चिद्रूप तुम, ज्ञाता दृष्टा नाथ।
कृपावन्त आशीष दो, सिर पर रख दो हाथ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***चौबोला छंद*–नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह–तेरह चारों ओर।**
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम रतिकर जिनमन्दिर जिनपूजा-13

(स्थापना)

नन्दीश्वर पूरब अञ्जन गिरि, जिसकी उत्तर दिश शुभकार।
नन्दोत्तरा वापिका अनुपम, सजल कमलयुत मंगलकार।।
जिसके वाह्य कोंण पर रतिकर, शोभित होता आभावान।
जिनगृह के जिनबिम्बों का हम, भाव सहित करते आह्वान्।।

दोहा- अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, शाश्वत् महति महान्।
जिनकी अर्चा से जगे, उर में सद् श्रद्धान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

निशदिन भोगों को भोगा है, इसमें ही हृदय लुभाया है।
अब जन्म जरा हो नाश मेरा, मन में यह भाव समाया है।।
हम पूजा करने का मन में, शुभ भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके पद पंकज में, नत हो शीश झुकाये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मन धन परिजन की चाह दाह, मानव मन को संतप्त करे।
चन्दन की शीतलता मन को, श्रद्धा आने पर पूर्ण हरे।।
हम पूजा करने का मन में, शुभ भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके पद पंकज में, नत हो शीश झुकाये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम श्वास्-श्वास् में जन्म मरण, करके अगणित दुख पाते हैं।
शुभ अक्षय पद से हीन रहे, भव सिन्धु में गोते खाते हैं।।

हम पूजा करने का मन में, शुभ भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके पद पंकज में, नत हो शीश झुकाये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन पुलकित होता पुष्पों से, हम काम वासना में अटके।
भँवरे की भाँती भ्रमण किया, भव सागर में दर-दर भटके।।
हम पूजा करने का मन में, शुभ भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके पद पंकज में, नत हो शीश झुकाये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है बड़ी लालसा खाने की, खाकर भी तृप्त न हो पाते।
हो क्षुधा रोग का नाश नाथ, हम तव चरणों में सिर नाते।।
हम पूजा करने का मन में, शुभ भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके पद पंकज में, नत हो शीश झुकाये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिखता है जो भी आँखों से, उसको प्रकाश हमने माना।
है आत्म ज्ञान का जो प्रकाश, उसको हमने न पहिचाना।।
हम पूजा करने का मन में, शुभ भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके पद पंकज में, नत हो शीश झुकाये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आँधी चलने से कर्मों की, पुरुषार्थ हीन हो जाता है।
कर्मों का जाल नशाए जो, वह नर शिवपद को पाता है।।
हम पूजा करने का मन में, शुभ भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके पद पंकज में, नत हो शीश झुकाये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फैला कर्मों का जाल यहाँ, उसमें सब फँसते जाते हैं।
सब ज्ञान ध्यान निष्फल होता, न मोक्ष महाफल पाते हैं।।
हम पूजा करने का मन में, शुभ भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके पद पंकज में, नत हो शीश झुकाये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अशुभ भाव की सरिता में, हम गोते खाते आए हैं।
अब रत्नत्रय की निधि पाने, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
हम पूजा करने का मन में, शुभ भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके पद पंकज में, नत हो शीश झुकाये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नीर भराया कूप से, देने शांतीधार।
हो जावें हे नाथ ! अब, कर्म अनादी क्षार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्प सुगन्धित है विशद, भ्रमर करें गुंजार।
जिन अर्चाकर जीव यह, करें आत्म उद्धार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– जिनबिम्बों के दर्शकर, होते जीव निहाल।
रतिकर पर जिनबिम्ब की, गाते हम जयमाल।।

(वीर छंद)

इस संसार की माया तजकर, द्वार आपके आये हैं।
धन्य हुआ है जीवन मेरा, दर्श आपके पाए हैं।।
तुम्हें छोड़ हम किसको देखें, किसको पाएँ जगती पर।
आप अलौकिक हो दुनियाँ में, हृदय बसाएँ जगती पर।।
दर्श किया जिस पल हे भगवन्, उस पल अति आनन्द मिला।
हृदय सरोवर में उस पल शुभ, भक्ती रस का सुमन खिला।।
वीतरागता झर-झर झरती, आप धर्म के स्रोत कहे।
सागर सी गहराई वाले, शीतलता के कोष रहे।।

वीतराग सर्वज्ञ देव का, जिन मन्दिर में वास रहा।
हृदय बनेगा मंदिर उसका, जो प्रभु पद का दास रहा।।
तुम हो सुख के सागर भगवन्, अक्षय सुख का दान करो।
भक्त आपके आस लगाएँ, अक्षय सौख्य प्रदान करो।।
दर्शन का फल सम्यक् दर्शन, तुमने ऐसा गाया है।
अतः दर्श करने का भगवन्, हमने भाव बनाया है।।
अहो जिनालय ! अहो जिनेश्वर !, पावन श्रेष्ठ कहाते हैं।
अतः चित्त से प्रमुदित होकर, जिन महिमा को गाते हैं।।
चैत्यालय ही सिद्धालय का, पथ दर्शाने वाला है।
चिदानन्द चिन्मय शुभ चेतन, कृतकृत्य बनाने वाला है।।
पाप राशि भव-भव से संचित, क्षण में भस्म हुआ करती।
जिनराज चरण की शुभ भक्ती, भव-भव के दुःखों को हरती।।
जिनबिम्ब अचेतन होकर भी, जीवों को वाँछित फल देते।
जो पूज रहे हैं भक्ती से, उनके सब संकट हर लेते।।
आकाश गमन ऋद्धीधारी, मुनिगण भी विचरण करते हैं।
आनन्दामृत पीकर के जो, निज कर्म शत्रु दल हरते हैं।।
जय जय जिनदेव अमंगल हर, जग में मंगल करने वाले।
जय विशद ज्ञान के ईश आप, सब दोषों को हरने वाले।।

(छन्द : घत्ता)

जय जय जिनराजा, धर्म जहाजा, तीन लोक के ईश महा।
जय जय अविकारी मंगलकारी, जगतीपति जगदीश अहा।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोला छंद)

नन्दीश्वर में बने जिनालय, तेरह-तेरह चारों ओर।
भव्य जनों के मन मधुकर को, करते हैं जो भाव विभोर।।
भव्य जीव जिनपूजा करके, ऋद्धि सिद्धि नवनिधि पाते।
'विशद' ज्ञान के धारी बनकर, सिद्धशिला पर वह जाते।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-14

(स्थापना)

नन्दीश्वर शुभ द्वीप आठवाँ, जिसकी दक्षिण दिशा महान।
सहस चौरासी योजन ऊँचा, काला अञ्जन गिरि प्रधान।।
ढोल की पोल समान रहा जो, जिस पर हैं जिनगृह शुभकार।
जिनबिम्बों का आह्वानन् हम, करते उर में बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जोगीरासा छंद)

जन्म-जरादिक के दुख भारी, काल अनादि सहे हैं।
सारे जग के संकट कोई, बाँकी नहीं रहे हैं।।
सर्व दुखों के नाश हेतु यह, निर्मल जल भर लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप में तपते प्राणी, शांति कभी न पाए।
सुर नारक नर पशूगति के, भारी दुःख उठाए।।
शुद्ध सुगन्धित शीतल चंदन, आज यहाँ पर लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग में जो भी हैं पदार्थ, सबका क्षय बतलाया।
अधुव वस्तू अपनी मानी, इसीलिए दुख पाया।।

अक्षय बुद्धी कर पद अक्षय, पाने अक्षत लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मा विष्णु महेश आदि नर, कामबाण से हारे।
भटक रहे हैं चतुर्गती में, काम के मारे-मारे।।
काम शत्रु पर विजय हेतु यह, पुष्प मनोहर लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग है जग जीवों को, भव-भव में दुख दाता।
सदा सताए रहते प्राणी, पाते न सुख साता।।
क्षुधा रोग वारण करने को, यह नैवेद्य बनाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या मोह महातम भारी, सारे जग में छाया।
आतम ज्ञान सूर्य का दर्शन, अतः नहीं कर पाया।।
मोह महातम पूर्ण नशाने, दीप जलाकर लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय वश जग के प्राणी, दुःख निरन्तर पाते।
प्रबल कषाय आदि के द्वारा, जब यह सतत सताते।।
ज्ञान प्रकाश नाश कर्मों को, धूप जलाने लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस फल को पाने इन्द्रादिक, ऋषि मुनि सुर ललचाते।
वह अरहंत शरण बिन जग में, अन्य कहीं ना पाते।।
ऐसा श्रेष्ठ महाफल पाने, शुभम् सरस फल लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक द्रव्य मिलाकर, उत्तम अर्घ्य बनाये।
हर्ष भाव मन में उपजाकर, पूजा करने आए।।
निज शाश्वत् चेतन गुण पाने, अर्घ्य चढ़ाने लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– तीन लोक के नाथ तुम, त्रिभुवन के गुरु आप।
त्रय धारा देते चरण, मिटे सकल संताप।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– महामंत्र हो तुम प्रभो, महामंत्र तव नाम।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करके चरण प्रणाम।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– सकल सिद्ध परमात्मा, अमल विमल चिद्रूप।
जयमाला गाते विशद, पाने शुद्ध स्वरूप।।

(भुजंग प्रयात)

रहा द्वीप अष्टम सुनंदीश्वर भाई, दक्षिण दिशा में शुभ अंजन गिरि गाई।
ढोल सम गोल जो श्याम रंग सोहे, अन्य प्राणियों के जो मन को भी मोहे।।
योजन चौरासी सहस है ऊँचाई, चारों तरफ से जो उन्नत है भाई।
चारों दिशाओं में वापिकाएँ गाईं, वर्गाकृति लाख योजन बताईं।।
जल से भरी सहस योजन गहराई, वापी के जल ने अति निर्मलता पाई।
अञ्जन गिरि पे जिन मन्दिर बताया, शोभा का जिसकी ना पार कहीं पाया।।
जिन मंदिर सौ योजन लम्बे कहाए, योजन पचहत्तर जो ऊँचे दिखाए।

विस्तृत पचास योजन जानो हे भाई, आगम में ऐसी महिमा बताई।।
जिनगृह को तीन कोट वेढ़े बताए, चउदिश में गोपर शुभ द्वारे बताए।
वीथी में मानस्तम्भ है श्रेष्ठ भाई, मान गलित करने में होते सहाई।।
प्रति वीथी में नव–नव स्तूप जानो, वन भूमि अन्तराल में श्रेष्ठ मानो।
पर कोट द्वितिय के अन्तराल गाए, दश प्रकार की ध्वजाएँ जहाँ फहराएँ।।
चैत्य भूमि परकोट तृतिय के गाई, अतिशायी शोभा शुभ जिसकी बताई।
चैत्य वृक्ष और सिद्धार्थ वृक्ष सोहें, जिनबिम्बों युक्त वृक्ष सबके मन मोहें।।
मंदिर के मध्य श्रेष्ठ गर्भगृह बताए, जिनबिम्ब एक सौ आठ श्रेष्ठ गाए।
गर्भगृह में सिंहासन शोभ रहे भाई, जिन पे जिनबिम्ब दिखें अति सौख्यदायी।।
जिनबिम्ब पद्मासन में श्रेष्ठ गाए, धनुष पाँच सौ प्रभु ऊँचे बताए।
यक्ष युगल बत्तीस दोनों किनारे, धवल चँवर ढौरते भक्ति के सहारे।।
जिनबिम्ब के पास श्रीदेवी गाई, श्रुतदेवी दूसरी ओर बनी भाई।
सनतकुमार सर्वाण्ह यक्ष भी दिखाए, वीतराग धर्म की जो महिमा बताए।।
अष्ट मंगल द्रव्य श्रेष्ठ पास रखे भाई, स्वर्ण कलश में धूप की सुगन्ध पाई।
मुखप्रेक्षा वन्दन अभिषेक मण्डपादी, क्रीड़ा संगीत गुणन चित्रगृह अनादी।।
गणधर भी रचना को पूर्ण न कर पावें, जिनवाणी माँ असमर्थ हो जावें।
जिनमंदिर जिनबिम्बों की महिमा भारी, चरणों में उनके 'विशद' वन्दना हमारी।।

दोहा– जय त्रिभुवन के जिन भवन, जिन प्रतिमा अविकार।
श्री जिनेन्द्र पादाब्ज में, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्वदधि मुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-15

(स्थापना)

नंदीश्वर के दक्षिण में शुभ, अञ्जन गिरि है अतिशयकार।
जिसकी पूर्व दिशा में दधिमुख, वापी मध्य है अपरम्पार।।
दश हजार योजन ऊँचा है, श्वेत वर्ण का दधि समान।
जिस पर जिनगृह प्रतिमाओं का, करते हैं उर में आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(भुजंग प्रयात)

धवल क्षीर सागर के जैसा ये जल है, भक्ती में मल साफ करने का बल है।
चेतन की शुद्धी को जल ये चढ़ाएँ, लगे रोग जन्मादि को हम नशाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता चिता सम है, भव ताप लाए, जीवों को चारों गती में भ्रमाए।
आतम की शुद्धी को, चंदन घिसाए, हे नाथ अवशेष भवताप जाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वलता है श्रेष्ठ अक्षत में भारी, अस्थिर ये जीवन अथिर दुनियादारी।
अक्षय ये अक्षत चढ़ाने को लाए, अक्षय सुपद प्राप्त करने हम आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रोगी तन बूढ़ा हो इच्छाएँ भारी, इच्छाएँ हो शांत करना तैयारी।
पुष्पों की माला बनाकर के लाए, भोगों की बाधा नशाने को आए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खाने को व्यंजन जिह्वा श्रेष्ठ चाहे, नहीं प्राप्त होने पर मन को ये दाहे।
क्षुधा रोग हो नाश चरु हम चढ़ाते, चरणों में हे नाथ माथा झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया जहाँ में करम का अँधेरा, विशद ज्ञान का होवे अब तो सबेरा।
ये दीपक जलाकर तिमिर को नशाएँ, लगा मोह का अंध उसको हटाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अब करके सुतप कर्म सारे जलाएँ, नहीं पद जो पाया सुपद श्रेष्ठ पाएँ।
करम नाश हों धूप अग्नी में जारें, अब मुक्ति की मंजिल को हम भी सम्हारे।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल हमने सब ऋतु के खाकर नशाए, मुक्ती सुफल लेकिन अब तक न पाए।
शाश्वत् फल शिवपद हम पाने को आए, प्रभु आपके चरणों माथा झुकाये।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन में प्रभु है तुम्हारा बसेरा, भक्ती से हो प्रभु जी जीवन बसेरा।
निष्फल निरापद प्रभु होने हम आए, वसुद्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने को लाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- धारा देते आपके, चरणों में त्रय बार।
विशद शांति सौभाग्य हो, होवे सौख्य अपार।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– कमल चमेली मोंगरा, सुरभित हर सिंगार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने शिव आधार।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नन्दीश्वर दक्षिण दिशा, दधिमुख रहे विशाल।
जिस पर जिनगृह की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(पद्धड़ी छंद)

यह द्वीप आठवाँ है महान्, जिसकी दक्षिण दिश में प्रधान।
जहाँ अञ्जन पर्वत है उत्तङ्ग, है मध्य ढोल सम श्याम रंग।।
जिसकी पूरब दिश शोभमान, दधिमुख वापी के बीच जान।
योजन सहस्र दश हैं उत्तुंग, जो दधि वर्ण सम धवल रंग।।
जिनगृह उसके ऊपर महान्, सौ योजन लम्बे हैं प्रधान।
चौड़ाई योजन है पचास, ऊपर पचहत्तर रहे खास।।
शुभ बनी श्रेष्ठ रचना अनूप, जो समवशरण शोभा स्वरूप।
जहाँ रहे गर्भगृह शोभमान, जिनबिम्ब एक सौ आठ जान।।
पद्मासन में जिनबिम्ब भाय, पद सेव करें सुर शीश नाय।
शत इन्द्र पूजते चरण आय, बहु भक्ति सहित जिन सुगुण गाय।।
निज जन्म सफल करते सुदेव, जिनचरण करें अर्चा सदैव।
जो प्राणी जग में पुण्यवान, जिन दर्शन पाते वह महान्।।
तुम धन्य हुए जग में विशेष, छवि निरख तृप्त ना हों सुरेश।
कर सहस नेत्र सौधर्म ईश, दर्शन करता है झुका शीश।।
स्तुति करता है बार-बार, जिन गुण गाता है जिह्वा द्वार।
जो भक्ति भाव से कर प्रणाम, जिनवर का मुख से जपे नाम।।
वह अनुपम सुख पावे अपार, वह भी कर लेवे विभव पार।
जिनवर की छवि है निर्विकार, हैं भविजन के जो हृदय हार।।

शिवदायक हैं जग में विशेष, अतएव कहाते हैं जिनेश।
ज्यों चिंतामणि सुर वृक्ष जान, निर्जीव कहाए जो प्रधान।।
फिर भी इच्छित फल देनहार, इस जग में है आनन्द सार।
त्यों सुखदायक जिनबिम्ब जान, ऐसा गाते आगम पुराण।।
शुभ दिव्य देशना में जिनेश, वर्णन यह कीन्हें हैं विशेष।
जिन दर्शन करते हैं तब ऋशीष, वह झुका रहे जिन चरण शीश।।
तव पद हम पूजें बार-बार, संसार जलधि से करो पार।
प्रभु चरणाम्बुज की श्रेष्ठ सेव, भव्यों को सुखकर है स्वमेव।।
भक्ती की शक्ती है अनूप, जो प्रकट कराए निज स्वरूप।
हे जिनदेवों के देव आप, तव अर्चा से हो नाश पाप।।
हे जगतीपति करुणा निधान, अब करो भक्त को निज समान।
हो तीन लोक के आप ईश, हम झुका रहे पद 'विशद' शीश।।

दोहा– अरज सुनो प्रभु भक्त की, दीन बन्धु महाराज।
भवदधि पार उतार दो, तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-16

स्थापना

नन्दीश्वर दक्षिण अञ्जन गिरि, जिसके दक्षिण में शुभकार।
वापी बीच है दधिमुख अनुपम, जिस पर हैं मन्दिर मनहार।।
अकृत्रिम उत्कृष्ट प्रमाणिक रहे, जिनालय जिन भगवान्।
जिनकी पूजा करने को हम, हृदय में करते हैं आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

ताटंक छंद (तर्ज-समुच्चय पूजन)

काल अनादी से हे भगवन्, शुचिता जल से मान रहे।
सम्यक् रत्नत्रय निधि को हम, स्वयं नहीं पहिचान रहे।।
अब रत्नत्रय निधि पाने को, यह निर्मल जल भर के लाए।
हम दधिमुख के जिनगृह में, जिनकी पूजा करने को आए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव आताप मिटाने की, चेतन में अनुपम क्षमता है।
अनजाने अब तक मन मेरा, झूठे वैभव में रमता है।।
अब शीतलता पाने अनुपम, यह चंदन घिसकर के लाए।
हम दधिमुख के जिनगृह में, जिनकी पूजा करने को आए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम लख चौरासी योनी में, अक्षय पद के बिन भटकाए।
रम गये उसी में जो हमने, चारों गतियों में पद पाए।।

अब अक्षय निधि अनुपम पाने, यह अक्षत धोकर के लाए।
हम दधिमुख के जिनगृह में, जिनकी पूजा करने को आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों में रमने से, निज शील स्वभाव नशाया है।
प्रभु कामबाण से विद्ध हुए हम, निज गुण न प्रगटाया है।।
अब कामबाण विध्वंस हेतु, यह पुष्प चढ़ाने को लाए।
हम दधिमुख के जिनगृह में, जिनकी पूजा करने को आए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस से मिश्रित भोजन कर, हम क्षुधा शांत न कर पाए।
इन्द्रिय विषयों के दास बने, मधुकर सम जग में भटकाए।।
अब पूर्ण नशाने क्षुधा रोग, नैवेद्य बनाकर के लाए।
हम दधिमुख के जिनगृह में, जिनकी पूजा करने को आए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह दीप जलाकर के हमने, कीन्हा है जग में उजियारा।
घृत बाती के जल जाने पर, हो जाता फिर से अँधियारा।।
अब ज्ञान दीप प्रगटाने को, यह दीप जलाकर के लाए।
हम दधिमुख के जिनगृह में, जिनकी पूजा करने को आए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म जलाने को हरदम, यह धूप अनल में खेते हैं।
रागादि विकारों के द्वारा, फिर कर्म बन्ध कर लेते हैं।।
अब चेतन शक्ति जगाने को, यह धूप जलाने को लाए।
हम दधिमुख के जिनगृह में, जिनकी पूजा करने को आए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सरस मनोहर फल उत्तम, हे नाथ चढ़ाने लाए हैं।
जो फल पाया है प्रभु तुमने, वह पाने हम ललचाए हैं।।
अब पाने मोक्ष महाफल शुभ, यह श्रेष्ठ श्रीफल हम लाए।
हम दधिमुख के जिनगृह में, जिनकी पूजा करने को आए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्यों का सम्मिश्रण कर, यह पावन अर्घ्य बनाया है।
पाने अनर्घ पद हम आये, जो नहीं प्राप्त कर पाया है।।
यह अर्घ्य समर्पित करते हैं, निज गुण प्रगटाने को आए।
हम दधिमुख के जिनगृह में, जिनकी पूजा करने को आए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धारा देते आपके, चरणों में त्रय बार।
विशद शांति सौभाग्य हो, होवे सौख्य अपार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– कमल चमेली मोगरा, सुरभित हर सिंगार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने शिव आधार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– दर्शन हम कैसे करें, नंदीश्वर है दूर।
जयमाला गाते यहाँ, पाने सुख भरपूर।।

(भुजंग प्रयात)

शुभम् द्वीप नंदीश्वर अष्टम कहाए, अञ्जन गिरि दक्षिण में शोभा बढ़ाए।
वापी के बीच में दधिमुख बताया, शाश्वत् अकृत्रिम जो आगम में गाया।।
जिन मंदिर अकृत्रिम जिस पर बने हैं, चारों दिशाओं में वन कई घने हैं।
जिनबिम्ब जिनमें हैं अनुपम निराले, लाल मुख नख भौंह केश रहे काले।।

नंदीश्वर द्वीप में ना मानव जा पावें, भाव सहित पूजा यहाँ से रचावें।
प्रभु तेरी महिमा है जग से निराली, फूल आप बगिया के आप ही हो माली।।
मिथ्या तज सम्यक् मणि आप देने वाले, वीतरागी देव रहे जौहरी निराले।
तीर्थभूत आप कहे इस जग में स्वामी, चरणों में तीर्थ सभी आपके हैं नामी।।
कल्पवृक्ष आप देव जग में कहाए, इच्छित फल चरणों में जीव सभी पाए।
अशुभ भाव त्याग शुभ पाने हम आए, शुद्ध ध्यान पाने के भाव शुभ बनाए।।
भगवन्त आप सभी भक्तों के गाए, अतएव भक्ती हम करने को आए।
सेतू हो अनुपम प्रभु, जग में निराले, तुम्हीं भव्य जीवों को शिव देने वाले।।
विनती सुनो हे प्रभू तुम हमारी, कहाए प्रभू आप धर्माधिकारी।
तुम्हीं देव जग में महानन्दकर्त्ता,तुम्हीं जिन कहाए हो महा मोहहर्त्ता।।
कहाए प्रभू आप चिद्रूप धारी, नहीं पार पाए कोई महिमा तुम्हारी।
बने आप जगती पर सबके सहाई, तुम्हीं तात माता–पिता ज्येष्ठ भाई।।
प्रभू आप जग में सभी के हो त्राता, अयाचीक सम्पत्ति के आप दाता।
महा संकटों में बनो तुम सहाई, हुए धन्य पाके हम प्रभु सेवकाई।।
दिए कर्म ने नाथ हमें दुःख भारी, दुःखों से हो मुक्ती बनें हम पुजारी।
प्रभू दास की आप विनती सुनीजे, शरण में पुजारी को अपने रख लीजे।।
चरणों पड़ी नाथ अर्जी हमारी, हमने लगाई प्रभु आशा तुम्हारी।
करो पूर्ण आशा हे जगत के विधाता, भवि जीवों के नाथ आप ही हो त्राता।।

दोहा– निधि पति निजनिधि दीजिए, बनिए आप सहाय।
विशद आश पूरी करो, हे त्रिभुवन पति राय।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-17

(स्थापना)

नंदीश्वर दक्षिण अञ्जन गिरि, की है पश्चिम दिशा प्रधान।
वापी में दधि सम है दधिमुख, गोलाकार है ढोल समान।।
अकृत्रिम जिन मन्दिर जिस पर, जिनमें राजित रहे जिनेश।
करते हैं आह्वानन् हम भी, श्री जिनेन्द्र का यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

हम तो अनादि से जल पीकर, यह तृषा शांत न कर पाए।
है अमल आत्मा निश्चय से, न मिथ्यामल को हर पाए।।
हम भाव बनाकर पूजा के, जिन चरण शरण में आये हैं।
जिनपद हैं पूज्य जगत में इस, उस पद के भाव बनाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलता निज की निज में है, उसको हम खोज न पाए हैं।
है चन्द्र समान सुनिर्मलता, हम स्वयं जगा ना पाए हैं।।
हम भाव बनाकर पूजा के, जिन चरण शरण में आये हैं।
जिनपद हैं पूज्य जगत में इस, उस पद के भाव बनाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्ड मेरा स्वरूप, ना उसको कभी निहारा है।
पर परिणति में ही भटके हैं, न पाया कोई सहारा है।।
हम भाव बनाकर पूजा के, जिन चरण शरण में आये हैं।
जिनपद हैं पूज्य जगत में इस, उस पद के भाव बनाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पित पुष्पों की गंध 'विशद', पाने मन मधुकर ललचाए।
शाश्वत् निज आत्म अमल सुरभि, निज गुण अनुभूती को आए।।
हम भाव बनाकर पूजा के, जिन चरण शरण में आये हैं।
जिनपद हैं पूज्य जगत में इस, उस पद के भाव बनाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन की तृष्णा में, निज रस व्यंजन न चख पाए।
ना ज्ञानामृत का पान किया, निज की परिणति न लख पाए।।
हम भाव बनाकर पूजा के, जिन चरण शरण में आये हैं।
जिनपद हैं पूज्य जगत में इस, उस पद के भाव बनाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना दीपक प्रज्ज्वलित किए, किन्तू वह काम नहीं आए।
मिथ्यातम मोह विनाश हेतु, यह घृत का दीप जला लाए।।
हम भाव बनाकर पूजा के, जिन चरण शरण में आये हैं।
जिनपद हैं पूज्य जगत में इस, उस पद के भाव बनाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

रागादिक मोह विकारों का, हम नाश नहीं कर पाए हैं।
अब धूप अनल में खेकर के, निज गुण प्रगटाने आए हैं।।
हम भाव बनाकर पूजा के, जिन चरण शरण में आये हैं।
जिनपद हैं पूज्य जगत में इस, उस पद के भाव बनाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने बगिया के उत्तम फल, प्रभु जन्म-जन्म से खाए हैं।
शिवफल हम प्राप्त न कर पाए, विष फल कर्मों के पाए हैं।।
हम भाव बनाकर पूजा के, जिन चरण शरण में आये हैं।
जिनपद हैं पूज्य जगत में इस, उस पद के भाव बनाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषयों की मृगतृष्णा में, प्रभु व्यस्त निरन्तर रहते हैं।
अतएव स्वपद को भूल रहे, घन घातकर्म का सहते हैं।।
निज गुण हम प्राप्त करें शाश्वत्, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
जिनपद हैं पूज्य जगत में इस, उस पद के भाव बनाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धारा देते आपके, चरणों में त्रय बार।
विशद शांति सौभाग्य हो, होवे सौख्य अपार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– कमल चमेली मोंगरा, सुरभित हर सिंगार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने शिव आधार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– पूजा करते देवगण, नन्दीश्वर जिन धाम।
जयमाला गाते शुभम्, करके विशद प्रणाम।।

(शम्भू छंद)

होकर निश्छल अनुराग सहित, हम पूजा करने आये हैं।
सौभाग्य सुयश जागे मेरा, भव बन्धन हरने आये हैं।।
जिनवर तरु की छाया शीतल, हम कर्मों से संतापित है।
यह सुमन लिए शुभ भावों के, तन–मन मम जीवन अर्पित है।।
नन्दीश्वर अष्टम दीप कहा, जिसकी दक्षिण दिश शुभकारी।
है मध्य में अञ्जन गिरि श्रेष्ठ, हैं चार वापिकाएँ न्यारी।।
है मध्य वापिका के दधिमुख, हैं मंगलमय मंगलकारी।
जिसके ऊपर जिन मन्दिर हैं, शुभ स्वर्ण रत्नमय मनहारी।।
जब पर्व अढ़ाई आता है, तव देव चरण में आते हैं।
वह भाव सहित वन्दन करते, पूजा कर वाद्य बजाते हैं।।
शुभ चारों ओर रहा जंगल, जंगल में मंगल देव करें।
फल फूलों से तरु झुके हुए, जो आश सभी की पूर्ण करें।।
नंदीश्वर द्वीप की शुभ रचना, हमने आगम से जानी है।
ना मनुज वहाँ जा सकते हैं, यह बात सभी ने मानी है।।

नंदीश्वर दीप की महिमा शुभ, आकर के देव बताते हैं।
कृत्रिम रचना करके मानव, शुभ पूजा पाठ रचाते हैं।।
जिनबिम्ब रत्नमय मंदिर में, शुभ एक सौ आठ बताये हैं।
अकृत्रिम शाश्वत् हैं अनुपम, जिनवर वाणी से पाए हैं।।
प्रतिमाएँ पंच शतक ऊँची, पद्मासन में शोभा पाएँ।
मुस्कान लिए प्रतिमा के मुख, लखकर के प्राणी हर्षाएँ।।
हो उदय करोड़ों सूर्यों का, उनसे भी प्रतिमा तेजवान।
यदि चंद्र करोड़ों निकल जाएँ, तो भी शीतल हैं शीलवान।।
लगता तीर्थंकर बैठे हैं, उपदेश अभी हमको देंगे।
शुभ दिव्य देशना देकर के, सब दोष हमारे हर लेंगे।।
दर्शन कर सम्यक् दर्श जगे, यह जिनवर की शुभ महिमा है।
सद् ज्ञानावरण प्राप्त होता, यह जिनबिम्बों की गरिमा है।।
इच्छा करते हैं हे भगवन्, हम भी नंदीश्वर जाएँगे।
जब पुण्य उदय आयेगा तो, हम भी प्रभु दर्शन पाएँगे।।
तव चरण धूलि को हे स्वामी, अपने हम शीश चढ़ाएँगे।
पूजा भक्ती अर्चा करके, अपने सौभाग्य जगाएँगे।।
यह 'विशद' भावना भाते हैं, कब पुण्य ये अवसर आयेगा।
जब रत्नत्रय पाकर मेरा, निज 'विशद' ज्ञान जग जायेगा।।

दोहा– दधिमुख के जिनबिम्ब को, करते विशद प्रणाम।
हमको भी अब शीघ्र ही, मिले मोक्ष का धाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-18

(स्थापना)

नन्दीश्वर के दक्षिण दिश में, अञ्जन गिरि गाई।
वीतशोका वापी उत्तर में, दधिमुख है भाई।।
अकृत्रिम जिनचैत्य चैत्यालय, रत्नमयी गाये।
आह्वानन् करते परोक्ष हम, वन्दन को आए।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

हम भेदज्ञान की सरिता में, अवगाहन करने आए हैं।
निज गुण का अनुभव करने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।
शुभ दधिमुख गिरि पर नन्दीश्वर में, जिनगृह गाये मंगलकार।
हम परोक्ष ही वन्दन करते, जिन चरणों में बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम अनुभव के चंदन से, सुरभित निज को करने आए।
आसक्ति विभाव नशाने को, चन्दन यह घिसकर के लाए।।
शुभ दधिमुख गिरि पर नन्दीश्वर में, जिनगृह गाये मंगलकार।
हम परोक्ष ही वन्दन करते, जिन चरणों में बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत् अखण्ड निज का स्वरूप, उसको प्रगटाने आए हैं।
गुण द्रव्य प्राप्त अक्षय करने, यह अक्षय अक्षत लाए हैं।।

शुभ दधिमुख गिरि पर नन्दीश्वर में, जिनगृह गाये मंगलकार।
हम परोक्ष ही वन्दन करते, जिन चरणों में बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अनुभव की धवल वाटिका में, सुरभित गुण पुष्प न महकाए।
अतएव लोक में भटके हैं, अब पुष्प चढ़ाने को लाए।।
शुभ दधिमुख गिरि पर नन्दीश्वर में, जिनगृह गाये मंगलकार।
हम परोक्ष ही वन्दन करते, जिन चरणों में बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण स्वानुभूति रस के व्यंजन, हम आज बनाकर लाए हैं।
नीरस रसना के हुए सरस, अब क्षुधा मिटाने आए हैं।।
शुभ दधिमुख गिरि पर नन्दीश्वर, में, जिनगृह गाये मंगलकार।
हम परोक्ष ही वन्दन करते, जिन चरणों में बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब दिव्य ज्ञान की ज्योति जले, यह दीप जलाकर लाए हैं।
धूमिल हो रही है ज्ञान ज्योति, अब मोह नशाने आए हैं।।
शुभ दधिमुख गिरि पर नन्दीश्वर में, जिनगृह गाये मंगलकार।
हम परोक्ष ही वन्दन करते, जिन चरणों में बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से मुक्त अमल चेतन, निज गुण प्रगटाने आए हैं।
रागादिक मोह विकार जलें, यह धूप जलाने लाए हैं।।
शुभ दधिमुख गिरि पर नन्दीश्वर में, जिनगृह गाये मंगलकार।
हम परोक्ष ही वन्दन करते, जिन चरणों में बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान ध्यान का फल उत्तम, जो मुक्ती फल को दिलवाए।
बनने को शिवपुर का स्वामी, फल यहाँ चढ़ाने को लाए।।
शुभ दधिमुख गिरि पर नन्दीश्वर में, जिनगृह गाये मंगलकार।
हम परोक्ष ही वन्दन करते, जिन चरणों में बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुभव गुण का यह अर्घ्य विशद, निश्चय निज गुण में पहुँचाए।
प्रगटाने सुगुण स्वयं अपने, शुभ अर्घ्य बनाकर हम लाए।।
शुभ दधिमुख गिरि पर नन्दीश्वर में, जिनगृह गाये मंगलकार।
हम परोक्ष ही वन्दन करते, जिन चरणों में बारम्बार।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धारा देते आपके, चरणों में त्रय बार।
विशद शांति सौभाग्य हो, होवे सौख्य अपार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– कमल चमेली मोगरा, सुरभित हर सिंगार।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने शिव आधार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– चैत्यालय जिनदेव के, अनुपम रहे विशाल।
कृत्रिमाकृत्रिम दोय की, कहते हैं जयमाल।।

(छंद–पद्धरी)

जय–जय जिन चैत्यालय महान्, जय कृत्रिमाकृत्रिम सुभग जान।
जय तीन लोक में सुखद सार, उनको मैं वंदूँ बार–बार।।
जय बने शिखर ऊँचे विशाल, जो पूज्य रहे हैं तीन काल।
जय महिमाशाली हैं अपार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।
जय स्वर्ण कलश हैं शोभमान, शुभ चैत्यालय की रही शान ।
जय उड़ें ध्वजाएँ शिखर सार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।
जय स्वर्ण रत्नमय हैं महान्, जय शास्वत अकृत्रिम के सुजान ।
जिन चैत्यालय हैं कई प्रकार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।

जय बने अनादिकाल माँहि, अकृत्रिम चैत्यालय कहांहि ।
कई पुरुष किए रचना सुसार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।
जय घंटा तोरण आदि युक्त, जिन चैत्यालय हैं दोष मुक्त ।
भवि स्तुति गावें बार–बार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।
जय वाद्य यंत्र शोभित महान्, जय धूप घटों से शोभमान ।
कई उत्सव होवें धर्म सार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।
जो परकोटा से रहे युक्त, कई द्वार झरोखे से संयुक्त ।
तिनकी शोभा का नहीं पार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।
जहँ वन्दन करने पथिक आँय, जिनधर्म क्रिया में सौख्य पाँय ।
हम नमें जिनालय शक्तिधार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।
हम पूज रहे मन, वचन, काय, अपने अंतर में शक्ति पाय ।
अब छूट जाए सारा अगार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।
जिन चैत्यालय भी देव एक, उसमें जिन प्रतिमाएँ हैं अनेक ।
सब भक्त करें भक्ती अपार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।
जो श्री जिनेन्द्र के हैं आलय, वह कहलाते हैं चैत्यालय ।
हम चैत्यालय के खड़े द्वार, उनको मैं वंदूँ बार–बार ।।

(छंद–घत्तानन्द)

जय जिन चैत्यालय, जिन के आलय, कृत्रिमाकृत्रिम दोय कहे।
जय मंगलकारी, जग उपकारी, सबके मन को मोह रहे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्वदिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-19

(स्थापना)

नंदीश्वर के दक्षिण में शुभ, अञ्जन गिरि है अतिशयकार।
जिसकी पूर्व दिशा में दधिमुख, वापी मध्य है अपरम्पार।।
दश हजार योजन ऊँचा है, श्वेत वर्ण का दधि समान।
जिस पर जिनगृह प्रतिमाओं का, करते हैं उर में आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

भव सिन्धू में हम भटक रहे, मृगतृष्णा शांत न हो पाई।
निज के स्वभाव को भूल रहे, चेतन की याद नहीं आई।।
जिनराज चरण की अर्चा से, सारे संकट कट जाते हैं।
अतएव चरण में आज यहाँ, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शीतल गुण के कोष रहे, पर भवाताप ने घेरा है।
भ्रमण किया भव सिन्धु में, न मिटा भ्रमण का फेरा है।।
जिनराज चरण की अर्चा से, सारे संकट कट जाते हैं।
अतएव चरण में आज यहाँ, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्ड पदधारी हम, होकर भी जग भटकाते हैं।
उस पद पाने को चरणों में, हम अक्षय नाथ चढ़ाते हैं।।
जिनराज चरण की अर्चा से, सारे संकट कट जाते हैं।
अतएव चरण में आज यहाँ, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की सुगन्धी मात करे, ऐसे गुण के हम कोष रहे।
पर काम व्यथा से घायल हो, कर्मों के हम घन घात सहे।।
जिनराज चरण की अर्चा से, सारे संकट कट जाते हैं।
अतएव चरण में आज यहाँ, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य यहाँ पर दिव्य प्रभू, हम श्रेष्ठ चढ़ाने को लाए।
हम क्षुधा रोग से व्याकुल हैं, वह रोग नशाने को आए।।
जिनराज चरण की अर्चा से, सारे संकट कट जाते हैं।
अतएव चरण में आज यहाँ, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह महातम को तजकर, श्रद्धान जगाने आए हैं।
निज गुण का अनुभव करने प्रभु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
जिनराज चरण की अर्चा से, सारे संकट कट जाते हैं।
अतएव चरण में आज यहाँ, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ति न जानी है, अज्ञानी हो कई दुख पाये।
अब निज गुण शक्ती प्रगटाने, यह धूप जलाने को आए।।
जिनराज चरण की अर्चा से, सारे संकट कट जाते हैं।
अतएव चरण में आज यहाँ, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पुण्य सुफल पाने आये, न मोक्ष महाफल पाए हैं।
अब शाश्वत् निजफल पाने को, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
जिनराज चरण की अर्चा से, सारे संकट कट जाते हैं।
अतएव चरण में आज यहाँ, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यहाँ, प्रभु आज चढ़ाने लाए हैं।
है पद अनर्घ्य मेरा शाश्वत्, वह पद प्रगटाने आए हैं।।
जिनराज चरण की अर्चा से, सारे संकट कट जाते हैं।
अतएव चरण में आज यहाँ, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– देते शांतीधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिनपूजा व्रत में विशद, दोष लगें न कोय।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– जिन पूजा के भाव से, कर्मों का क्षय होय।
जन्म–मरण की श्रृंखला, पुष्पाञ्जलि कर खोय।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– रत्नत्रय को प्राप्त कर, पाया केवल ज्ञान।
मुक्ती पथ पर बढ़ चले, किए आत्म कल्याण।।

(नरेन्द्र छंद)

आत्म साधना करने वाले, जिनवर पदवी पाते।
चार घातिया कर्म नाशकर, छियालिस गुण प्रगटाते।।
पुण्य सभी परमाणु तन के, सुन्दर तन मन भाता।
इन्द्राज्ञा से समवशरण शुभ, आके श्रेष्ठ बनाता।।
भूतल से जिन पञ्च सहस्र धनु, नभ में अधर रहे हैं।
रत्नमयी शुभ समवशरण से, भी जिन विरत कहे हैं।।
चार दिशा में मणिमय सीढ़ी, बीस हजार कहीं हैं।
एक–एक शुभ चतुर्दिशा में, वीथी स्वच्छ रहीं हैं।।
औषधि पाद लेप बिन प्राणी, शीघ्र वहाँ चढ़ जाते।
सुर नर पशु भी दिव्य ध्वनि सुन, मन ही मन हर्षाते।।
इन्द्र नीलमणि का आंगन है, कोट रत्नमय गाया।
स्वर्णमयी खम्बों से निर्मित, तोरण द्वार सजाया।।
तीन पीठिका युत परकोटे, शुभ द्वारे पर बनते।
अनन्त चतुष्टयधारी जिन की, महिमा को दर्शाते।।
चार–चार बावड़ियाँ जिसके, चारों ओर बनी हैं।

हर वापी में कुण्ड हैं ब्यालिस, निर्मल नीर भरी हैं।।
पूजन हेतू भक्त पुजारी, आके पद रज धोते।
सम्यक् दर्शन पाने वाले, मिथ्या की रज खोते।।
भ्रमर गूँजते बावड़ियों में, सुन्दर कमल खिले हैं।
मणिमय सीढ़ी से सज्जित हैं, सुर नर आन मिले हैं।।
मानस्तम्भ मान का गालन, करने वाले गाए।
चतुष्कोण है मूल भाग में, ऊपर गोल बताए।।
प्रातिहार्य वसु सज्जित अर्हत्, स्वर्ण मयी प्रतिमाएँ।
क्षीर सिन्धु से जल लाकर के, सुर अभिषेक कराएँ।।
सुर नर पशु के इन्द्र सभी मिल, पूजा शुभ करते हैं।
अविकारी जिन के प्रभाव से, श्रद्धा उर धरते हैं।।
पुण्यवान ही मानस्तम्भ का, दर्शन कर पाते हैं।
भव्य जीव ही समवशरण में, श्रद्धा प्रगटाते हैं।।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, यह महिमा पाते हैं।
फिर भी उससे हो विरक्त जिन, अधर कहे जाते हैं।।
तीर्थंकर के बिम्ब मनोहर, चैत्यालय में सोहें।
वीतराग छवि के द्वारा जो, भव्यों के मन मोहें।।
मोह कर्म से मोहित होकर, हमने दुःख उठाए।
नहीं आपको जान सके हम, भव सागर भटकाए।।
भूतकाल की भूल क्षमाकर, अब शिव राह दिखाओ।
तुमने शिव पद पाया स्वामी, हमको भी दिखलाओ।।

दोहा– भक्ती करते भाव से हे, त्रिभुवनपति ईश।
चरण शरण में हे प्रभु, झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***गीता छंद–* जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।**
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-20

स्थापना (शम्भू छंद)

नंदीश्वर की दक्षिण दिश में, अञ्जन गिरि के पूर्व विशेष।
कोंण में अरजा वापी के शुभ, रतिकर गिरि पर रहे जिनेश।।
अकृत्रिम मणिमय रत्नों युत, वीतराग जिनबिम्ब महान्।
विशद भाव से जिनका करते, आज यहाँ पर हम आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

भर जाएँ तीनों लोक प्रभू, हमने इतना जल पी डाला।
न प्यास बुझी हे नाथ मेरी, चेतन कर्मों से है काला।।
अब चेतन को धोने हेतू प्रभु, नीर चढ़ाने लाए हैं।
हम शाश्वत् जिनगृह जिनवर की, अब पूजा करने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मोह राग का दावानल, सदियों से झुलसाता आया।
किंचित् मन की न दाह मिटी, भव रोग बढ़ाकर दुख पाया।।
भव ताप नशाने हेतु प्रभु, यह चंदन घिसकर लाए हैं।
हम शाश्वत् जिनगृह जिनवर की, अब पूजा करने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षय रहित श्रेष्ठ अक्षय सुख को, पाने का भाव न आया है।
जो मिला हमें पद उसमें ही, जीवन का समय गँवाया है।।
अब अक्षय अक्षत पद पाने, उज्ज्वल अक्षय यह लाए हैं।
हम शाश्वत् जिनगृह जिनवर की, अब पूजा करने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की सुरभि से केवल, यह तृप्त नाशिका होती है।
आतम के गुणमय पुष्पों की, दुर्गन्ध वाटिका खोती है।।
निज के गुण निज में पाने को, यह सुमन संजोकर लाए हैं।
हम शाश्वत् जिनगृह जिनवर की, अब पूजा करने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन शुभ खाने से, इस तन का पोषण होता है।
भक्ती मय व्यंजन श्रेष्ठ सरस, निज क्षुधा रोग को खोता है।।
चेतन की क्षुधा मिटाने हम, नैवेद्य सरस यह लाए हैं।
हम शाश्वत् जिनगृह जिनवर की, अब पूजा करने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दीपक की मालाओं से, प्रभु जग का तिमिर नशाते हैं।
है मोह तिमिर अन्तर्मन में, वह तिमिर मिटा न पाते हैं।।
चेतन के दिव्य प्रकाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम शाश्वत् जिनगृह जिनवर की, अब पूजा करने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित यह धूप द्रव्यमय शुभ, नभ मण्डल को महकाती है।
हे नाथ पाप की ज्वाला में, जो धूप बनी उड़ जाती है।।
कर्मों का धुआँ उड़ाने को, यह धूप जलाने लाए हैं।
हम शाश्वत् जिनगृह जिनवर की, अब पूजा करने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ योग ऋतु आ जाने से, उपवन फल से भर जाते हैं।
फल योग्य ऋतु के जाते ही, वह फल सारे झड़ जाते हैं।।

अब सरस भक्ति का फल पाने, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
हम शाश्वत् जिनगृह जिनवर की, अब पूजा करने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ में आने वाली बाधा, हमको व्याकुल कर जाती है।
किन्तु व्याकुलता इस मन की, कर्मों का बंध कराती है।।
अब पद अनर्घ्य शाश्वत पाने, वह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
हम शाश्वत् जिनगृह जिनवर की, अब पूजा करने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– विशद शांति के भाव से, देते शांतीधार।
भक्त खड़े हैं चरण में, करो प्रभु उपकार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– ज्ञान ध्यान तप साधना, करें कर्म का नाश।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, होवे धर्म प्रकाश।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– स्वामी हमरे आप हो, आप हमारे देव।
आप सहारा दो हमें, राखो शरण सदैव।।

(चौपाई)

अनुपम द्वीप आठवाँ गाया, नन्दीश्वर शुभ नाम बताया।
जिसकी दक्षिण दिश में भाई, नन्दीश्वर दीखे सुखदायी।।
वापी नन्दोत्तरा कहाई, जिसमें दधिमुख सोहें भाई।
बाह्य कोंण जिसका शुभ जानो, रतिकर पर्वत अनुपम मानो।।
एक सहस योजन ऊँचाई, जिसके ऊपर जिनगृह भाई।
सौ योजन जिसकी लम्बाई, योजन पञ्चाशत चौड़ाई।।
पचहत्तर योजन ऊँचाई, समवशरण सोहें सुखदायी।
एक सौ आठ रत्नमय भाई, प्रतिमा पद्मासन सुखदायी।।
प्रति जिनगृह में शोभा पावें, वीतरागता को दर्शावें।

वन वृक्षों से शोभा पावें, सुर नर खग सबके मन भावें।।
हर वृक्षों की झूमें डाली, हवा में होकर के मतवाली।
तरु की डाली फूल खिलावे, फल के भार से झुक–झुक जावे।।
देव यदि क्रीड़ा को आवें, ऋषिगण जिनका ध्यान लगावें।
स्वयंसिद्ध हैं स्वयं गुरु हैं, आप दिगम्बर आप प्रभु हैं।।
आप अहिंसा धर्म सिखाते, रत्नत्रय का पाठ पढ़ाते।
आप स्वयं तीर्थंकर लगते, भाग्य भव्य जीवों के जगते।।
होंट लाल नख केश हैं काले, भौं काली हैं रूप निराले।
अस्त्र शस्त्र या वस्त्र नहीं हैं, राग जरा भी नहीं कहीं हैं।।
ऐसे प्रभु पद नमस्कार है, आत्म ध्यान ही चमत्कार है।
नयनों में प्रभुवर आ जाओ, हृदय कमल पर शोभा पाओ।।
भावों में मेरे बस जाओ, हमें छोड़कर कहीं ना जाओ।
हरपल आपकी महिमा गाएँ, जग में और नहीं भटकाएँ।।
अष्टम द्वीप में हम भी जावें, अष्ट द्रव्य पूजा को पावें।
अपने आठों कर्म नशाएँ, आठ सिद्ध के गुण प्रगटाएँ।।
इतनी शक्ती हम पा जाएँ, तव चरणों में जगह बनाएँ।
यही भावना अन्तिम भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

दोहा– भजन आपका नित करें, करें आपका ध्यान।
जब तक मुक्ति न मिले, करें विशद गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-21

(स्थापना)

नंदीश्वर के दक्षिण दिश में, विरजा वापी रही महान्।
जिसके कोने में रतिकर गिरि, कनक वर्ण सम आभावान।।
जिसके ऊपर अकृत्रिम शुभ, चैत्यालय हैं मंगलकार।
आह्वानन उनके जिनबिम्बों, का हम करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

प्रभु जल से हम पूजा करें, अपनी शरण में लीजिए।
करुणा की धारा से प्रभू, भावों की शुद्धी कीजिए।।
भव अन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए हैं।
निज गुण प्रगट करने विशद, यह नीर अनुपम लाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित लिया चंदन प्रभु, मन शुद्ध मेरा कीजिए।
है पंक सम जीवन मेरा, पंकज इसे कर दीजिए।।
भव अन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए हैं।
निज गुण प्रगट करने विशद, यह सरस चंदन लाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे धर्म के राही चरण में, श्रेष्ठ अक्षत लाए हैं।
अक्षयपुरी में तुम गये प्रभु, हम भी पाने आए हैं।।

भव अन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए हैं।
निज गुण प्रगट करने विशद, यह धवल अक्षत लाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प लेकर नाथ पद में, कर रहे अर्चा अभी।
मन काम से पीड़ित हुआ, अवगुण यही करता सभी।।
भव अन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए हैं।
निज गुण प्रगट करने विशद, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम श्रेष्ठ व्यंजन से प्रभू, पूजा यहाँ पर कर रहे।
हो क्षुधा बाधा नाश मेरी, कष्ट जिससे कई सहे।।
भव अन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए हैं।
निज गुण प्रगट करने विशद, यह नैवेद्य अनुपम चढ़ाने लाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने सवेरे खो दिए, पर मोह का तम न गया।
दीपक जलाते नाथ चरणों, अब सवेरा हो नया।।
भव अन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए हैं।
निज गुण प्रगट करने विशद, यह दीप घृत का लाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप अग्नी में जलाते, नाश हो भव ताप का।
अब शीघ्र हो जाए विलय, प्रभु कर्म के अभिशाप का।।
भव अन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए हैं।
निज गुण प्रगट करने विशद, यह धूप खेने लाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा रचाते श्रेष्ठ फल से, मोक्ष फल अब प्राप्त हो।
मन की गती रुक जाए मेरी, भोग में न व्याप्त हो।।
भव अन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए हैं।
निज गुण प्रगट करने विशद, यह फल सरस हम लाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अर्घ्य से पूजा रचाते, तव चरण के पास में।
यह मन रमें न प्रभू मेरा, भव सुखों की आश में।।
भव अन्त करने के लिए, प्रभु शरण में हम आए हैं।
निज गुण प्रगट करने विशद, यह अर्घ्य अनुपम लाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– देते शांतीधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिनपूजा व्रत में विशद, दोष लगें न कोय।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– जिन पूजा के भाव से, कर्मों का क्षय होय।
जन्म–मरण की श्रृंखला, पुष्पाञ्जलि कर खोय।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– जिनशासन के भानु तुम, जिनशासन के दीप।
जयमाला गाने यहाँ, आए चरण समीप।।

भुजंग प्रयात् (तर्ज : नशे घातिया...)

नंदीश्वर द्वीप में रतिकर बने हैं, जिसके चतुर्दिक में जंगल घने हैं।
जिनधाम जिनमें शुभ शाश्वत् बताए, रत्नों से सज्जित कान्ती जो पाए।।
जिनबिम्ब जिनमें रहे सौख्यकारी, मुद्रा है जिनकी वीतराग धारी।
जिनदेव के पद में वन्दन हमारा, दिखाओ प्रभू अब हमें भव किनारा।।

विशद आप हैं गुण के कोष स्वामी, भरे दोष मुझ में रहा मैं अकामी।
प्रभु शुद्ध निश्चय से शूद्ध रूप हैं हम, विशद कर्म से सिद्ध स्वरूप हैं हम।।
कर्मों ने हमको तथापि सताया, महा मोहतम ने जगत में भ्रमाया।
प्रभु आप सुखमय परमात्मा हो, नित्य निरंजन ध्रुव आत्मा हो।।
हुए धन्य पाके तुम्हें आज स्वामी, बनेंगे प्रभू हम भी मोक्षगामी।
कहें नाथ महिमा कहाँ तक तुम्हारी, शक्ती ना मुझमें बनूँ मैं पुजारी।।
वीतराग सर्वज्ञ देव तुम हमारे, चरण वन्दना को खड़े हम तुम्हारे।
प्रभू आपने ज्ञान ज्योती जलाई, अतः आपने शिव की शुभम् राह पाई।।
प्रथम आपने मिथ्यातम नशाया, सम्यक्त्व श्रद्धान और ज्ञान पाया।
सम्यक्त्व के दोष पच्चीस नाशे, निःशंक आदिक सुगुण भी प्रकाशे।।
सम्यक्त्व सहित प्रभू चारित्र पाया, शुद्धोपयोगी शुभ जीवन बनाया।
किया यत्न भारी पुरुषार्थ स्वामी, श्रेणी चढ़े नाथ हो मुक्तिगामी।।
गुणस्थान दशवें में मोह को नशाया, बने क्षीण मोही रूप निर्ग्रन्थ पाया।
चउ घाति नाशे अर्हन्त पद पाए, केवलज्ञान प्रभु जी अनुपम जगाए।।
प्रभू ऐसी शक्ति हम भी पा जाएँ, संयम के साथ में समाधि को पाएँ।
जिह्वा पर हो नाम प्रभु जी तुम्हारा, तव पद में माथ रहे प्रभु जी हमारा।।
तुम जैसे बन जाएँ वीतराग धारी, स्वीकारिए नाथ भक्ती हमारी।

दोहा– यही आप से प्रार्थना, करो हृदय में वास।
सिद्धशिला पर शीघ्र ही, मेरा होय निवास।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-22

स्थापना (दोहा)

अष्टम द्वीप दिशा दक्षिण में, अञ्जन पर्वत है शुभकार।
दक्षिण में विरजा वापी के, कोंण में रतिकर है मनहार।।
गिरि के ऊपर रत्नमयी शुभ, चैत्यालय हैं अपरम्पार।
जिनबिम्बों का आह्वानन कर, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(भुजंग प्रयात)

देते चरण में प्रभु जल की धारा, नशे रोग जन्मादी भक्ती के द्वारा।
प्रभु के चरण की हम अर्चा को आए, चरणों में नत होके माथा झुकाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन में केसर घिसाकर के लाए, भव ताप उपशांत करने हम आए।
प्रभु के चरण की हम अर्चा को आए, चरणों में नत होके माथा झुकाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल हम अक्षत धुवाकर के लाए, सुपद प्राप्त अक्षय हो जो हम न पाए।
प्रभु के चरण की हम अर्चा को आए, चरणों में नत होके माथा झुकाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों की हमने ये माला बनाई, मिटे काम व्याधी ये मन में समाई।
प्रभु के चरण की हम अर्चा को आए, चरणों में नत होके माथा झुकाए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस श्रेष्ठ व्यंजन ये हमने बनाए, क्षुधा रोग नाशी चरण में चढ़ाए।
प्रभु के चरण की हम अर्चा को आए, चरणों में नत होके माथा झुकाए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर रतन मय ये दीपक जलाए, महा मोहतम को नशाने हम आए।
प्रभु के चरण की हम अर्चा को आए, चरणों में नत होके माथा झुकाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

'विशद' धूप ताजी बनाकर के लाए, कर्मों की सेना भगाने को आए।
प्रभु के चरण की हम अर्चा को आए, चरणों में नत होके माथा झुकाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल यहाँ हमने ताजे मँगाए, महामोक्ष फल हेतु हमने चढ़ाए।
प्रभु के चरण की हम अर्चा को आए, चरणों में नत होके माथा झुकाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य अनुपम बनाए, शाश्वत् सुपद पाने चरणों में आए।
प्रभु के चरण की हम अर्चा को आए, चरणों में नत होके माथा झुकाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देते शांतीधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिनपूजा व्रत में विशद, दोष लगें न कोय।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– जिन पूजा के भाव से, कर्मों का क्षय होय।
जन्म–मरण की श्रृंखला, पुष्पाञ्जलि कर खोय।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– जिनवर पद वन्दन किए, हों बाधाएँ दूर।
जिन गुणमाला गान से, ज्ञान होय भरपूर।।

(चौपाई)

जय–जय सर्वदर्शि जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।
सुर–नर पति तुमरे गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
मोह तिमिर को रवि तुम गाए, मिथ्या दाह को चन्द्र कहाए।
मेघ कषाय को जलधर स्वामी, विषय जहर को सुधा हो नामी।।

कुनय मंत्र को सर्प कहाए, सप्त भंग मय जिनमत गाए।
यह संसार महावन भारी, प्राणी भटक रहे संसारी।।
मोह महातम में यह प्राणी, भटक रहे होके अज्ञानी।
तुमने सद् श्रद्धान जगाया, सम्यक् ज्ञान स्वयं प्रगटाया।।

सम्यक् चारित्र पाने वाले, तप के धारी रहे निराले।
पूर्व भवों में पुण्य उपाया, तीर्थंकर पद तुमने पाया।।
पञ्च कल्याणक तुमने पाए, स्वर्ग लोक से चय कर आए।
गर्भ कल्याणक देव मनाते, रत्नवृष्टि अनुपम करवाते।।

जन्म नगर को खूब सजाते, आस–पास दुर्भिक्ष नशाते।
जन्मोत्सव का अवसर आता, इन्द्रराज ऐरावत लाता।।
पाण्डुक शिला पे फिर ले जाता, सहस्र नयन से दर्शन पाता।
सहस्र आठ कलशा ले भारी, नहवन कराएँ मंगलकारी।।

जय–जयकार लगाते भाई, खुश होकर के मंगलदायी।
जिन प्रभु फिर वृद्धी शुभ पाते, युवा अवस्था में आ जाते।।
राजभोग पाके सुख पावें, फिर भी मन उनके ना भावें।
फिर निमित्त कोई पा जाते, मन में तब वैराग्य जगाते।।

संयम धारण करने वाले, संत विरागी बनें निराले।
निज आतम का ध्यान लगाते, जिससे कर्म निर्जरा पाते।।
अतिशय केवलज्ञान जगाते, समवशरण आ देव रचाते।
दिव्य देशना मंगलकारी, भवि जीवों की हो उपकारी।।

शास्वत तीर्थराज पर जाते, अपने सारे कर्म नशाते।
शास्वत सिद्ध शिला पर स्वामी, स्थित होते अन्तर्यामी।।
सिद्ध बिम्ब हैं मंगलकारी, नित्य निरंजन शुभ अविकारी।
जिनके पद हम शीश झुकाते, 'विशद' भाव से जिन गुण गाते।।

(छन्द : घत्ता)

जय जय अविकारी, शिवमगधारी, अरज हमारी सुनो विभो !।
जन जन हितकारी, मंगलकारी, शिव भरतारी आप प्रभो !।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-23

(स्थापना)

अष्टम द्वीप की दक्षिण दिश में, अञ्जन गिरि है सुखदायी।
वापी जिसके है पश्चिम में, नाम अशोका है भाई।।
जिसके प्रथम कोंण में रतिकर, पञ्चम जानो मंगलकार।
आह्वानन् हम भी करते हैं, जिन बिम्बों का बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

जग के शीतल स्वादिष्ट पेय से, प्यास नहीं बुझ पाई है।
अतः आपके चरणों की, हे नाथ ! भक्ति उर आई है।।
शुभ द्वीप आठवें में जिनगृह, की पूजा करके हर्षाते।
हम श्री जिनवर के चरण कमल में, नत होकर के सिरनाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर आदी द्वारा, जग काय उष्णता शांत करे।
पर कर्मों की जलती ज्वाला, ना आतम को उपशांत करे।।
शुभ द्वीप आठवें में जिनगृह, की पूजा करके हर्षाते।
हम श्री जिनवर के चरण कमल में, नत होकर के सिरनाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गति में क्षत विक्षत हुए, ना अक्षय पद का ध्यान जगा।
अक्षय आतम न पहिचानी, मन विषयों में ही रहा लगा।।

शुभ द्वीप आठवें में जिनगृह, की पूजा करके हर्षाते।
हम श्री जिनवर के चरण कमल में, नत होकर के सिरनाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने सारे जग को, निज के आधीन बनाया है।
किन्तू अविकारी जिनवर के, आगे वह न टिक पाया है।।
शुभ द्वीप आठवें में जिनगृह, की पूजा करके हर्षाते।
हम श्री जिनवर के चरण कमल में, नत होकर के सिरनाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना की लोलुपता हमसे, कितने ही पाप कराती है।
भोजन करने पर भी आशा, इस मन की ना मिट पाती है।।
शुभ द्वीप आठवें में जिनगृह, की पूजा करके हर्षाते।
हम श्री जिनवर के चरण कमल में, नत होकर के सिरनाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम दीप मालिकाओं द्वारा, नव नूतन महल सजाते हैं।
चंचल विद्युत के नव प्रकाश, चेतन के दीप बुझाते हैं।।
शुभ द्वीप आठवें में जिनगृह, की पूजा करके हर्षाते।
हम श्री जिनवर के चरण कमल में, नत होकर के सिरनाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं पूर्व भवों के कर्मोदय, जीवों को सुख-दुख दिलवाते।
जो नित चेतन में रमण करें, ना कर्म उन्हें दुख दे पाते।।
शुभ द्वीप आठवें में जिनगृह, की पूजा करके हर्षाते।
हम श्री जिनवर के चरण कमल में, नत होकर के सिरनाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो फल की इच्छा करते हैं, वह फल विहीन रह जाते हैं।
कर्त्तव्य करें अपना मन से, वह निश्चय शिव फल पाते हैं।।
शुभ द्वीप आठवें में जिनगृह, की पूजा करके हर्षाते।
हम श्री जिनवर के चरण कमल में, नत होकर के सिरनाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्ट द्रव्य की सामग्री, जिनपूजा की साधन गाई।
जो लक्ष्य साध्य का करते हैं, उनने शिवपद पाया भाई।।
शुभ द्वीप आठवें में जिनगृह, की पूजा करके हर्षाते।
हम श्री जिनवर के चरण कमल में, नत होकर के सिरनाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा पञ्चम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– देते शांतीधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिनपूजा व्रत में विशद, दोष लगें न कोय।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– जिन पूजा के भाव से, कर्मों का क्षय होय।
जन्म–मरण की श्रृंखला, पुष्पाञ्जलि कर खोय।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– रतिकर गिरि स्वर्णाभ है, नन्दीश्वर के धाम।
जयमाला गाते यहाँ, जिनपद विशद प्रणाम।।

(शेर छंद)

जय–जय जिनेन्द्र देव जगत वंद्य हमारे।
जय भक्त वृन्द को प्रभु भव सिन्धु से तारे।।
जय तीन लोक में जिनेन्द्र पूज्य कहाए।
जय तीन कालवर्ति सभी द्रव्य बताए।।

जय भूतकाल में अनन्त हुए हैं जिनेश।
जय–जय भविष्य काल के अनन्त तीर्थेश।।
जय पञ्चकल्याण आप प्राप्त किए हैं।
कोई दो या तीन श्रेष्ठ कल्याण लिए हैं।।
हे नाथ ! आप गर्भ में अवतार शुभ पाए।
तब इन्द्र की आज्ञा से धनद रत्न वर्षाए।।
हे नाथ ! आप जन्मते सुर लोक हिल जाए।
आनन्द से सब जीवों का हृदय खिल जाए।।
भेरी बजा के इन्द्र शुभ आह्वान कराते।
जन्माभिषेक करने देवों को भी लाते।।
सुर इन्द्र राज जिन को सुर शैल ले जाते।
होके प्रसन्न देव सब उत्सव भी मनाते।।
होते विरक्त प्रभु जी तब देव कई आते।
दीक्षा महोत्सव खुश हो वह देव मनाते।।
जब घातियों को घात ज्ञान सम्पदा पाएँ।
रचना समवशरण की शुभ इन्द्र कराएँ।।
कई भव्य जीव आके शुभ देशना पाते।
श्रद्धान ज्ञान चारित्र पा भाग्य सजाते।।
हो देशना ॐकार मई श्रेष्ठ सुखदायी।
कल्याण प्रद है लोक में सब जीव को भाई।।
जब आप कर्म नाश के शिवधाम को जाते।
सिद्ध यंगना के साथ परम सौख्य को पाते।।
निर्वाण महोत्सव तभी आ देव मनाते।
जिनदेव के चरणों में आके शीश झुकाते।।
महिमा का नाथ आपकी जो पार ना पाते।
कर दर्श आपका प्रभु सब सिद्ध बन जाते।।

सौभाग्य के उदय से नर देह हम पाये।
सद्ज्ञान प्राप्त करके पद पूजने आये।।
अब तक प्रभु संसार से हम मोक्ष ना पाए।
प्रत्यक्ष परोक्ष भक्ति करके पुण्य कमाए।।

दोहा– पंचम गति पाने प्रभु, नमन मेरा पंचांग।
विशद ज्ञान पञ्चम जगे, मिले सौख्य सर्वांग।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा–24

स्थापना

नंदीश्वर शुभ दीप आठवाँ, जिसके दक्षिण में मनहार।
षष्ठम रतिकर पर्वत सोहें, जिस पर जिन मंदिर शुभकार।।
मंदिर में जिनबिम्बों का हम, करते भाव सहित आह्वान।
पुष्पित पुष्प चरण में धर के, 'विशद' यहाँ करते गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(मणुयानंद की चाल)

क्षीर सम नीर हम श्रेष्ठ भर लाए हैं, रोग जन्मादि के नाश को आए हैं।
द्वीप नंदीश्वर में श्री जिनधाम हैं, उनके जिनबिम्बों को मेरा प्रणाम है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर के साथ केसर घिसाई अहा, लक्ष्य भव ताप हरना हमारा रहा।
द्वीप नंदीश्वर में श्री जिनधाम हैं, उनके जिनबिम्बों को मेरा प्रणाम है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत अक्षत शुभ मुक्ता फल सम लिए, पूजा के भाव से यहाँ अर्पित किए।
द्वीप नंदीश्वर में श्री जिनधाम हैं, उनके जिनबिम्बों को मेरा प्रणाम है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प केसर में अक्षत रंगाए हैं, काम के बाण विध्वंस को आए हैं।
द्वीप नंदीश्वर में श्री जिनधाम हैं, उनके जिनबिम्बों को मेरा प्रणाम है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध नैवेद्य घृत के बना लाए हैं, शीघ्र व्याधी क्षुधा नाश को आए हैं।
द्वीप नंदीश्वर में श्री जिनधाम हैं, उनके जिनबिम्बों को मेरा प्रणाम है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमय दीप से श्रेष्ठ ज्योती जले, मोहतम जो लगा पूर्ण अब वह गले।
द्वीप नंदीश्वर में श्री जिनधाम हैं, उनके जिनबिम्बों को मेरा प्रणाम है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दश गंध से यह बनाई सही, नाश हो कर्म का प्राप्त हो शिवमही।
द्वीप नंदीश्वर में श्री जिनधाम हैं, उनके जिनबिम्बों को मेरा प्रणाम है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफलादि प्रभु के चरण में यह धरें, मोक्ष फल शीघ्र ही प्राप्त हम अब करें।
द्वीप नंदीश्वर में श्री जिनधाम हैं, उनके जिनबिम्बों को मेरा प्रणाम है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि का अर्घ्य हम लाए हैं, प्राप्त करने सुपद आज हम आए हैं।
द्वीप नंदीश्वर में श्री जिनधाम हैं, उनके जिनबिम्बों को मेरा प्रणाम है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– देते शांतीधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिनपूजा व्रत में विशद, दोष लगें न कोय।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– जिन पूजा के भाव से, कर्मों का क्षय होय।
जन्म–मरण की श्रृंखला, पुष्पाञ्जलि कर खोय।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– कृत्रिमाकृत्रिम बिम्ब शुभ, श्री जिन के अविकार।
जयमाला गा पूजते, नत हो बारम्बार।।

(शम्भू छंद)

जय दीप आठवाँ नंदीश्वर, जग में पावन कहलाता है।
जिसके चारों दिश जिन मंदिर, भव्यों के मन को भाता है।।
है दक्षिण दिश के मध्य श्रेष्ठ, अञ्जन गिरि पर्वत मनहारी।
जिसके ऊपर जिनगृह अनुपम, जिनबिम्ब रहे मंगलकारी।।
हैं अञ्जन गिरि के चारों दिश में, बावड़ियाँ इक–इक महान्।
इन बावड़ियों के मध्य श्रेष्ठ शुभ, दधिमुख पर्वत रहे प्रधान।।
बावड़ियों के बाह्य कोंणों पर, दो–दो रतिकर हैं शुभकार।
स्वर्ण समान शोभते मनहर, देवों का हो जहाँ विहार।।

उन पर जिन मंदिर में प्रतिमाएँ, हैं आठ एक सौ अपरम्पार।
सुर गण मिलकर के चरणों में, वन्दन करते बारम्बार।।
रतिकर पर्वत स्वर्णिम शास्वत्, सबके मन को मोह रहा।
वन उपवन तरुवर शाखाओं, फल फूलों से सोह रहा।।
चारण ऋद्धीधर ऋषिगण भी, जिनबिम्बों को ही ध्याते हैं।
भावों से भक्ती की महिमा, होकर, विशुद्ध हम गाते हैं।।
प्रत्येक वर्ष में तीन बार, शुभ पर्व अठाई आते हैं।
स्वर्गों के देव सभी मिलकर, जिन भक्ती करने जाते हैं।।
अतिशय स्वरूप तन का प्रभु के, शुभ लक्षण सहस्र अठ पाते।
चौंतिस अतिशय प्रभु पाते हैं, वसु प्रातिहार्य भी प्रगटाते।।
हम भव दुख से घबराकर, प्रभु शरण आपकी आए हैं।
हो प्रगट निधि निज चेतन की, बस यही भावना भाए हैं।।
रत्नत्रय मुक्ती का साधन, यह आज समझ हम पाए हैं।
हो 'विशद' ज्ञान अब प्राप्त हमें, हम यही भावना भाए हैं।।

दोहा– नंदीश्वर शुभ दीप में, रतिकर गिरि महान।
जिनगृह श्री जिनबिम्ब का, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद वरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-25

(स्थापना)

नन्दीश्वर के दक्षिण में शुभ, सप्तम रतिकर अपरम्पार।
वापी रही वीतशोक के, कोंण में रतिकर मंगलकार।।
जिस पर जिनमंदिर की महिमा, का वर्णन है कठिन महान्।
उसमें जिनबिम्बों का करते, विशद भाव से हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जोगीरासा)

जन्मजरादी के दुख भारी, काल अनादि सहे हैं।
सारे जग के संकट कोई, बाकी नहीं रहे हैं।।
सर्व दुःख के नाश हेतु यह, निर्मल जल भर लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप में तपते प्राणी, शांति कभी न पाए।
सुर नारक नर पशूगति के, भारी दुःख उठाए।।
शुद्ध सुगन्धित शीतल चन्दन, लेकर के हम आए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग में जो भी पदार्थ हैं, सबका क्षय बतलाया।
अध्रुव वस्तू अपनी मानी, इसीलिए दुख पाया।।
अक्षय बुद्धी पा पद अक्षय, पाने अक्षत लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मा विष्णु महेश आदि नर, काम बाण से हारे।
भटक रहे हैं चतुर्गती में, काम के मारे-मारे।।
काम शत्रु पर विजय हेतु यह, पुष्प मनोहर लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग है जग जीवों को, भव-भव में दुख दाता।
सदा सताए रहते प्राणी, पाते न सुख साता।।
क्षुधा रोग वारण करने को, यह नैवेद्य बनाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या मोह महातम भारी, सारे जग में छाया।
आतम ज्ञान सूर्य का दर्शन, अतः नहीं कर पाया।।
मोह महातम पूर्ण नशाने, दीप जलाकर लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय बस जग के प्राणी, दुःख निरन्तर पाते।
प्रबल कषाय आदि सर्पादिक, जग में सतत सताते।।
ज्ञान प्रकाश नाश कर्मों को, धूप जलाने लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस फल को पाने इन्द्रादि, ऋषि मुनि सुर ललचाते।
वह अरहंत शरण बिन जग में, अन्त कहीं न पाते।।

ऐसा श्रेष्ठ महाफल पाने, शुभम् सरस फल लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक द्रव्य मिलाकर, उत्तम अर्घ्य बनाये।
हर्ष भाव मन में उपजाकर, पूजा करने आये।।
निज शास्वत् चेतन गुण पाएँ, अर्घ्य चढ़ाने लाए।
जिनबिम्बों की पूजा करने, भाव सहित हम आए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– देते शांतीधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिनपूजा व्रत में विशद, दोष लगें न कोय।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– जिन पूजा के भाव से, कर्मों का क्षय होय।
जन्म–मरण की श्रृंखला, पुष्पाञ्जलि कर खोय।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, जिनगृह पूज्य त्रिकाल।
उनके शुभ जिनबिम्ब की, गाते हम जयमाल।।

(सृग्विणी छंद)

हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।
हृदय श्रद्धा जगाकर के दर्शन करें, राग आदिक विभावों को हम परिहरें।।1।।
कर्म घाती नशा आप अर्हत् बने, दोष अष्टादश हैं आप सारे हने।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।2।।
चार पाए चतुष्टय प्रभू आपने, ज्ञान केवल जगाया स्वयं आपने।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।3।।
इन्द्र पूजें चरण भक्ति से आय के, द्रव्य अर्पें चरण भक्ति से गाय के।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।4।।

धनद आके समवशरण रचता सही, नीलमणि की जहाँ शोभती है मही।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।5।।
चैत्य प्रासाद भूमि प्रथम शोभती, खातिका भूमि मन को जहाँ मोहती।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।6।।
लता भूमि रही तीसरी शुभ अहा, भूमि उपवन कहाई चतुर्थी महा।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।7।।
ध्वजा भूमि में ध्वज श्रेष्ठ फहरा रहे, छठी भूमि में सुरतरु श्री जिन कहे।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।8।।
भवन भूमि विशद सातवीं जानिए, आठवीं भूमि श्री मण्डप भी मानिए।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।9।।
तीन पीठों के ऊपर कमल शुभ कहे, जिसके ऊपर श्री जिन अधर में रहें।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।10।।
यक्ष चौंसठ चँवर ढौरते हैं जहाँ, ध्वजा पंक्ति भी फहराती है शुभ वहाँ।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।11।।
द्वार पर धूप घट मध्य दीपक जले, रत्नमय ज्योति से सांझ भी ना ढले।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।12।।
प्रातिहार्य रहे आठ वैभव महाँ, दर्श बिन नाथ के नहीं जाए रहा।
हे प्रभु भक्त पर अब कृपा कीजिए, हो दयालु चरण में बुला लीजिए।।13।।

दोहा– शिव पथ के राही कहे, श्री अर्हत् भगवान्।
गुण अनन्त पाने विशद, करें भक्त गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकर जिनमन्दिर जिनपूजा-26

(स्थापना)

अष्टम् द्वीप की दक्षिण दिश में, अञ्जन गिर का है स्थान।
जिसके उत्तर दिश में अनुपम, उत्तम रतिकर रहा महान्।।
जिसके जिन मन्दिर प्रतिमाएँ, पूज रचावें देव प्रधान।
उन प्रतिमाओं का परोक्ष हम, करते विशद यहाँ आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जोगीरासा)

क्षीर नीर सम उज्ज्वल जल यह, हम पूजा को लाए।
जन्म जरादिक दुःख नाश हों, चरणाम्बुज में आए।।
नन्दीश्वर के जिनगृह की हम, पूजा आज रचाते।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन में कुंकुम अरु, शुभ कर्पूर मिलाए।
भवाताप आताप नाश हो, हम पूजा को आए।।
नन्दीश्वर के जिनगृह की हम, पूजा आज रचाते।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल यह अक्षत, जल से श्रेष्ठ धुवाए।
अक्षय निधिपति परमेश्वर हम, पूजा करने लाए।।

नन्दीश्वर के जिनगृह की हम, पूजा आज रचाते।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के पुष्प मनोहर, शुभ सुगंध बिखराए।
कामदाह के नाश हेतु यह, आज चढ़ाने लाए।।
नन्दीश्वर के जिनगृह की हम, पूजा आज रचाते।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे शुद्ध छहों रस पूरित, शुभ नैवेद्य बनाए।
क्षुधा दोष दुख नाश हेतु यह, हम अर्चा को लाए।।
नन्दीश्वर के जिनगृह की हम, पूजा आज रचाते।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय स्वर्ण द्वीप ये अनुपम, यहाँ जलाकर लाए।
मोह महातम नाश करें हम, जिन चरणों में आए।।
नन्दीश्वर के जिनगृह की हम, पूजा आज रचाते।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय वश जग के प्राणी, दुःख अनेकों पाए।
स्वाभाविक गुण पाने भगवन्, धूप जलाने लाए।।
नन्दीश्वर के जिनगृह की हम, पूजा आज रचाते।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म के फल से प्राणी, जग में सुख दुख पाएँ।
मोक्ष महाफल पाने को हम, श्रीफल यहाँ चढ़ाएँ।।
नन्दीश्वर के जिनगृह की हम, पूजा आज रचाते।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए।
पद अनर्घ्य पाने को हम प्रभु, द्वार आपके आए।।
नन्दीश्वर के जिनगृह की हम, पूजा आज रचाते।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– देते शांतीधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिनपूजा व्रत में विशद, दोष लगें न कोय।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– जिन पूजा के भाव से, कर्मों का क्षय होय।
जन्म–मरण की श्रृंखला, पुष्पाञ्जलि कर खोय।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नंदीश्वर शुभ द्वीप में, रतिकर रहे महान्।
जयमाला गाते यहाँ, करते शुभ गुणगान।।

(तर्ज–हे दीनबन्धु.....)

जय–जय जिनेन्द्र तीर्थ नाथ देव हमारे।
जय घातिया को घात सभी कर्म निवारे।।

जय–जय जिनेन्द्र देव की हम वन्दना करें।
जय वीतरागी देव की हम अर्चना करें।।
संसार की माया को प्रभु आपने जाना।
अध्रुव सभी पदार्थ हैं ये आपने माना।।
संसार सिन्धु में कोई ना साथ निभाए।
कोई नहीं है मरने पे साथ जो जाए।।
आता है जीव एक औ मरता है अकेला।
जो भी दिखाई दे रहे सब स्वार्थ का मेला।।
यह जीव भी जो एकमेक देह में रहा।
यह देह भी तो साथ निभाता नहीं अहा।।
नव द्वार से अशुचि बहे इस देह के द्वारा।
मल से बना मलीन यह शरीर है सारा।।
योगों का परिष्पन्द अनादि से हो रहा।
आस्रव के साथ बन्ध कर बहु दुःख भी सहा।।
गुप्ती समीति धर्म जो चारित्रवान् हैं।
संवर करें करम का जो ज्ञानवान हैं।।
सम्यक् प्रकाश से सुतप जो धारते कभी।
कर्मों की करें निर्जरा इस जग में वे सभी।।
यह लोक चौदह राजू उत्तुंग बताया।
कटि पे रखे हो हाथ पुरुष रूप में गाया।।
बोधि को प्राप्त करना दुर्लभ रहा भाई।
आतम का ध्यान करने वालों ने ही पाई।।
इस लोक में कई जीव धर्म भावना धरें।
कर्मों को नाश आतम कल्याण वह करें।।

कल्याण की सु भावना हम दर पे लाए हैं।
हे नाथ ! दोगे साथ हम भक्त आए हैं।।
है आठवाँ सुदीप रतिकर अचल रहा।
जिनधाम जिसके ऊपर जिनदेव का कहा।।
स्वर्णाभ है जो शास्वत शुभ रत्नमयी है।
भक्तों के लिए भाग्यवान कर्मक्षयी है।।
जिनबिम्ब शतक एक सौ शुभ आठ बताए।
दुर्भाग्य है हमारा हम दर्श ना पाए।।
जिनबिम्ब की स्थापना कर पूजते यहाँ।
अर्जित करेंगे पुण्य हम परोक्ष ही महाँ।।
अन्तिम हमारी भावना अब कर्म नाश हों।
कर्मों से मुक्ती पाएँ शिवपुर में वास हो।।

(छन्द : धत्ता)

शास्वत् अविकारी, जन-मनहारी, पूज्य पाद जिनबिम्ब कहे।
हैं मंगलकारी दोष, निवारी, विशद भाव से पूज रहे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-27

(स्थापना)

अष्टम द्वीप दिशा पश्चिम में, श्याम रंग का गिरि शुभ गोल।
जिन मन्दिर है जिस पर अनुपम, हैं जिनबिम्ब बड़े अनमोल।।
मानव की संरचना जैसे, शोभित होते आभावान।
जिनके चरण कमल की पूजा, करने को करते आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छंद)

द्रव्य भाव नो कर्म मलों से, दूषित हम होते आये।
कर्म कलंक मिटाने को यह, नीर चढ़ाने हम लाये।।
हे नाथ ! आपकी पूजा कर, हम मन में हर्ष मनाते हैं।
मुक्ती पद को पाने चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव के भाव विभावों में, जलते-मरते हम आए हैं।
चंदन यह श्रेष्ठ चढ़ाकर हम, संताप मिटाने आए हैं।।
हे नाथ ! आपकी पूजा कर, हम मन में हर्ष मनाते हैं।
मुक्ती पद को पाने चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है सिद्ध प्रभू का अक्षय पद, वह पद हमको अब पाना है।
अक्षत यह चढ़ा रहें अनुपम, ना और जगत भटकाना है।।

हे नाथ ! आपकी पूजा कर, हम मन में हर्ष मनाते हैं।
मुक्ती पद को पाने चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषधर यह विषय वासना से, भव-भव में डसते आये हैं।
हे विषहर निर्विष हमें करो, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
हे नाथ ! आपकी पूजा कर, हम मन में हर्ष मनाते हैं।
मुक्ती पद को पाने चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भक्ष्याक्ष्य सभी खाते, हैं क्षुधा रोग के अकुलाये।
नैवेद्य चढ़ाकर क्षुधा रोग, हे नाथ ! नशाने हम आये।।
हे नाथ ! आपकी पूजा कर, हम मन में हर्ष मनाते हैं।
मुक्ती पद को पाने चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरे में भटके, ना तत्त्व ज्ञान कर पाए हैं।
यह दीप जलाकर हम कृत्रिम, अज्ञान नशाने आए हैं।।
हे नाथ ! आपकी पूजा कर, हम मन में हर्ष मनाते हैं।
मुक्ती पद को पाने चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन कर्मों से हुआ मलिन, यह कर्म नहीं जल पाए हैं।
अब धूप जलाकर अग्नी में, वह कर्म जलाने आए हैं।।
हे नाथ ! आपकी पूजा कर, हम मन में हर्ष मनाते हैं।
मुक्ती पद को पाने चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार सुखों की आशा में, हम धर्म कर्म बिसराए हैं।
अब मोक्ष महाफल पाने हम, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
हे नाथ ! आपकी पूजा कर, हम मन में हर्ष मनाते हैं।
मुक्ती पद को पाने चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा अनर्घ पद की हमने, ना कभी आज तक जानी है।
अब पद अनर्घ पाएँगे हम, मन में अपने यह ठानी है।।
हे नाथ ! आपकी पूजा कर, हम मन में हर्ष मनाते हैं।
मुक्ती पद को पाने चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सर्व लोक में सौख्यकार, शुभकर शांतीधार।
विशद भाव से कर रहे, सकल संघ हितकार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा- जिनवर चरण सरोज में, चढ़ा रहे हम फूल।
सुख संतति सम्पत्ति बढ़े, होंय कर्म निर्मूल।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

जयमाला

दोहा- नंदीश्वर शुभ द्वीप में, अंजनगिरि जिनधाम।
पूज रहे हम भाव से, करके चरण प्रणाम।।

(सृग्विणी छंद)

जय जय जिनेन्द्र तीन लोक वंद्य बताए, जय जय अनन्त गुण के करण्ड कहाए।
हे नाथ भक्ति भाव से हम वन्दना करें, जय वीतराग देव की हम अर्चना करें।।
जय अष्टम् सुदीप श्रेष्ठ आप जानिए, जो शास्वत अनादी अनन्त मानिए।
जय उन्हीं पे विराजे जिनेशालया, जो कहे रत्नमय शास्वत महालया।।
एक सौ आठ जिनबिम्ब प्रत्येक में, देव-देवी सदा पूजते हैं उन्हें।
कोई तीर्थेश की कीर्ति आ गा रहे, कोई माथा चरण में भी आ झुका रहे।।

नाथ के गुण हैं शाश्वत ना नशते कभी, इन्द्र धरणेन्द्र करते हैं वन्दन सभी।
हे जिनेश्वर ! जरा सी कृपा कीजिए, नाथ चरणों में हमको बुला लीजिए।।
एकटक देख आपके दर्शन करें, राग आदिक विभावों को हम भी हरें।
श्री समवशरण में पीठ त्रय शोभते, यक्ष आके सु चौंसठ चँवर ढौरते।।
जहाँ फहराएँ अनुपम ध्वजा पंक्तियाँ, मानो जो गा रही नाथ गुण सूक्तियाँ।
श्रेष्ठतम धूप घट दीप मणिमय जलें, रत्नमय ज्योति से सांझ भी ना ढलें ।।
पुष्प वृष्टि वहाँ देव आके करें, श्रेष्ठ मकरन्द के मानो झरना झरें।
दण्ड वैडूर्य युत छत्र त्रय जानिए, शीश पर गुरु लघु-लघुतम मानिए।।
दुन्दुभि ताल वीणा सुरीली बजे, आभा मण्डल प्रभुजी के पीछे सजे।
सुरतरू के तले प्रभू जी राजते, दिव्य बाजे मधुर ध्वनि में बाजते।।
श्रेष्ठ सिंहासन भी शोभता है जहाँ, दिव्य ध्वनि आके सुनते हैं प्राणी यहाँ।
चार अंगुल अधर में प्रभुजी रहें, दर्श चारों दिशा में सभी जन करें।।
आठ यह प्रातिहार्य शुभम् जानिए, अन्य वैभव अकथ प्रभु का मानिए।
गंधकुटी है सुगन्धित बहु अतिशय भरी, बैठते हैं सभा में कई सुर-नर हरी।।
हो शरण आपकी और कोई चाह ना, भाग्य जागे हृदय की यही भावना।
नाथ ! आये शरण में हम आशा लिए, ज्ञान के अब हृदय में जलें शुभ दिए।।

दोहा- नाथ आपके द्वार पर, पूरी होती आश।
हम भी शिवपद पाएँगे, पूरा है विश्वास।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्वदधि मुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-28

(स्थापना)

नन्दीश्वर की पश्चिम दिश में, अञ्जन गिरि है महिमावान।
पूर्व वापिका में दधिमुख शुभ, श्वेत वर्ण जिस पर भगवान्।।
दश हजार योजन के उन्नत, गोल ढ़ोल की पोल समान।
जिनबिम्बों का आह्वानन् कर, करते यहाँ विशद गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छंद)

झारी में जल भर लाए, त्रय धार कराने आए।
है जन्म जरादिक नाशी, जो सम्यक् ज्ञान प्रकाशी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन कर्पूर मिलाए, भव ताप नशाने आए।
जो है शीतल शुभकारी, संताप विनाशनकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल के पुञ्ज बनाए, जल में धोकर के लाए।
हम अक्षय पदवी पाएँ, भव सिन्धू से तर जाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की माल बनाते, पूजन में यहाँ चढ़ाते।
हो नाश काम की व्याधी, हम धारण करें समाधी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस शुभकारी, हम चढ़ा रहे मनहारी।
हैं क्षुधा रोग के नाशी, सद् दर्शन ज्ञान प्रकाशी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के दीप जलाएँ, मिथ्यात्व मोह विनशाएँ।
हम रत्नत्रय निधि पाएँ, फिर शिव नगरी को जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुरभित धूप जलाएँ, कर्मों का धूम उड़ाएँ।
हम यही भावना भाएँ, गुण आठ शीघ्र प्रगटाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस मधुर हम लाए, चरणों में नाथ चढ़ाए।
जो हैं अति सरस निराले, मुक्ती पद देने वाले।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो हैं शास्वत पद दायी।
हम भी शिवपदवी पाएँ, भव में ना अब भटकाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांती का दरिया बहे, श्री जिनेन्द्र के द्वार।
अतः चरण में दे रहे, हम भी शांती धार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– ज्यों पराग है फूल में, त्यों आतम में ज्ञान।
ज्ञान प्रकट करने विशद, करते हम गुणगान।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– धवल गिरी पर जिनभवन, सोहें स्वर्ण समान।
जयमाल गाते यहाँ, नत हो जिनपद आन।।

(चौपाई)

जय–जय जगत पूज्य जिन स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
महिमा तुमरी जग से न्यारी, सारे जग में मंगलकारी।।
वीतराग पद तुमने पाया, निज चेतन को निज में ध्याया।
प्रभू आप रत्नत्रयधारी, अनुपम अचल बने अविकारी।।

कामधेनु चिंतामणि गाए, कल्पवृक्ष सम प्रभु कहलाए।
पार्श्वमणि हो हे जिन स्वामी, मुक्ती पथ के हे अनुगामी।।
भक्ती से मन में हुलसाए, पूजा करने को हम आए।
श्रेष्ठ भावनाएँ शुभकारी, जीवन कर दे मंगलकारी।।
अशुभ दूर हो जाए हमारा, शुभ हो जाए जीवन सारा।
शुद्ध ध्यान को फिर हम पाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।।
यही भावना रही हमारी, जीवन हो यह मंगलकारी।
रत्नमयी जिन मंदिर भाई, बने अकृत्रिम हैं सुखदायी।।
उनमें शुभ जिनबिम्ब निराले, शिवपथ को दर्शानेवाले।
जिन अरहन्त पूज्य शुभकारी, संत विरागी मंगलकारी।।
प्रभु के दर्शन करने वाले, होते हैं वह लोग निराले।
ऋद्धिधारी ऋषिवर जाते, विद्याधर भी दर्शन पाते।।
अपने मन में हर्ष जगाते, पूजा भक्ती कर गुण गाते।
जिनबिम्बों के दर्शन पाते, ऋद्धि–सिद्धि सौभाग्य जगाते।।
कर्म निर्जरा करते भाई, जीवन होता मंगलदायी।
हम परोक्ष ही दर्शन पाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
अनुपम अष्टम द्वीप कहाया, पश्चिम अञ्जनगिरि शुभ गाया।
दधिमुख पूरब का शुभ जानो, मध्य वापिका के पहचानो।।
अतिशय महिमावान कहाए, जिसके ऊपर जिनगृह पाए।
जिन महिमा हम शुभ गाते, प्रभु के गुण गाके हर्षाते।।

दोहा– शिव पथ के राही कहे, श्री अर्हत् भगवान।
गुण अनन्त पाने 'विशद', करें भक्त गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद– **जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।**
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा–29

(स्थापना)

नंदीश्वर पश्चिम अञ्जन गिरि, दक्षिण दिशा महान्।
दधिमुख वापी मध्य शोभता, ढोल की पोल समान।।
रत्नमयी जिन मंदिर जिस पर, अकृत्रिम भगवान।
एक सौ आठ विशद जिनबिम्बों, का करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(भुजंग प्रयात्)

महातीर्थ गंगा का जल हम चढ़ाएँ, लगे रोग हैं जो अनादी नशाएँ।
जिनबिम्बों की आज पूजा रचाते, चरणों में नत होके माथा झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूरादि चन्दन को जल में घिसाते, मिटे ताप मन का हम पूजा रचाते।
जिनबिम्बों की आज पूजा रचाते, चरणों में नत होके माथा झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल क्षीर सम श्वेत अक्षत बनाए, मिले नाथ अक्षय पद पूजा को आए।
जिनबिम्बों की आज पूजा रचाते, चरणों में नत होके माथा झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बनाई सुगन्धित ये सुमनों की माला, प्रभो काम का नाश हो पूर्ण जाला।
जिनबिम्बों की आज पूजा रचाते, चरणों में नत होके माथा झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मिष्ठ नैवेद्य हमने बनाए, क्षुधा नाश हो नाथ हमने चढ़ाए।
जिनबिम्बों की आज पूजा रचाते, चरणों में नत होके माथा झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम दीप की हम शिखा ये जलाते, नशे मोहतम नाथ पूजा रचाते।
जिनबिम्बों की आज पूजा रचाते, चरणों में नत होके माथा झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धी बढ़े धूप खेने से भाई, सभी कर्म हों नाश हैं दुःखदायी।
जिनबिम्बों की आज पूजा रचाते, चरणों में नत होके माथा झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सुपाड़ी सु बादाम लाए, विशद मोक्षफल नाथ पाने को आये।
जिनबिम्बों की आज पूजा रचाते, चरणों में नत होके माथा झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चन्दनादि मिला अर्घ्य भाई, चढ़ाते प्रभू पाद में सौख्यदायी।
जिनबिम्बों की आज पूजा रचाते, चरणों में नत होके माथा झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– शांतीधारा नाथ, करते हैं तव पद युगल।
चरण झुकाते माथ, मुक्ती हो संसार से।। शान्तये शांतिधारा...

सोरठा– सुरभित लाए फूल, पुष्पाञ्जलि के लिए हम।
कर्म होंय निर्मूल, शिव पदवी हमको मिले।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– अकृत्रिम जिनबिम्ब हैं, नन्दीश्वर के धाम।
जयमाला गाके यहाँ, करते चरण प्रणाम।।

(आल्हा छंद)

तप्त स्वर्ण सम रतिकर गिरि है, काल अनादि अनन्त महान्।
अकृत्रिम शाश्वत् है अनुपम, जान रहा यह सर्व जहान।।
जिसके ऊपर बना जिनालय, जिसकी महिमा अपरम्पार।
हैं जिनबिम्ब वेदिका पर शुभ, वीतरागता के आधार।।
जिनके दर्शन कर लेने से, हृदय जागता है उल्लास।
भक्त जनों की होती क्षण में, अनायास ही पूरी आस।।
दर्शन करके सम्यक् दर्शन, सुदृढ़ करते जीव अपार।
स्वपर भेद विज्ञान जगाते, प्राणी जग में अपरम्पार।।
दर्श आपका हमने पाया, मन में जागी है कुछ आस।
भव सिन्धू से पार करो प्रभु, है विचित्र मेरा इतिहास।।
थे अनादि से हम निगोद में, प्रतिपल जन्म मरण पाये।
भू जल अग्नी वायु वनस्पति, स्थावर में उपजाये।।
त्रस पर्याय प्राप्त दो इन्द्रिय, में अनन्त दुख पाये हैं।
त्रि इन्द्रिय चउ इन्द्रिय के दुख, पाकर बहु अकुलाए हैं।।
पञ्चेन्द्रिय पशु बने असैनी, घोर दुखों के बीच पड़े।
सैनी हो बलहीन हुए तब, पशू सताते रहे बड़े।।
संक्लेश परिणामों से फिर, नरक आयु का बन्ध किया।
शीत उष्ण मारण तापन का, कर्मोदय से दुःख लिया।।
प्रबल पुण्य का योग बना तब, यह मानव पर्याय मिले।
मोह महामद का कारण हो, नहीं ज्ञान की कली खिले।।
पुण्य प्राप्त कर स्वर्ग लोक के, भोगों में तल्लीन रहे।
वहाँ पहुँचकर के भी हमने, बहुत मानसिक दुःख सहे।।
देख दूसरे के वैभव को, आर्त्त रौद्र परिणाम किये।
देख आयु क्षय हो जाने पर, एकेन्द्रिय में जन्म लिए।।
इस प्रकार धर-धर पर अनन्त भव, चारों गतियों में भटके।
तीव्र मोह मिथ्यात्व पाप के, कारण इस जग में अटके।।

जन्म-जन्म तक भक्ति आपकी, रहे हृदय में हे जिनदेव।
रत्नत्रय पाकर के हम भी, सिद्ध सुपद पाएँ स्वयमेव।।

दोहा- नमन् मेरा जिनपाद में, हर्ष भाव के साथ।
पार करो भव सिन्धु से, हे त्रिभुवनपति नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-30

(स्थापना)

पश्चिम दिश में नन्दीश्वर के, अञ्जनगिरि शुभकार।
पश्चिम दधिमुख है वापी में, श्वेत वर्ण मनहार।।
जिन मंदिर में जिन प्रतिमाएँ, एक सौ आठ महान्।
जिनके चरण कमल की पूजा, को करते आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई)

यमुना का जल लेकर आए, जिनवर के पद पद्म चढ़ाए।
पूजा करते हम मनहारी, जिन चरणों की मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर में चन्दन घिस लाए, भव सन्ताप नशाने आए।
पूजा करते हम मनहारी, जिन चरणों की मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धवल पूजने लाए, अक्षय पद के भाव बनाए।
पूजा करते हम मनहारी, जिन चरणों की मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित कुसुम थाल भर लाए, काम का रोग नशाने आए।
पूजा करते हम मनहारी, जिन चरणों की मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे शुभ नैवेद्य बनाए, क्षुधा नशाने को हम आए।
पूजा करते हम मनहारी, जिन चरणों की मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के हमने दीप जलाए, मोह महातम हरने आए।
पूजा करते हम मनहारी, जिन चरणों की मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाते अग्नि सहारे, कर्म नाश हो जाएँ हमारे।
पूजा करते हम मनहारी, जिन चरणों की मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस फल यह शुभकारी, चढ़ा रहे हम मंगलकारी।
पूजा करते हम मनहारी, जिन चरणों की मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य बनाया यह अघहारी, पद अनर्घ्य पाएँ मनहारी।
पूजा करते हम मनहारी, जिन चरणों की मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती का दरिया बहे, श्री जिनेन्द्र के द्वार।
अतः चरण में दे रहे, हम भी शांती धार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा- ज्यों पराग है फूल में, त्यों आतम में ज्ञान।
ज्ञान प्रकट करने विशद, करते हम गुणगान।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, अकृत्रिम भगवान।
जयमाला गाकर यहाँ, करते हम गुणगान।।

(ज्ञानोदय छंद)

तीर्थंकर परमेष्ठी बनकर, इस जग का उद्धार किया।
दिव्य देशना देकर के प्रभु, नर जीवन का सार दिया।।
जीव समास मार्गणा चौदह, गुण स्थान बताए हैं।
चौदह कुलकर हुए पूर्व में, कुल का ज्ञान कराए हैं।।1।।
तत्त्वों के श्रद्धान रहित हो, वह मिथ्यात्व कहाता है।
उपशम सम्यक् से गिरता जो, सासादन में आता है।।
गुणस्थान मिश्र है तृतिय, सम्यक् मिथ्या भाव जगें।
दधि गुड़ या चूना हल्दी सम, मिश्रित जैसे भिन्न लगें।।2।।
अविरत सम्यक् दृष्टी चौथा, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
त्रस हिंसा का त्यागी पंचम, देशव्रती कहलाता है।।
हो प्रमाद से युक्त महाव्रत, है प्रमत्त वह गुणस्थान।
अप्रमत्त होता प्रमाद बिन, ऐसा कहते हैं भगवान।।3।।

अष्टम गुणस्थान प्राप्त कर, उपशम क्षायिक श्रेणीवान।
हों परिणाम अपूर्व कहाए, वह अपूर्व शुभ गुणस्थान।।
भेद नहीं सम समयवर्ति में, अनिवृत्ति गुण कहलाए।
सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान शुभ, दशम् लोभ संयुत पाए।।4।।
है उपशान्त मोह ग्यारहवाँ, मोह पूर्ण होवे उपशांत।
बारहवें गुणस्थान में भाई, पूर्ण मोह का होता अन्त।।
सयोग केवली कर्म घातिया, क्षयकर पाते गुणस्थान।
अयोग केवली योग नाशकर, चौदहवाँ पाते स्थान।।5।।
गुण स्थानातीत सिद्ध जिन, सिद्धशिला पर करते वास।
नित्य निरंजन अविनाशी हो, आत्म गुणों का करें प्रकाश।।
समवशरण में दिव्य देशना, देकर करें जगत् कल्याण।
तीर्थंकर जिनवर अनन्त गुण, पाने वाले कहे महान।।6।।
भव्य जीव जिन मार्ग प्राप्त कर, बनते अतिशय महिमावान।
शत इन्द्रों ने चरणों आकर, किया विनत होके गुणगान।।
'विशद' भाव से श्री जिनेन्द्र पद, की पूजा करने आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित कर में लाए।।7।।

दोहा– कोटि सूर्य से भी अधिक, जिनवर ज्योर्तिमान।
पूज्य 'विशद' तीर्थेश हैं, गुण अनन्त की खान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा–31

(स्थापना)

अष्टम् द्वीप रहा नन्दीश्वर, जिसकी पश्चिम दिशा महान।
अञ्जन गिरि के उत्तर वापी, में दधिमुख शुभ रहा प्रधान।।
एक सहस्र योजन ऊँचाई, वाला जानो अपरम्पार।
आह्वानन् जिन बिम्बों का हम, करते भाव सहित उर धार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

क्षीर सिन्धु का निर्मल जल हम, झारी में भर लाए हैं।
जन्म–जरादिक नाश हेतु प्रभु, शरण आपकी आए हैं।।
अञ्जन गिरि के ऊपर जिनगृह, में जिनवर मनहारी हैं।
जिनके चरण कमल में नत हो, अतिशय धोक हमारी है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन में कर्पूर मिला घिस, पूजा करने लाए हैं।
भव तापों का नाश करो प्रभु, शरण आपकी आए हैं।।
अञ्जन गिरि के ऊपर जिनगृह, में जिनवर मनहारी हैं।
जिनके चरण कमल में नत हो, अतिशय धोक हमारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बासमती के शुद्ध धवल यह, तन्दुल धोकर लाए हैं।
अक्षय पद पाने को भगवन्, तुम चरणों में आए हैं।।
अञ्जन गिरि के ऊपर जिनगृह, में जिनवर मनहारी हैं।
जिनके चरण कमल में नत हो, अतिशय धोक हमारी है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कल्प वृक्ष के पुष्प मनोहर, चुनकर के हम लाए हैं।
काम व्यथा के नाश हेतु प्रभु, पूजा करने आए हैं।।
अञ्जन गिरि के ऊपर जिनगृह, में जिनवर मनहारी हैं।
जिनके चरण कमल में नत हो, अतिशय धोक हमारी है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य मनोहर, घृत के शुद्ध बनाए हैं।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
अञ्जन गिरि के ऊपर जिनगृह, में जिनवर मनहारी हैं।
जिनके चरण कमल में नत हो, अतिशय धोक हमारी है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीपक स्वर्ण थाल में, यहाँ जलाकर लाए हैं।
मोह तिमिर के नाशी अनुपम, हमने यहाँ चढ़ाए हैं।।
अञ्जन गिरि के ऊपर जिनगृह, में जिनवर मनहारी हैं।
जिनके चरण कमल में नत हो, अतिशय धोक हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी यह अग्नी में, आज जलाने लाए हैं।
अष्ट कर्म विध्वंश हेतु यह, सादर ले हम आए हैं।।
अञ्जन गिरि के ऊपर जिनगृह, में जिनवर मनहारी हैं।
जिनके चरण कमल में नत हो, अतिशय धोक हमारी है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे फल यह भाँति-भाँति के, थाल में हम भर लाए हैं।
मोक्ष महाफल हमें प्राप्त हो, भाव बनाकर आए हैं।।

अञ्जन गिरि के ऊपर जिनगृह, में जिनवर मनहारी हैं।
जिनके चरण कमल में नत हो, अतिशय धोक हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद अष्ट द्रव्यों का अनुपम, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
पद अनर्घ्य पाने हम स्वामी, पूजा करने आए हैं।।
अञ्जन गिरि के ऊपर जिनगृह, में जिनवर मनहारी हैं।
जिनके चरण कमल में नत हो, अतिशय धोक हमारी है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांती का दरिया बहे, श्री जिनेन्द्र के द्वार।
अतः चरण में दे रहे, हम भी शांती धार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– ज्यों पराग है फूल में, त्यों आतम में ज्ञान।
ज्ञान प्रकट करने विशद, करते हम गुणगान।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नन्दीश्वर शुभ द्वीप की, दक्षिण दिशा विशाल।
दधिमुख के जिन धाम जिन, की गाते जयमाल।।

(शंभू छंद)

शास्वत हैं चेतन की निधियाँ, उनको हमने भुला दिया।
यह चेतन नित्य हमारा है, शुभ ध्यान कभी न स्वयं किया।।
निज पर का ज्ञान जगाकर अब, निज भेद ज्ञान प्रगटाना है।
शुभ सम्यक् रत्न प्राप्त करना है, मिथ्या भूत भगाना है।।1।।
चेतन तारण तरण कहाए, चेतन है जग में गुणवान।
धन कंचन चेतन के आगे, भाई जानो काँच समान।।
शांती का है वास जास में, भ्रांति का ना लेश कहीं।
सुख क्यों खोज रहा परिजन में, साथ जाएगा कोई नहीं।।2।।

है चित् पिण्ड ज्ञान धन तेरा, जिससे तू अनभिज्ञ रहा।
निज सिंधू में रमण किया ना, अतः कर्म का घात सहा।।
दृष्टी मोड़ स्वयं में अपनी, निज के गुण में होय रमण।
निज में रम जाने से सारे, कर्मों का हो जाय समन।।3।।
अष्ट कर्म का नाश किए नर, बन जाते हैं अनुपम सिद्ध।
अक्षय अविनाशी बन करके, हो जाते हैं जगत् प्रसिद्ध।।
ध्याता ध्येय ध्यान है चेतन, अनुपम वीतराग विज्ञान।
चेतन ही ज्ञाता दृष्टा है, चेतन गुण अनन्त की खान।।4।।
साध्य और साधक चेतन है, ब्रह्म स्वरूपी है अविकार।
चेतन है चिद्पिण्ड सर्वगत, अचल अरूपी मंगलकार।।
अचल अबाधक अंतरहित है, सिद्ध शुद्ध चेतन शुभकार।
'विशद' ज्ञान के द्वारा चेतन, नाश करे अपना संसार।।5।।
अकृत्रिम जिन धाम अलौकिक, मंगलमय शास्वत् गाये।
जिन प्रतिमाओं सहित अनादी, धर्म के आलय कहलाए।।
भाव सहित हम पूजा करते, अष्ट द्रव्य का लेकर अर्घ्य।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, पाएँ हे प्रभु ! सुपद अनर्घ्य।।6।।

(छंद घत्तानन्द)

जय जिन चैत्यालय, जिन के आलय, कृत्रिमाकृत्रिम दोय कहे।
जय मंगलकारी, जग उपकारी, सबके मन को मोह रहे ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि स्थितोत्तर दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-32

(स्थापना)

नन्दीश्वर के पश्चिम दिश में, अञ्जन गिरि पूरव में जान।
विरजा वापी प्रथम कहाई, कोंण में रतिकर रहा महान्।।
एक सहस ऊँचा है अनुपम, उच्च ढोल के पोल समान।
जिस पर जिन मन्दिर प्रतिमाओं, का हम करते हैं आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(दोहा)

श्री जिनवर के चरण में, देते जल की धार।
जन्म-जरादिक नाश हों, पाएँ भव से पार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन चर्चित कर रहे, श्री जिनवर के पाद।
भव सन्ताप विनाश हो, मिटे मरण उत्पाद।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल धवल सुगन्ध ले, पूजा करते नाथ।
अक्षय पद पाने प्रभू, दीजे हमको साथ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्पों से यहाँ, पूजा करते आन।
कामबाण विध्वंस हो, करते हम गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यःकामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य यह, सद्य बनाये आज।
क्षुधा रोग का नाश हो, पूर्ण होय मम काज।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप प्रजाल कर, करें आरती नाथ !।
मिथ्या मोह विनाश हो, झुका चरण में माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में दहन कर, पूजा करते दास।
अष्ट कर्म का नाश हो, शिवपुर होय निवास।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल लाए सरस, पूजा हेतु महान।
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, हमको भी भगवान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों में मिला, श्रेष्ठ बनाया अर्घ्य।
शिवपद के राही बनें, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पद्म सरोवर से लिया, धारा देने नीर।
व्याकुल है मन कर्म से, आन बँधाओ धीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– चम्पक वन के पुष्प यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
शिवपथ पर हम भी बढ़ें, आप निभाओ साथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– जिन गुण गाने को हुए, आज यहाँ वाचाल।
रतिकर के जिनबिम्ब की, गाते हम जयमाल।।

(चौबोला छंद)

जीवादिक तत्त्वों का जिसने, समीचीन श्रद्धान किया।
सम्यक् ज्ञान आचरण पाकर, निज आतम का ध्यान किया।।

संवर और निर्जरा करके, अष्ट कर्म का नाश किया।
अनन्त चतुष्टय को पाकर के, केवलज्ञान प्रकाश किया।।1।।
करके योग निरोध आपने, कर्मों का कीन्हा संहार।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, आतम का कीन्हा उद्धार।।
किए कर्म का नाश जहाँ वह, बना तीर्थ अतिशय पावन।
कहलाए निर्वाण क्षेत्र जो, सर्व लोक में मन भावन।।2।।
संत साधना से तीर्थों का, कण–कण पावन हुआ अहा।
पार हुआ भव सागर से वह, अतः क्षेत्र वह तीर्थ कहा।।
तीर्थ क्षेत्र की रज को प्राणी, अपने शीश चढ़ाते हैं।
श्रद्धा सहित वन्दना करके, अनुपम जो फल पाते हैं।।3।।
तीर्थ क्षेत्र का वन्दन करके, तीर्थ रूप हम हो जावें।
कर्मास्रव हो नाश हमारा, भव वन में न भटकावें।।
संत और भगवन्तों के हम, पथगामी बन जाएँ अहा।
उनके गुण पा जाएँ हम भी, अन्तिम यह उद्देश्य रहा।।4।।
संत साधना करके अपने, करते हैं कर्मों का नाश।
रत्नत्रय के द्वारा करते, निज आतम का पूर्ण विकाश।।
मोक्ष महाफल विशद प्राप्त कर, बन जाते हैं अनुपम सिद्ध।
शाश्वत सुख पाने वाले वह, हो जाते हैं जगत प्रसिद्ध।।5।।

दोहा– रतिकर गिरि के शीश पर, शाश्वत् हैं जिनधाम।
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, जिनपद 'विशद' प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-33

(स्थापना)

अष्टम दीप दिशा पश्चिम में, अञ्जनगिरि के पूरब भाग।
रहा वापिका के कोने में, दूजे रतिकर से अनुराग।।
तपे स्वर्ण सम रंग है जिसका, अकृत्रिम जो रहा महान।
जिस पर जिन मंदिर प्रतिमाओं, का हम करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(कुसुमलता छंद)

कूप से निर्मल जल भरकर हम, श्रेष्ठ कलश भर लाए हैं।
नाश हेतु जन्मादिक व्याधी, पूजा करने आए हैं।।
हे जिन तुम हो पूज्य लोक में, हम सब रहे पुजारी हैं।
पार करो भव से अब नौका, आई हमारी बारी है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कश्मीरी केसर चन्दन में, घिसकर के हम लाए हैं।
भवाताप हो नाश प्रभु हम, अर्चा करने आए हैं।।
हे जिन तुम हो पूज्य लोक में, हम सब रहे पुजारी हैं।
पार करो भव से अब नौका, आई हमारी बारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्ध फेन सम उज्ज्वल तन्दुल, धोकर के हम लाए हैं।
अक्षय पद पाने हे भगवान !, आज यहाँ पर आए हैं।।
हे जिन तुम हो पूज्य लोक में, हम सब रहे पुजारी हैं।
पार करो भव से अब नौका, आई हमारी बारी है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प लिए उपवन के, रजत थाल भर लाए हैं।
कामबाण विध्वंश हेतु हम, जिन चरणों में आए हैं।।
हे जिन तुम हो पूज्य लोक में, हम सब रहे पुजारी हैं।
पार करो भव से अब नौका, आई हमारी बारी है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे-मीठे व्यंजन मनहर, सद्य बनाकर लाए हैं।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, भक्त शरण में आए हैं।।
हे जिन तुम हो पूज्य लोक में, हम सब रहे पुजारी हैं।
पार करो भव से अब नौका, आई हमारी बारी है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजत दीप कंचन थाली में, ज्योर्तिमय कर लाए हैं।
मिथ्या मोह विनाश हेतु हम, पूजा करने आए हैं।।
हे जिन तुम हो पूज्य लोक में, हम सब रहे पुजारी हैं।
पार करो भव से अब नौका, आई हमारी बारी है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध से धूप बनाकर, यहाँ जलाने लाए हैं।
अष्ट कर्म हो शीघ्र नाश प्रभु, सेवा में हम आए हैं।।
हे जिन तुम हो पूज्य लोक में, हम सब रहे पुजारी हैं।
पार करो भव से अब नौका, आई हमारी बारी है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फलादि बादाम सुपाड़ी, से यह थाल सजाए हैं।
मुक्ती फल पाने को पद में, भक्त बने हम आए हैं।।

हे जिन तुम हो पूज्य लोक में, हम सब रहे पुजारी हैं।
पार करो भव से अब नौका, आई हमारी बारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य जल से फल तक का, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
पद अनर्घ्य पाने हे भगवन् !, तव चरणों में आए हैं।।
हे जिन तुम हो पूज्य लोक में, हम सब रहे पुजारी हैं।
पार करो भव से अब नौका, आई हमारी बारी है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पद्म सरोवर से लिया, धारा देने नीर।
व्याकुल है मन कर्म से, आन बँधाओ धीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– चम्पक वन के पुष्प यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
शिवपथ पर हम भी बढ़ें, आप निभाओ साथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नंदीश्वर शुभ द्वीप में, रतिकर रहे महान।
उनमें शुभ जिनगृह रहे, करते हम गुणगान।।

(ज्ञानोदय छंद)

लोकालोक के मध्य में भाई, मध्यलोक बतलाया है।
ढाई द्वीप है मध्य में जिसके, मानव लोक कहाया है।।
मध्य में जम्बूद्वीप है जिसके, घेरे लवण समुद्र रहा।
सप्त क्षेत्र छह कुलाचलों युत, गोलाकार स्वरूप कहा।।1।।
जम्बूद्वीप के मध्य सुमेरू, जिसके पूरब पश्चिम भाग।
सीता सीतोदा नदियों से, होते जिसके चार विभाग।।
एक-एक में आठ-आठ शुभ, लघु विदेह बतलाए हैं।
बत्तिस उप विदेह मेरू के, चउ क्षेत्रों में गाये हैं।।2।।
द्वीप धातकी खण्ड दूसरा, लवण समुद्र को घेर रहा।
चउ योजन विस्तार है जिसका, चूड़ीसम जो गोल कहा।।

इष्वाकार गिरी के द्वारा, बटा हुआ है दोनों ओर।
विजय अचलमेरू हैं जिसमें, करते मन को भाव विभोर।।3।।
कालोदधि से द्वीप धातकी, घिरा हुआ है गोलाकार।
मध्य मनुषोत्तर गिरि जिसके, फैल रहा है शुभ मनहार।।
इष्वाकार गिरी के द्वारा, इस के भी दो हुए विभाग।
मंदर विद्युन्माली मेरू, पूरव पश्चिम दोनों भाग।।4।।
इस प्रकार पाँचों मेरू के, सम्बन्धी बत्तिस बत्तीस।
एक सौ आठ क्षेत्र बतलाए, जैनागम में जैन ऋशीष।।
चौथा काल सदा ही रहता, है विदेह के ऊँचे ठाठ।।
एक शतक अरु साठ क्षेत्र में, तीर्थंकर हों एक सौ साठ।5।।
किन्तु न्यूनतम बीस तीर्थंकर, शास्वत रहते हैं विद्यमान।
कोटि पूर्व की आयु पूर्णकर, होते पूर्ण सिद्ध भगवान।।
ढाई द्वीप के बाहर भाई, मानुषोत्तर गिरि रहा महान्।
इसके बाहर द्वीप आठवाँ, नन्दीश्वर भी रहा प्रधान।।6।।
पूर्वादिक प्रत्येक दिशा में, पर्वत बने हैं गोलाकार।
ढोल की पोल समान शोभते, जिन पर बने हैं जिन आगार।।
अकृत्रिम पर्वत हैं जिनगृह, अकृत्रिम हैं जिन भगवान।
यहाँ बैठकर अष्ट द्रव्य से, पूज रहे हम कर गुणगान।।7।।

दोहा– भव्य जीव पूजा करें, होके भाव विभोर।
जिन अर्चा सुखदायिनी, मंगल हो चहुँ ओर।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-34

(स्थापना)

अष्टम दीप का पश्चिम जानो, अञ्जन गिरि जिसको पहिचानो।
दक्षिण में शुभ वापी गाई, जिसके कोंण में रतिकर भाई।।
जिस पर जिनगृह रहे निराले, अकृत्रिम जिनबिम्बों वाले।
जहाँ सुरासुर मिलकर जावें, भक्ति भाव से पूज रचावें।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(नरेन्द्र छंद)

गंगा का जल कलश में भर के, धारा देने लाए।
जन्म-जरादिक नाश होय मम्, चरण शरण में आए।।
पूजा करते भाव सहित हम, हे जिन ! अन्तर्यामी।
शिवपथ की प्रभु राह दिखाओ, करते चरण नमामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बार-बार तन पाकर हमने, उनसे शांति ना पाई।
चंदन से पूजा करते हम, शांति मिले सुखदायी।।
पूजा करते भाव सहित हम, हे जिन ! अन्तर्यामी।
शिवपथ की प्रभु राह दिखाओ, करते चरण नमामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

खण्ड-खण्ड कर दिया सौख्य मम, मोह शत्रु ने भाई।
अक्षत से पूजा करते अब, मिले सौख्य प्रभुताई।।

पूजा करते भाव सहित हम, हे जिन ! अन्तर्यामी।
शिवपथ की प्रभु राह दिखाओ, करते चरण नमामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक को काम बली ने, अपने वश कर डाला।
पूजा करने आए हैं हम, लिए पुष्प की माला।।
पूजा करते भाव सहित हम, हे जिन ! अन्तर्यामी।
शिवपथ की प्रभु राह दिखाओ, करते चरण नमामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा व्याधि है काल अनादी, उसे मैट ना पाए।
व्यंजन सरस बनाकर पद में, पूजा करने लाए।।
पूजा करते भाव सहित हम, हे जिन ! अन्तर्यामी।
शिवपथ की प्रभु राह दिखाओ, करते चरण नमामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर ने जग जीवों को, अन्ध समान किया है।
दीप जला हे नाथ ! शरण में, ज्ञानोद्योत लिया है।।
पूजा करते भाव सहित हम, हे जिन ! अन्तर्यामी।
शिवपथ की प्रभु राह दिखाओ, करते चरण नमामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म यह हमें सताते, इनसे हम घबड़ाए।
सुरभित धूप जलाकर स्वामी, कर्म नशाने आए।।
पूजा करते भाव सहित हम, हे जिन ! अन्तर्यामी।
शिवपथ की प्रभु राह दिखाओ, करते चरण नमामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में हमने कुदेव की, पूजा का फल पाया।
भ्रमण किया चारों गतियों में, अब दर तेरे आया।।
पूजा करते भाव सहित हम, हे जिन ! अन्तर्यामी।
शिवपथ की प्रभु राह दिखाओ, करते चरण नमामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, विशद थाल भर लाए।
पद अनर्घ्य पाने हे भगवन् ! अर्घ्य चढ़ाने आए।।
पूजा करते भाव सहित हम, हे जिन ! अन्तर्यामी।
शिवपथ की प्रभु राह दिखाओ, करते चरण नमामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पद्म सरोवर से लिया, धारा देने नीर।
व्याकुल है मन कर्म से, आन बँधाओ धीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा- चम्पक वन के पुष्प यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
शिवपथ पर हम भी बढ़ें, आप निभाओ साथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- चैत्यालय रतिकर गिरी, पर अकृत्रिम विशाल।
जिनबिम्बों की साथ में, गाते हम जयमाल।।

(मोतियादाम छंद)

त्रैलोक हितंकर धर्म प्रधान, धरें सदृष्टी जीव महान्।
करें निज दर्शन की पहिचान, तवै हो जीवों को निज भान।।
करें जब प्राणी पुण्य विशाल, सुपद पाएँ तब पूज्य त्रिकाल।
तजें प्रभु जी जब स्वर्ग विमान, तवैं हो प्रभु का गर्भकल्याण।।1।।
करें रत्नों की वृष्टि महान्, स्वर्गों से आके देव प्रधान।
प्रभु जब जन्मे तव सुर आय, ऐरावत साथ में अपने ल्याय।।
शचि शिशु को फिर लेकर आय, सुइन्द्र तवे प्रभु दर्शन पाय।
तवै सुर मेरु गिरि ले जाय, खुशी हो प्रभु का न्हवन कराय।।2।।

प्रभु के पग में लक्षण देख, किए प्रभु का शुभ नाम उल्लेख।
तभी सुरराज सुभक्ति जगाए, प्रभु को राजमहल पहुँचाए।।
प्रभु कई पाएँ भोग विलास, तजें फिर भोगन की प्रभु आस।
करें प्रभु जी चउ कर्म विनाश, जगे तब केवल ज्ञान प्रकाश।।3।।
तवै फिर आयें इन्द्र अपार, करें प्रभु की तब जय-जयकार।
शुभ समवशरण रचना सुप्रधान, कीन्हें कुबेर जो श्रेष्ठ महान्।।
खिरी ध्वनि प्रभु की अपरम्पार, करें प्रभु तत्त्वों का विस्तार।
ध्वनि शुभ झेलें गणधर आन, करें जीवों के सुहित बखान।।4।।
जगे कई जीवन में श्रद्धान, जगाएँ वह सब सम्यक् ज्ञान।
शु सम्यक् चारित्र का स्वरूप, रत्नत्रय पाएँ भव्य अनूप।।
किए प्रभु जी फिर ध्यान विशेष, नशाए क्षण में कर्म अशेष।
'विशद' हम जपते तव गुण सार, प्रभु हमको भवसागर तार।।5।।
बने शरणागत दीन दयाल, करी तव चरणों में गुण माल।
जगी है मन में मेरे आस, मिले हमको भी शिवपुर वास।।
रहे नन्दीश्वर में जिन गेह, जगा मेरे मन में स्नेह।
करी हमने यह पूजा आन, मिले शिवपद का विशद विधान।।6।।

(छन्द : धत्तानन्द)

जय-जय जिन स्वामी, त्रिभुवन नामी, जन्म मृत्यु का रोग हरो।
मुक्ती पथगामी, शिव अनुगामी, हमको भी भवपार करो।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-35

(स्थापना)

नन्दीश्वर के पश्चिम दिश में, अञ्जन गिरि का है स्थान।
सजल वापिका जहाँ शोभती, खिले पुष्प हैं आभावान।।
जिसके वाह्य कोंण पे रतिकर, जिसके ऊपर हैं जिनधाम।
आह्वानन् करते जिनवर का, चरणों करके विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छंद)

पद्म सरोवर का निर्मल जल, कलश में भरके लाए हैं।
जन्म जरा हो नाश हमारा, हम पूजा को आए हैं।।
तीर्थंकर जिन मंगलकारी, तीन लोक में पूज्य चरण।
उनके चरणों में गुण पाने, करते भाव सहित अर्चन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ना समझा हमने जीवन को, बश यू ही जीते आए हैं।
चेतन का ज्ञान जगाने को, चंदन यह शीतल लाए हैं।।
तीर्थंकर जिन मंगलकारी, तीन लोक में पूज्य चरण।
उनके चरणों में गुण पाने, करते भाव सहित अर्चन।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भ्रमित हुए सारे जग में, अज्ञानी हो भटकाए हैं।
अब उच्च सुपद अक्षय पाने, अक्षत यह चरण चढ़ाए हैं।।
तीर्थंकर जिन मंगलकारी, तीन लोक में पूज्य चरण।
उनके चरणों में गुण पाने, करते भाव सहित अर्चन।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर की खुशबू को तजकर, हम बाह्य सुखों में भटकाए।
अब कामबाण के नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने को आए।।
तीर्थंकर जिन मंगलकारी, तीन लोक में पूज्य चरण।
उनके चरणों में गुण पाने, करते भाव सहित अर्चन।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन की इच्छा शांत करें, अब आतम का रस आ जाये।
अतएव सरस नैवेद्य प्रभू, यह अर्चा करने हम आए।।
तीर्थंकर जिन मंगलकारी, तीन लोक में पूज्य चरण।
उनके चरणों में गुण पाने, करते भाव सहित अर्चन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोह महातम का विनाश, अब दीप ज्ञान का जल जाए।
चेतन की शक्ती प्रगटाने, यह दीप जलाकर हम लाए।।
तीर्थंकर जिन मंगलकारी, तीन लोक में पूज्य चरण।
उनके चरणों में गुण पाने, करते भाव सहित अर्चन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों ने घेरा है, हम उससे सतत् सताए हैं।
अब जाल काटने कर्मों का, यह धूप जलाने लाए हैं।।
तीर्थंकर जिन मंगलकारी, तीन लोक में पूज्य चरण।
उनके चरणों में गुण पाने, करते भाव सहित अर्चन।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन का चिन्तन करते हम, अब मोक्ष महाफल मिल जाए।
मम मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़े, फल यहाँ चढ़ाने हम लाए।।

तीर्थंकर जिन मंगलकारी, तीन लोक में पूज्य चरण।
उनके चरणों में गुण पाने, करते भाव सहित अर्चन।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जब से हमने दर्शन पाये, तब से शुभ भाव बनाए हैं।
पाने अनर्घ्य पद हे स्वामी, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
तीर्थंकर जिन मंगलकारी, तीन लोक में पूज्य चरण।
उनके चरणों में गुण पाने, करते भाव सहित अर्चन।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पद्म सरोवर से लिया, धारा देने नीर।
व्याकुल है मन कर्म से, आन बँधाओ धीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– चम्पक वन के पुष्प यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
शिवपथ पर हम भी बढ़ें, आप निभाओ साथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– होते हैं तीर्थेश के, गुण अनन्त गंभीर।
जयमाला गाते यहाँ, मिट जाए भव पीर।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय–जय–जय अरहन्त जिनेश्वर, तीन लोक में रहे महान।
निज आतम गुण के अनुरागी, दोष अठारह रहित प्रधान।।
छियालिस मूल गुणों के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकार।
जन्म समय दश अतिशय होते, तीर्थंकर पद विस्मयकार।।1।।
अतिशय रूप प्राप्त करते हैं, हो सुगन्ध तन में शुभकार।
तन होता है स्वेद रहित शुभ, जिनके होता नहीं निहार।।
प्रिय हित वचन बोलने वाले, जिनका बल है अतुल महान।
रुधिर श्वेत होता है अनुपम, एक हजार आठ गुणवान।।2।।

सम चतुष्क संस्थान संहनन, वज्र वृषभ नाराच प्रधान।
दश अतिशय प्रगटाते जिनवर, पाते हैं जब केवल ज्ञान।।
सौ योजन में हो सुभिक्षता, करते हैं जो गगन गमन।
उपसर्गों से हैं विहीन जो, चारों दिश में हो दर्शन।।3।।
अदया भाव से हीन कहें हैं, करते नहीं हैं कवलाहार।
सब विद्या के ईश्वर हैं जिन, ना आँखों में है टिमकार।।
बढ़ते नहीं केश नख जिनके, छाया रहित हों जिन भगवान।
देवोंकृत अतिशय हों चौदह, प्रातिहार्य वसु कहे महान्।।4।।
अर्ध मागधी भाषा अनुपम, फलें सभी ऋतु के फल फूल।
मैत्री भाव रहे जीवों में, मंद वायु चलती अनुकूल।।
दर्पण सम पृथ्वी शोभित हो, जन–जन में हो हर्ष अपार।
परमानन्द रहे सबके मन, धूम रहित हो भू शुभकार।।5।।
धूली कंटक रहित भूमि हो, देव करें जिन की जयकार।
स्वर्ण कमल पग तल में रचते, इन्द्र विशद नभ में शुभकार।।
गंधोदक की वृष्टी होती, वृक्षों पर होवे फल भार।
धूम मेघ से विरहित होवें, सर्व दिशाएँ मंगलकार।।6।।
धर्मचक्र ले चले यक्ष शुभ, मंगल द्रव्य भी चलते साथ।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, जिनवर होते श्री के नाथ।।
छियालिस मूल गुणों को पाते, होते धर्म सभा के ईश।
'विशद' आपके गुण पाने हम, झुका रहे हैं चरणों शीश।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि पश्चिमदिशा स्थित पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-36

स्थापना

अष्टम द्वीप के पश्चिम दिश में, अञ्जनगिरि है पश्चिम ओर।
सुन्दर सजल वापिका भाई, करती मन को भाव-विभोर।।
पश्चिम दिश में रतिकर गिरि है, शोभित होती स्वर्ण समान।
जिसके जिनगृह जिनबिम्बों का, करते हम उर में आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छंद)

गंगा नदी का क्षीर वर्ण सम, श्रद्धा से जल भर लाए।
जन्म-मृत्यु के नाश हेतु हम, श्री जिन चरणों में आए।।
जिनवर की पूजा करने से, शुभ हृदय कली खिल जाती है।
निज गुण की भूली हुई निधी तब, क्षण भर में मिल जाती है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन घिसने से निज सुगन्ध, अपनी नभ में फैलाता है।
निज भवाताप का नाश जीव, जिन पूजा करके पाता है।।
जिनवर की पूजा करने से, शुभ हृदय कली खिल जाती है।
निज गुण की भूली हुई निधी तब, क्षण भर में मिल जाती है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल फैन सम उज्ज्वल अक्षत, थाल में भरके लाए हैं।
अक्षय पद पाने के मन में, हमने भाव बनाए हैं।।
जिनवर की पूजा करने से, शुभ हृदय कली खिल जाती है।
निज गुण की भूली हुई निधी तब, क्षण भर में मिल जाती है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विषय भोग का रोग भयंकर, कहीं नहीं उपचार हुआ।
विषय व्याधि का मारा-मारा, भटका मैं लाचार हुआ।।
जिनवर की पूजा करने से, शुभ हृदय कली खिल जाती है।
निज गुण की भूली हुई निधी तब, क्षण भर में मिल जाती है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग भोजन से मिटता, सोच के मन में भ्रान्त हुआ।
तीन लोक का द्रव खाकर भी, क्षुधा रोग ना शांत हुआ।।
जिनवर की पूजा करने से, शुभ हृदय कली खिल जाती है।
निज गुण की भूली हुई निधी तब, क्षण भर में मिल जाती है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घोर तिमिर मिथ्या का छाया, जिससे सत्पथ नहीं मिला।
दीप जलाया जब श्रद्धा का, तब अनुपम उपमान खिला।।
जिनवर की पूजा करने से, शुभ हृदय कली खिल जाती है।
निज गुण की भूली हुई निधी तब, क्षण भर में मिल जाती है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

करके भी पुरुषार्थ हमारा, कर्मों का ना नाश हुआ।
धूप जलाई कर्मों की तो, केवलज्ञान प्रकाश हुआ।।
जिनवर की पूजा करने से, शुभ हृदय कली खिल जाती है।
निज गुण की भूली हुई निधी तब, क्षण भर में मिल जाती है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल की आशा ले, चतुर्गती में भटकाए।
मोक्ष महाफल मिले जहाँ उस, दर पर कभी नहीं आए।।
जिनवर की पूजा करने से, शुभ हृदय कली खिल जाती है।
निज गुण की भूली हुई निधी तब, क्षण भर में मिल जाती है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम दीन हीन अज्ञानी हैं, कैसे शुभ अर्घ्य बनाएँगे।
चेतन के गुण का अर्घ्य बना, हम प्रभु सम ही बन जाएँगे।।
जिनवर की पूजा करने से, शुभ हृदय कली खिल जाती है।
निज गुण की भूली हुई निधी तब, क्षण भर में मिल जाती है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पद्म सरोवर से लिया, धारा देने नीर।
व्याकुल है मन कर्म से, आन बँधाओ धीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– चम्पक वन के पुष्प यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
शिवपथ पर हम भी बढ़ें, आप निभाओ साथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नंदीश्वर शुभ दीप में, जिनगृह अपरम्पार।
जयमाला गाते यहाँ, नत हो बारम्बार।।

(मुक्तक छंद)

अरे बन्धुओ ! अर्हन्तों ने, सच्चा पथ दिखलाया है।
जिओ और जीने दो सबको, 'विशद' पाठ सिखलाया है।।
मिथ्यातम को भेद ज्ञान से, जिनने पूर्ण हटाया है।
सम्यक् ज्योति जगाकर उर में, श्रद्धा गुण प्रगटाया है।।1।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, घाती कर्म नशाते हैं।
गुण अनन्त के धारी अर्हत्, विशद ज्ञान प्रगटाते हैं।।
धन कुबेर तब समवशरण की, रचना करने आता है।
सब इन्द्रों के साथ में खुश हो, जय–जयकार लगाता है।।2।।
धर्मचक्र सर्वाण्ह यक्ष ले, आगे–आगे चलता है।
सहस सूर्य की आभा वाला, मानो दीपक जलता है।।
सर्व पाप का नाशन हारी, मंगलमय कहलाता है।
पुण्य रूप जो अतिशयकारी, धर्म ध्वज फहराता है।।3।।

जिसे देखकर के सब प्राणी, विनय सहित झुक जाते हैं।
श्रावक जन हाथों में लेकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
मिथ्यावादी भी दर्शन कर, चरणों में नत होते हैं।
धर्म चक्र के शुभ प्रभाव से, अपनी जड़ता खोते हैं।।4।।
परम अहिंसा का संदेशा, जिसके द्वारा जाता है।
सत्य शिवं तीर्थंकर पद की, जो महिमा को गाता है।।
समवशरण में दिव्य देशना, जिनकी पावन होती है।
मूरख से मूरख अज्ञानी, की जो जड़ता खोती है।।5।।
जिसमें सत्य अहिंसा निस्पृह, अनेकांत बतलाया है।
रत्नत्रय अरु सप्त तत्त्व का, जिसमें ज्ञान कराया है।।
जहाँ विकारी भाव और निज, पक्षपात का नाम नहीं।
राग द्वेष या मोह मान का, किन्चित् होता काम नहीं।।6।।
इन्द्रिय सुख या विषय भोग की, जहाँ दीखती आश नहीं।
वहाँ अतिन्द्रिय आत्मिक सुख का, होता विशद प्रकाश सही।।
महापुरुष जो मुक्ती पाए, आगे जो भी पाएँगे।
रत्नत्रय को पाकर अपना, जीवन सफल बनाएँगे।।7।।
जिसके आगे पद सब फीके, अर्हन्तों का पद सच्चा।
पूर्ण बिम्ब के श्रेय प्रदायक, जाने हर बच्चा–बच्चा।।
अर्हत् के जिनबिम्ब हैं शास्वत्, उनको हम भी ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, पद में शीश झुकाते हैं।।8।।

घत्ता– जय–जय अरहन्ता, शिवतिय कन्ता, भव भयहंता सुखकारी।
छियालिस गुणवन्ता, पूजें संता, सौभाग्य अनन्ता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि दक्षिण दिशास्थ पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***गीता छंद*– जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।**
वे आत्मा में लगा कल्मस, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-37

(स्थापना)

नंदीश्वर में पश्चिम भाई, अञ्जन गिरि सोहे सुखदायी।
पश्चिम में वापी शुभ गाई, प्रथम कोंण में गिरि बतलाई।।
पश्चिम रतिकर श्रेष्ठ कहाए, जिस पर जिनगृह श्री जिन गाए।
देव वहाँ पूजा को जावें, कर आह्वान हृदय तिष्ठावें।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छंद)

भव सागर में भटकाए, कर्मों के नाथ सताए।
अब पार लगा दो नैय्या, हे स्वामी आप खिवैय्या।।
हम पूजा यहाँ रचाते, जिनपद में शीश झुकाते।
अब पा जाएँ हम साता, हे नाथ मोक्ष के दाता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चन्दन बहुत लगाया, ना निज का ज्ञान जगाया।
अब दे दो नाथ सहारा, है वन्दन चरण हमारा।।
हम पूजा यहाँ रचाते, जिनपद में शीश झुकाते।
अब पा जाएँ हम साता, हे नाथ मोक्ष के दाता।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय पद ना पाए, पर पद पाकर भटकाए।
यह भूल हुई है भारी, अब माफ करो त्रिपुरारी।।
हम पूजा यहाँ रचाते, जिनपद में शीश झुकाते।
अब पा जाएँ हम साता, हे नाथ मोक्ष के दाता।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पी मोह की मदिरा भाई, हम अपनी सुधि विसराई।
हम काम से बहुत सताए, निज को भी जान ना पाए।।
हम पूजा यहाँ रचाते, जिनपद में शीश झुकाते।
अब पा जाएँ हम साता, हे नाथ मोक्ष के दाता।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा ने जाल बिछाया, हमको उस बीच फँसाया।
हम हुए क्षुधा के रोगी, बश बने रहे भव भोगी।।
हम पूजा यहाँ रचाते, जिनपद में शीश झुकाते।
अब पा जाएँ हम साता, हे नाथ मोक्ष के दाता।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान तिमिर गहराया, मिथ्यातम ने भटकाया।
ना निज स्वरूप को जाना, पर को ही अपना माना।।
हम पूजा यहाँ रचाते, जिनपद में शीश झुकाते।
अब पा जाएँ हम साता, हे नाथ मोक्ष के दाता।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के नाथ सताए, सारे जग में भटकाए।
अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।।
हम पूजा यहाँ रचाते, जिनपद में शीश झुकाते।
अब पा जाएँ हम साता, हे नाथ मोक्ष के दाता।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख दुख का जो फल पाया, तब हर्ष विषाद मनाया।
शिवफल की चाह जगाए, प्रभु द्वार आपके आए।।

हम पूजा यहाँ रचाते, जिनपद में शीश झुकाते।
अब पा जाएँ हम साता, हे नाथ मोक्ष के दाता।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आये, यह अर्घ चढ़ाने लाए।
अब विशद ज्ञान प्रगटाएँ, शिव के राही बन जाएँ।।
हम पूजा यहाँ रचाते, जिनपद में शीश झुकाते।
अब पा जाएँ हम साता, हे नाथ मोक्ष के दाता।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पद्म सरोवर से लिया, धारा देने नीर।
व्याकुल है मन कर्म से, आन बँधाओ धीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– चम्पक वन के पुष्प यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
शिवपथ पर हम भी बढ़ें, आप निभाओ साथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नंदीश्वर शुभ द्वीप में, जिन मंदिर शुभकार।
जयमाला गाते 'विशद', नत हो बारम्बार।।

(शम्भू छंद)

तीर्थेश आपका द्वार श्रेष्ठ, बश मेरा एक ठिकाना है।
हम भूल गये सारे जग को, जब से तुमको पहिचाना है।।
रंगीन राग जग भोगों को, पाकर के सदा लुभाते हैं।
फिर शूल कर्म के चुभते जब, शांती इस दर पे पाते हैं।।1।।
तुमने जड़ चेतन को जाना, फिर भेद ज्ञान प्रगटाया है।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, निज का ही ध्यान लगाया है।।
तप घोर धारकर के तुमने, अपने कर्मों का नाश किया।
चेतन की शक्ती प्रगटाई, निज केवल ज्ञान प्रकाश किया।।2।।
सौधर्म इन्द्र की आज्ञा पा, धनपति कुबेर पद में आता।
रत्नों का समवशरण अनुपम, नत हो आकर के बनवाता।।

सौ इन्द्र चरण में आकर के, भक्ती से शीश झुकाते हैं।
हर्षित होकर के इन्द्र सभी, प्रभु की जयकार लगाते हैं।।3।।
सुर नर पशु आते चरणों में, प्रभु की वाणी सब सुनते हैं।
आध्यात्म सरोवर में मानो, आकर के मोती चुनते हैं।।
हो जाते मालामाल सभी, जो द्वार आपके आते हैं।
लूले-लंगड़े बहरे गूंगे, आदिक सौभाग्य जगाते हैं।।4।।
हे नाथ ! आपके दर्शन को हम, नयन बिछाकर बैठे हैं।
जिनने दर्शन पाये तुमरे, उनके सब संकट मैटे हैं।।
भक्तों का प्रभु कल्याण करो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, हमको भी भव से पार करो।।5।।
जब तक संसार वास मेरा, तब तक चरणों का साथ मिले।
जब तक श्वाँसें चलती मेरी, तब तक प्रभु आशीर्वाद मिले।।
इस देह की देहरी में स्वामी, अब सम्यक् ज्ञान का दीप जले।
हम नाथ जपें निज भावों से, जब तक मेरी यह श्वाँस चले।।6।।
अन्तिम इच्छा हे जिन ! पूरी, अब नाथ आपको करना है।
खाली झोली लेकर आया, वह पूर्ण आपको भरना है।।
हम रत्नत्रय के रत्न प्रभु, इस दर पर पाने आए हैं।
वह रत्न हमें दो 'विशद' आप, जो रत्न आपने पाए हैं।।7।।

दोहा– निज आतम का बोध हो, रत्नत्रय का ज्ञान।
मोक्ष मार्ग पर हम चले, पाएँ जिन कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अञ्जनगिरि षष्ठम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा–38

(स्थापना)

नंदीश्वर के दक्षिण में शुभ, अञ्जन गिरि है अतिशयकार।
जिसकी पूर्व दिशा में दधिमुख, वापी मध्य है अपरम्पार।।
दश हजार योजन ऊँचा है, श्वेत वर्ण का दधी समान।
जिस पर जिनगृह प्रतिमाओं का, करते हैं उर में आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

भवसागर में हम भटक रहे, तृष्णा की शांति नहीं पाई।
प्रभु जन्म–जरादी रोगों की, ना याद कभी हमको आई।।
श्रद्धान् जगाकर हे स्वामी, हम आज यहाँ पर आए हैं।
पूजन करने के हमने शुभ, चरणों सौभाग्य जगाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्रूर कर्म ने सदियों से, संसार ताप में दफनाया।
अध्यात्म ज्ञान का अमृत शुभ, ना हमें कभी भी मिल पाया।।
श्रद्धान् जगाकर हे स्वामी, हम आज यहाँ पर आए हैं।
पूजन करने के हमने शुभ, चरणों सौभाग्य जगाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय चेतन का ध्यान किए, अक्षय पद हमको मिलता है।
अन्तर में श्रद्धा के जगते, उपमान स्वयं ही खिलता है।
श्रद्धान् जगाकर हे स्वामी, हम आज यहाँ पर आए हैं।
पूजन करने के हमने शुभ, चरणों सौभाग्य जगाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की कलियाँ खिलने से, भौंरे जिनपे मड़राते हैं।
चेतन के फूल खिलें उनके, जो काम रोग विनशाते हैं।।
श्रद्धान् जगाकर हे स्वामी, हम आज यहाँ पर आए हैं।
पूजन करने के हमने शुभ, चरणों सौभाग्य जगाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम तन की क्षुधा मिटाने को, सारे जग में भटकाए हैं।
अन्जान रहे निज चेतन से, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्रद्धान् जगाकर हे स्वामी, हम आज यहाँ पर आए हैं।
पूजन करने के हमने शुभ, चरणों सौभाग्य जगाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब राग–द्वेष की सेना को, हम पूर्ण रूप से नाश करें।
हो मोह कर्म का नाश प्रभू, निज चेतन तत्त्व प्रकाश करें।।
श्रद्धान् जगाकर हे स्वामी, हम आज यहाँ पर आए हैं।
पूजन करने के हमने शुभ, चरणों सौभाग्य जगाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप दशांगी जला यहाँ, कर्मों का धूम उड़ायेंगे।
जो लगे अनादी कर्म 'विशद', उनकी भी शक्ति नशाएँगे।।
श्रद्धान् जगाकर हे स्वामी, हम आज यहाँ पर आए हैं।
पूजन करने के हमने शुभ, चरणों सौभाग्य जगाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख के फल में शुभ हर्ष तथा, दुख से भारी हम अकुलाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, फल यहाँ चढ़ाने को लाए।।

श्रद्धान् जगाकर हे स्वामी, हम आज यहाँ पर आए हैं।
पूजन करने के हमने शुभ, चरणों सौभाग्य जगाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम परद्रव्यों के भोगों की, आशा में ही अलमस्त रहे।
ना पद अनर्घ्य पाया हमने, संसार दुखों से त्रस्त रहे।।
श्रद्धान् जगाकर हे स्वामी, हम आज यहाँ पर आए हैं।
पूजन करने के हमने शुभ, चरणों सौभाग्य जगाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पद्म सरोवर से लिया, धारा देने नीर।
व्याकुल है मन कर्म से, आन बँधाओ धीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– चम्पक वन के पुष्प यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
शिवपथ पर हम भी बढ़ें, आप निभाओ साथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– रतिकर गिरि रति सम रहा, जिस पर हैं जिन धाम।
जयमाला गाते यहाँ, जिन पद विशद प्रणाम।।

(शेर चाल)

जय तीर्थनाथ की करें हम आज अर्चना।
जय–जय जिनेन्द्र की करें हम नाथ वन्दना।।
पच्चीस दोष नाश के सद्दर्श पा लिया।
मिथ्यात्व की सत्ता को प्रभु के नशा दिया।। जय तीर्थनाथ...
अनन्तानुबन्धी को प्रभु जी पूर्ण नशाएँ।
सम्यक्त्व प्राप्त करके सद्ज्ञान जगाएँ।। जय तीर्थनाथ...
चारित्र धार आपने आतम को लख लिया।
आत्मानुभूति का सरस भी आप चख लिया।। जय तीर्थनाथ...
जिनराज सुतप धारके कर्मों को नशाते।
प्रभु आत्मा को कुन्दन संयम से बनाते।। जय तीर्थनाथ...

जब कर्म घातिया प्रभु जी पूर्ण विनाशे।
केवल्य ज्ञान क्षण में जिनराज प्रकाशे।।
जय तीर्थनाथ की करें हम आज अर्चना।
जय–जय जिनेन्द्र की करें हम नाथ वन्दना।।
ॐकारमयी देशना भव्यों को सुनाते।
सम्यक्त्व ज्ञान चारित्र तब जीव जगाते।। जय तीर्थनाथ...
सुर–नर–पशु गति के सुजीव शरण में आते।
जिनराज का सुदर्श करके मोद मनाते।। जय तीर्थनाथ...
मुद्रा जिनेन्द्र की है शुभ पुण्य प्रदायी।
होते हैं पुण्यवान करें दर्श जो भाई।। जय तीर्थनाथ...
शास्वत बने जिनालय त्रय लोक में अहा।
शास्त्रों में जिनका वर्णन जिनदेव ने कहा।। जय तीर्थनाथ...
अष्टम सुदीप में भी जिनगेह बने हैं।
चारों तरफ मनोहर उद्यान घने हैं।। जय तीर्थनाथ...
रतिकर गिरि सुरत्नमय शुभकार जानिए।
अकृत्रिम जिनालय जिसमें सु मानिए।। जय तीर्थनाथ...
जिनबिम्ब जिनमें रत्नमयी श्रेष्ठ सोहते।
शुभ वीतराग छवि से भव्यों को मोहते।। जय तीर्थनाथ...
जिनराज के चरण में हम सिर झुका रहे।
शुभ ज्ञान गंग मेरे, उर में सदा बहे।। जय तीर्थनाथ...

दोहा– शिवपुर के वासी प्रभो, शिवपुर का दो वास।
भक्त खड़े हैं द्वार पे, पूरी कर दो आस।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद– **जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।**
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-39

(स्थापना)

अष्टम द्वीप के पश्चिम में शुभ, अञ्जन गिरि का है स्थान।
जिसके उत्तर में वापी के, कोंण में रतिकर रहा महान।।
कञ्चन वर्ण गोल ऊँचा है, जिस पर जिनगृह रहे जिनेश।
यहाँ बैठकर जिन की पूजा, भाव सहित हम करें विशेष।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छंद)

युग-युग से हम जन्म-मरण की, ज्वाला में जलते आये।
अब प्यास बुझाने अन्तस् की, यह नीर कलश में भर लाए।।
सौधर्म इन्द्र चक्री राजा, सब पूजा करते बड़े-बड़े।
हम बने पुजारी चरणों के, हे नाथ ! द्वार पर आज खड़े।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु महाताप में झुलस रहे, पर भावों में हम भटकाए।
अब समता के रसपान हेतु, यह शीतल चन्दन हम लाए।।
सौधर्म इन्द्र चक्री राजा, सब पूजा करते बड़े-बड़े।
हम बने पुजारी चरणों के, हे नाथ ! द्वार पर आज खड़े।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर इन्द्रिय सुख में ही, जीवन कई व्यर्थ गँवाए हैं।
अक्षय अनर्घ्य पद पाने अब, यह पुञ्ज सुअक्षत लाए हैं।।
सौधर्म इन्द्र चक्री राजा, सब पूजा करते बड़े-बड़े।
हम बने पुजारी चरणों के, हे नाथ ! द्वार पर आज खड़े।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

घायल हम काम के बाणों से, सदियों से होते आए हैं।
अब शीलेश्वर बनने स्वामी, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
सौधर्म इन्द्र चक्री राजा, सब पूजा करते बड़े-बड़े।
हम बने पुजारी चरणों के, हे नाथ ! द्वार पर आज खड़े।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है महाभयानक क्षुधा रोग, जिससे भारी तड़फाये हैं।
हो कुशल वैद्य हे नाथ ! आप, नैवेद्य भेंट में लाए हैं।।
सौधर्म इन्द्र चक्री राजा, सब पूजा करते बड़े-बड़े।
हम बने पुजारी चरणों के, हे नाथ ! द्वार पर आज खड़े।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह महातम के नाशक, जग में तुम इक आधार कहे।
अज्ञान तिमिर का नाश करो, हम दीप चरण में जला रहे।।
सौधर्म इन्द्र चक्री राजा, सब पूजा करते बड़े-बड़े।
हम बने पुजारी चरणों के, हे नाथ ! द्वार पर आज खड़े।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ध्यान अग्नि में धूप जला, सारे कर्मों का नाश करें।
अब शुक्ल ध्यान को प्राप्त करें, फिर सिद्ध सुपद को शीघ्र वरें।।
सौधर्म इन्द्र चक्री राजा, सब पूजा करते बड़े-बड़े।
हम बने पुजारी चरणों के, हे नाथ ! द्वार पर आज खड़े।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के फल से पीड़ित हैं, हम मोक्ष सुफल पाने आये।
शास्वत अक्षय पद पाने को, फल यहाँ चढ़ाने को लाये।।

सौधर्म इन्द्र चक्री राजा, सब पूजा करते बड़े-बड़े।
हम बने पुजारी चरणों के, हे नाथ ! द्वार पर आज खड़े।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अष्ट सिद्ध प्रभु के पाने, यह अष्ट द्रव्य कर में लाए।
पाने अनर्घ्य पद शुभ अनुपम, अब नाथ शरण में हम आए।।
सौधर्म इन्द्र चक्री राजा, सब पूजा करते बड़े-बड़े।
हम बने पुजारी चरणों के, हे नाथ ! द्वार पर आज खड़े।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पद्म सरोवर से लिया, धारा देने नीर।
व्याकुल है मन कर्म से, आन बँधाओ धीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा- चम्पक वन के पुष्प यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
शिवपथ पर हम भी बढ़ें, आप निभाओ साथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- दीप सुअष्टम की रही, महिमा अगम अपार।
जयमाला रतिकर गिरी, की गाते शुभकार।।

(रेखता छंद)

तुम जग जीवन के युग द्रष्टा, सद्ज्ञान प्रदाता अर्हन्त देव ।
हे धर्म ! तीर्थ के उन्नायक, पुरुषार्थ साध्य साधन सुदेव ।।
हे तीर्थंकर ! तब वाणी का, सर्वत्र गूँजता जयकारा ।
हे रत्नत्रय के सूत्र धार, तुमने जग से जग को तारा ।।
हे अरिनाशक अरिहंत प्रभु !, कई होते चरणों चमत्कार ।
सद् भक्त आपके द्वारे पर, वन्दन करते हैं बार-बार ।।
हे तीन लोक के नाथ प्रभु!, सर्वज्ञ देव जिन वीतराग ।
हे मानवता के मुक्ति दूत!, न तुमको जग से रहा राग ।।
हित मित प्रिय वचनों को जिनेश, यह नियति सदा दोहराएगी ।
हे परम पिता ! हे जगत ईश !, प्रकृति भी तव गुण गाएगी ।।

तव दर्शन करने से जग के, सारे संकट कट जाते हैं ।
जो चरण शरण में आते हैं, वह मन वांछित फल पाते हैं ।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुख उनके पास न आते हैं ।
वह भी अर्हत् बन जाते हैं, जो अर्हत् प्रभु को ध्याते हैं ।।
जो सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, अरु सम्यक् तप को पाते हैं ।
वह पञ्च महाव्रत समिति पञ्च, पञ्च इन्द्रिय जय भी पाते हैं ।।
मन को स्थिर कर गुप्ती से, षट्आवश्यक का पालन करते ।
निज हाथों करते केशलुंच, शुभ वीतरागता को धरते ।।
करते हैं अतिशय देव कई, चरणों में शीश झुकाते हैं ।
तब देवलोक से देव कई, जिन भक्ती करने आते हैं ।।
प्रभु दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य, सुख अनन्त चतुष्टय पाते हैं ।
फिर केवल ज्ञान प्रगट होता, वसु प्रातिहार्य प्रगटाते हैं ।।
सब ऋद्धि सिद्धियाँ नत होकर, जिनके चरणों में आती हैं ।
जो शरणागत बनकर प्रभु पद, में नत होकर झुक जाती हैं ।।
ऐसा निर्मल पावन पवित्र, जो पद प्रभु तुमने पाया है ।
उस पद, को पाने हेतु प्रभु, मन मेरा भी ललचाया है ।।
जो चलें प्रभु के कदमों पर, वह भी अर्हत् हो जाएगा ।
वह कर्म नाश अपने सारे, फिर मुक्ति वधु को पाएगा ।।
हे धर्म ! ध्वजा के अधिनायक ! हे 'विशद' ज्ञान ज्योति ललाम !।
हे कृपा ! सिन्धु करुणा निधान ! चरणों में हो शत्-शत् प्रणाम।।

छन्द घत्ता- श्री जिनवर स्वामी, अन्तर्यामी, कोटि नमामि शिवदाता ।
हे जगत् उपाशक, पाप विनाशक, अर्हत् प्रभु जग के त्राता ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद- **जो भव्य भक्ती से विशद', यह नंदीश्वर पूजा करें।**
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तर दिशा पूजा प्रारम्भ श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-40

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नंदीश्वर, जिसके उत्तर भाई।
श्याम वर्ण का अञ्जन गिरि है, महिमा कही न जाई।।
योजन सहस चौरासी ऊँचा, जिस पर जिनगृह सोहे।
जिन प्रतिमाएँ भवि जीवों के, मन मधुकर को मोहे।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(माता तू दया करके...)

हम पूजा करने को, यह निर्मल जल लाए।
जन्मादिक रोगों से, हे प्रभु जी घबड़ाए।।
अब पार करो हमको, तव चरण सहारा है।
प्रभु शिव पदवी पाना, शुभ लक्ष्य हमारा है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु काल अनादी से, भव के संताप सहे।
परिजन से मोह किया, अपने वह सभी कहे।।
अब पार करो हमको, तव चरण सहारा है।
प्रभु शिव पदवी पाना, शुभ लक्ष्य हमारा है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जो कुछ चाहा, यह सब नश्वर पाया।
जिस तन में रहते हैं, वह नश्वर है काया।।

अब पार करो हमको, तव चरण सहारा है।
प्रभु शिव पदवी पाना, शुभ लक्ष्य हमारा है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु काम रोग से हम, सदियों के सताए हैं।
तुम वैद्यनाथ अनुपम, तव शरण में आए हैं।।
अब पार करो हमको, तव चरण सहारा है।
प्रभु शिव पदवी पाना, शुभ लक्ष्य हमारा है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा व्याधि से हम, भव-भव भटकाए हैं।
औषधि तव भक्ती की, पाने को आए हैं।।
अब पार करो हमको, तव चरण सहारा है।
प्रभु शिव पदवी पाना, शुभ लक्ष्य हमारा है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह से मोहित हो, कई दुख हमने पाए।
अब ज्ञान का दीप जले, तव पद में हम आए।।
अब पार करो हमको, तव चरण सहारा है।
प्रभु शिव पदवी पाना, शुभ लक्ष्य हमारा है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आँधी में, सारे गुण बिखर गये।
तव भक्ती करके विशद, कई पाए सूत्र नये।।
अब पार करो हमको, तव चरण सहारा है।
प्रभु शिव पदवी पाना, शुभ लक्ष्य हमारा है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से पाप किए, उनके ही फल पाए।
अब मुक्ती फल पाने, यह फल लेकर आए।।
अब पार करो हमको, तव चरण सहारा है।
प्रभु शिव पदवी पाना, शुभ लक्ष्य हमारा है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्मों के फल से, इस जग में भटकाए।
अब मुक्ती पद पाने, यह अर्घ्य बना लाए।।
अब पार करो हमको, तव चरण सहारा है।
प्रभु शिव पदवी पाना, शुभ लक्ष्य हमारा है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नीर लिया यह कूप से, प्रासुक हमने हाथ।
शांतीधारा दे रहे, तव चरणों हे नाथ !।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– खुशबू से महके विशद, सारा यह आकाश।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिवपुर वास।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– रत्नत्रय शिवमार्ग में, जानो उत्तम ढाल।
अञ्जन गिरि के बिम्ब की, गाते हैं जयमाल।।

(ज्ञानोदय छंद)

अतिशय महिमा वंत जिनेश्वर, गुणानन्त पाते स्वामी।
सर्व चराचर के जो ज्ञाता, होते हैं शिवपथ गामी।।
रागादिक सब दोष मुक्त जिन, ध्यान रहा जिनका शुभकार।
भवि जीवों को भव सिन्धू में, प्रभू आप हो इक आधार।।
गुण गाते वचनों के द्वारा, पर प्रभु तो वचन अगोचर हैं।
भक्ती है आपकी शिवदायी, दर्शन भी महा मनोहर है।।
स्तुति गाये जो भक्ती से, अतिशय वो पुण्य कमाता है।

फिर मोक्ष महल का राही वह, नर अतिशीघ्र बन जाता है।।
श्रेष्ठ रहे प्रभुवर इस जग में, ऋषि मुनि शीश झुकाते हैं।
बिन बोले आशीष बिना भी, भव्य जीव फल पाते हैं।।
गुण को माप सके ना कोई, जिनवर अमित कहाते हैं।
कल्पतरू सम भक्त शरण में, इच्छित फल शुभ पाते हैं।।
कीर्ति आपकी मंगलमय है, मंगलमय है पावन नाम।
चर्चा अर्चा भी मंगल है, सिद्धशिला है मंगल धाम।।
पाप विनाशक सौख्य प्रदायक, दर्श किए होवे जीवन।
प्रभू नाम की औषधि अनुपम, भव्यों को है संजीवन।।
सकल मोह क्षय करने वाले, होते लब्धी के स्वामी।
केवलज्ञान जगाकर के जो, बन जाते अन्तर्यामी।।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, पाते क्षायिक ज्ञान विशेष।
कर्म दर्शनावर्ण के नाशी, दर्शन लब्धी पाएँ जिनेश।।
मोह कर्म के नाशी होकर, सम्यक् चारित्र लब्धीवान।
अन्तराय के नशते लब्धी, पाँच प्रकट करते भगवान।।
सर्व कर्म का नाश करें फिर, बन जाते हैं सिद्ध महान्।
ज्ञान शरीरी होकर करते, निजानन्द गुण का रसपान।।
अञ्जन गिरि अञ्जन सम सोहे, ऊँची ढोल की पोल समान।
जिसके ऊपर जिन मन्दिर में, शास्वत् रहते हैं भगवान।।
नाथ ! आपकी पूजा करके, करें आत्मा का कल्याण।
अतः आपके पद में करते, 'विशद' भाव से हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गीता छंद

जो भव्य भक्ती से विशद', यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर अंजनगिरि पूर्वदिशा दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-41

(स्थापना)

नंदीश्वर शुभ द्वीप आठवाँ, उत्तर दिशि शुभकारी।
अञ्जन गिरि के पूर्व दिशा में, दधिमुख है मनहारी।।
दस हजार योजन ऊँचा शुभ, जिस पर जिनगृह गाये।
जिसके जिनबिम्बों की अर्चा, के शुभ भाव बनाए।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छंद)

क्षीरोदधी सम नीर निर्मल, प्राप्त ना कर पाए हैं।
प्रासुक किया ये नीर हे जिन !, पूजने को लाए हैं।।
हम द्वीप अष्टम के जिनालय, और जिनवर के चरण।
अब पूजते हैं भाव से, पाने समाधी युत मरण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप ने भव-भव जलाया, आज हम भी जल रहे।
अज्ञान के कारण स्वयं को, हम स्वयं ही छल रहे।।
हम द्वीप अष्टम के जिनालय, और जिनवर के चरण।
अब पूजते हैं भाव से, पाने समाधी युत मरण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अध्रुव पदार्थों को सदा, पाकर स्वयं अपने कहे।
अक्षय सुपद पाया नहीं, ठगते स्वयं को ही रहे।।
हम द्वीप अष्टम के जिनालय, और जिनवर के चरण।
अब पूजते हैं भाव से, पाने समाधी युत मरण।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भोगे अनेकों भोग हमने, चाह यह जारी रही।
अब वासना की आग मेरी, नाश हो जावे सही।।
हम द्वीप अष्टम के जिनालय, और जिनवर के चरण।
अब पूजते हैं भाव से, पाने समाधी युत मरण।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना की तृष्णा में अनादी, काल से भरमाए हैं।
अब चेतना का सरस व्यंजन, प्राप्त करने आए हैं।।
हम द्वीप अष्टम के जिनालय, और जिनवर के चरण।
अब पूजते हैं भाव से, पाने समाधी युत मरण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक जलाकर मोहतम का, नाश ना कर पाए हैं।
चेतना की ज्ञान ज्योती, प्रज्ज्वलन को आए हैं।।
हम द्वीप अष्टम के जिनालय, और जिनवर के चरण।
अब पूजते हैं भाव से, पाने समाधी युत मरण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव राग के रोगी बने, अरु द्वेष से द्वेशी बने।
बन्धन अनादी कर्म के, पाए विशद जिससे घने।।
हम द्वीप अष्टम के जिनालय, और जिनवर के चरण।
अब पूजते हैं भाव से, पाने समाधी युत मरण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु बीज कर्मों के जलें, फल मोक्ष का हमको मिले।
गुण सिद्ध के पाएँ विशद, उपवन गुणों का मम खिले।।

हम द्वीप अष्टम के जिनालय, और जिनवर के चरण।
अब पूजते हैं भाव से, पाने समाधी युत मरण।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म वैभव से रहित, यह अर्घ्य अनुपम लाए हैं।
शास्वत सुपद मेरा मिले, हे नाथ !, पद में आए हैं।।
हम द्वीप अष्टम के जिनालय, और जिनवर के चरण।
अब पूजते हैं भाव से, पाने समाधी युत मरण।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा के लिए, क्षीर सिन्धु का नीर।
लाए तव चरणों प्रभू, हरो नाथ भव पीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लाए खुशबूदार।
अल्प समय में हे प्रभू !, होय आत्म उद्धार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– श्रेष्ठ धवल दधिमुखगिरी, नन्दीश्वर के धाम।
उसमें जिनगृह बिम्ब पद, बारम्बार प्रणाम।।

(शम्भू छंद)

तीर्थंकर पदवी के धारी, पंच कल्याणक पाते हैं।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र सभी मिल, उत्सव महत् मनाते हैं।।
गर्भ कल्याणक होता है जब, उससे भी छह महिने पूर्व।
गर्भ नगर में रत्नवृष्टि शुभ, मिलकर करते देव अपूर्व।।1।।
माता सोलह स्वप्न देखती, हर्षित होती अपरम्पार।
नृप से उनका सुफल जानती, जिससे हो आनंद अपार।।
नौ महीने या दो सौ सत्तर, दिन का होता गर्भ कल्याण।
स्वर्ग लोक या नरक लोक से, करके आता जीव प्रयाण।।2।।

जन्म के अतिशय कहे गये दश, इनको पावे जीव महान्।
इन्द्र भक्ति करते हैं अतिशय, भाव सहित करते गुणगान।।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराते, चिह्न देखकर देते नाम।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।3।।
इस जग की माया को लखकर, तज देते हैं उससे राग।
कारण पाकर कोई एक भी, धारण करते हैं वैराग।।
परम दिगम्बर मुद्रा धारण, करके जाते वन की ओर।
आत्मध्यान में लीन होय कर, तप धारण करते हैं घोर।।4।।
सम्यक् तप की अग्नी से वह, कर्म घातिया करते नाश।
लोकालोक प्रकाशी अनुपम, करते केवलज्ञान प्रकाश।।
केवलज्ञानी बनकर सारे, जग को करते ज्ञान प्रदान।
जिसके द्वारा भव्य जीव सब, जग में करते निज कल्याण।।5।।
आयु कर्म के साथ अन्य सब, कर्मों का करने को घात।
आत्मध्यान करते हैं फिर वह, केवलज्ञानी जिन समुद्घात।।
अंतर्मुहूर्त मात्र के अन्दर, हो जाता उनका निर्वाण।
एक समय में श्री जिनेन्द्र का, सिद्ध शिला पर होय प्रयाण।।6।।
फिर अक्षय अविचल अखण्ड पद, में होता उनका विश्राम।
ऐसे अनुपम पद पाने को, प्रभु पद करते 'विशद' प्रणाम।।
जिनगृह जिनवर की इस जग में, महिमा अगम अपार कही।
भव्य जीव अर्चा कर पाते, पुण्य योग से सिद्ध मही।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पूर्व दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-42

(स्थापना)

नंदीश्वर के उत्तर दिश में, अञ्जन गिरि सोहे।
जिसके दक्षिण की वापी में, दधिमुख मन मोहे।।
जिस पर जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, हैं मंगलकारी।
जिनके चरणों विशद भाव से, वन्दन शुभकारी।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

सोरठा– **पाई है बहु पीर, राग आग से हम जले।**
भेद ज्ञान का नीर, चढ़ा रहे वह नाशने।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का मिटता ताप, चन्दन के शुभ लेप से।
दूर होय संताप, भव-भव का मेरा प्रभो !।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सिन्धू से नाथ !, हमको पार उतारिए।
चरण झुकते माथ, अक्षत शुभम् चढ़ा रहे।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

होय काम का नाश, शीलेश्वर गुण पा सकें।
पाए आत्म प्रकाश, काम रोग नश जाए मम्।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग विकराल, जिससे सतत सताए हम।
व्यञ्जन लाए थाल, क्षुधा रोग के नाश को।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह विनाशी दीप, जला रहे प्रभु पाद में।
आये चरण समीप, हे प्रभु मोह विनाश को।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

लिए कर्म का भार, तीनों लोक भ्रमाए हैं।
पाए दुःख अपार, रहकर के संसार में।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पाने पद निर्वाण, भक्ती करते भाव से।
करते हम गुणगान, शिवपद पाने के लिए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे यह अर्घ्य, अष्ट द्रव्य का हम यहाँ।
पाएँ सुपद अनर्घ्य, भ्रमण मिटे संसार का।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांतीधारा के लिए, क्षीर सिन्धु का नीर।**
लाए तव चरणों प्रभू, हरो नाथ भव पीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– **पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लाए खुशबूदार।**
अल्प समय में हे प्रभू !, होय आत्म उद्धार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **दीप आठवाँ जानिए, नन्दीश्वर है नाम।**
जयमाला हम गा रहे, वहाँ बने जिनधाम।।

(मदावलिप्त कपोल छंद)

तीर्थंकर अरहंत नमस्ते, वीतराग गुणवन्त नमस्ते।
भव भय हरता वीर नमस्ते, शिवसुख कर्ता सीर नमस्ते।।
पाप ताप हर इन्दु नमस्ते, सुख वर्धक गुण सिन्धु नमस्ते।
शिव शंकर कामेश नमस्ते, परमातम परमेश नमस्ते।।
जन्म-जरा-दुखहार नमस्ते, तीर्थंकर मुख चार नमस्ते।

वेद ज्ञान श्रुत पार नमस्ते, केवल दृगधर सार नमस्ते।।
हरिहर ब्रह्मा विष्णु नमस्ते, जग तारक भ्राजिष्णु नमस्ते।
भीम अर्ध नारीश नमस्ते, विशद ज्ञान धारीश नमस्ते।।
चन्द्र कला धर ज्येष्ठ नमस्ते, परम पूज्य परमेष्ठि नमस्ते।
महाकंद सुखकंद नमस्ते, मिथ्यातम हर चंद नमस्ते।।
सदानन्द आनन्द नमस्ते, शत् इन्द्रादिक वंद्य नमस्ते।
निर आकुल निर्वान नमस्ते, जैन धरम की शान नमस्ते।।
आदि अन्त अविरोध नमस्ते, निष्कलंक महा बोध नमस्ते।
अतिशय जिन अभिराम नमस्ते, निरालम्ब निर्नाम नमस्ते।।
चिदानन्द सर्वज्ञ नमस्ते, परम धरम धर्मज्ञ नमस्ते।
निराकार श्रीमान् नमस्ते, वृषभेश्वर वृषभान नमस्ते।।
वीतराग विज्ञान नमस्ते, चिन्मूरत अम्लान नमस्ते।
लोकालोक विलोक नमस्ते, हे जिनवर ! आलोक नमस्ते।।
निर अम्बर निकलंक नमस्ते, शुद्ध बुद्ध निःशंक नमस्ते।
मत्सर मन्मथ चीर नमस्ते, मोह मल्ल हर धीर नमस्ते।।
निराकार निराहार नमस्ते, परम धरम दातार नमस्ते।
चिन्मूरत निरवेद नमस्ते, निर आमय निरखेद नमस्ते।।
सरल पाप हर्तार नमस्ते, सरल धर्म कर्त्तार नमस्ते।
सप्त भंग के ईश नमस्ते, द्वैताद्वैत मुनीश नमस्ते।।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध नमस्ते, ऋद्धि सिद्धिवर वृद्धि नमस्ते।
मुक्ति वधू के कंत नमस्ते, जय-जय-जय जयवन्त नमस्ते।।

दोहा- **दर्शज्ञान सुख वीर्य युत, धर्मामृत दातार।**
'विशद' ब्रह्म में लीन यति, पुण्य तीर्थ करतार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद- **जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।**
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीप उत्तर अंजनगिरि पश्चिम तृतीय दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-43

(स्थापना)

नंदीश्वर वर द्वीप आठवाँ, जिसकी उत्तर दिशा महान।
अञ्जन गिरि की पश्चिम वापी, में दधिमुख शुभ रहा प्रधान।।
जिसके ऊपर जिन मन्दिर है, जिन प्रतिमाएँ मंगलकार।
आह्वानन् करते हम उर में, विशद भाव से बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(नरेन्द्र छंद)

भेदज्ञान का निर्मल जल शुभ, आतम दाह मिटाए।
दर्शन कर सद् दर्शन पाके, जन्म मरण नश जाए।।
नन्दीश्वर के जिनमंदिर की, पूजा यहाँ रचाते।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन से भी शीतल, पूजन शीतल कारी।
वीतराग जिनवर की अर्चा, भवाताप दुखहारी।।
नन्दीश्वर के जिनमंदिर की, पूजा यहाँ रचाते।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्म चक्षु से दिखता है जो, निश्चय क्षय हो जाए।
ज्ञानगम्य है सिद्ध परम पद, अक्षय पद कहलाए।।
नन्दीश्वर के जिनमंदिर की, पूजा यहाँ रचाते।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान बाण है काम बाण का, जग में नाशनकारी।
सहस अठारह शील के स्वामी, श्री जिन ब्रह्म विहारी।।
नन्दीश्वर के जिनमंदिर की, पूजा यहाँ रचाते।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ शरीर की जड़ द्रव्यों से, क्षुधा मिटाते आए।
क्षुधा मिटाने को चेतन की, चरू चढ़ाने लाए।।
नन्दीश्वर के जिनमंदिर की, पूजा यहाँ रचाते।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म ज्ञान पर, मेघ पटल बन छाए।
मोहित होकर के विषयों में, उसे हटा ना पाए।।
नन्दीश्वर के जिनमंदिर की, पूजा यहाँ रचाते।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्ता भोक्ता नहीं कर्म का, जीव अबन्धक गाया।
पर का कर्ता बना रहा तो, निज को जान ना पाया।।
नन्दीश्वर के जिनमंदिर की, पूजा यहाँ रचाते।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शुभाशुभ करे जीव जो, उसका ही फल पाए।
मोक्ष महाफल पाने के ना, अब तक भाव बनाए।।

नन्दीश्वर के जिनमंदिर की, पूजा यहाँ रचाते।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पदार्थ का मूल्य समझकर, उसकी महिमा गाई।
है अनर्घ शास्वत पद मेरा, उसकी याद ना आई।।
नन्दीश्वर के जिनमंदिर की, पूजा यहाँ रचाते।
जिनबिम्बों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा के लिए, क्षीर सिन्धु का नीर।
लाए तव चरणों प्रभू, हरो नाथ भव पीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लाए खुशबूदार।
अल्प समय में हे प्रभू !, होय आत्म उद्धार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नन्दीश्वर शुभ दीप में, हैं जिनेन्द्र के धाम।
भाव सहित जिनपद विशद, बारम्बार प्रणाम।।

(चौबोला छंद)

कर्म घातिया के नशते ही, जिनवर पाते केवलज्ञान।
छियालिस मूलगुणों को पाने, वाले होते हैं भगवान।।
समवशरण इन्द्राज्ञा पाकर, रचना करता धनद महान।
पाँच हजार धनुष भूतल से, अधर में रहते हैं भगवान।।
चारों दिश में मणिमय सीढ़ी, शोभित होतीं बीस हजार।
प्राणी चढ़ते हैं मुहूर्त में, अतिशय यह जानो शुभकार।।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, सुनकर भ्रान्ती मिट जाए।
जाति विरोधी क्रूर पशू भी, आपस में मैत्री पाए।।
जिनदर्शन करने वाले कोई, सत् श्रद्धान जगाते हैं।
देशव्रतों को धारण करके, व्रती श्रेष्ठ बन जाते हैं।।

कोई महाव्रतों को धारण, करने वाले होते हैं।
कोई अपने अन्तर मन की, आके जड़ता खोते हैं।।
भक्ति भाव से श्री जिनेन्द्र के, गुण गाते हैं नर-नारी।
जो भी जैसी आस लगाते, पूर्ण तृप्त होवे सारी।।
प्रभु का ध्यान लगाने वाले, अंधे आँखों को पावें।
बहरे जिन भक्ती करने से, कान से सुनने लग जावें।।
भार्यार्थी भार्या को पावें, पुत्रार्थी को पुत्र मिले।
धन अर्थी को मिले सम्पदा, हर्षित हो मन खूब खिले।।
सर्व मनोरथ पूरे होते, श्री जिनेन्द्र का दर्श किए।
दुख दरिद्र से मुक्ती पावें, जिन चरणों में ढ़ोक दिए।।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, में तत्त्वों का है व्याख्यान।
गणधर झेला करते हैं जो, भाव सहित करते गुणगान।।
द्रव्य तत्त्व अरु नव पदार्थ शुभ, अस्तिकाय का है वर्णन।
अनेकान्त अरु स्याद्वाद का, जिसमें किया गया मंथन।।
ॐकारमय दिव्य ध्वनि में, द्वादशांग का होता सार।
मंगलमय शुभ दिव्य देशना, सप्त भंग का है आधार।।
नन्दीश्वर के जिन मंदिर में, रत्नमयी जिनबिम्ब महान।
अर्घ्य चढ़ाकर उनकी पूजा, करके करते हैं गुणगान।।

दोहा- दिव्य देशना सुन सभी, हरते निज अज्ञान।
शिव पद के राही बनें, पावे सम्यक् ज्ञान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पश्चिम दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मस, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर अंजनगिरि उत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-44

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नंदीश्वर, जिसकी उत्तर दिश शुभकार।
अञ्जनगिरि के उत्तर में शुभ, चौथा दधिमुख अपरम्पार।।
अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, जिन प्रतिमाएँ रही महान्।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छंद)

गुण अनन्त को पाकर भी हम, भव सिन्धू में भटक रहे।
जल समान निर्मल मन पाकर, त्रय रोगों में अटक रहे।।
अकृत्रिम जिनगृह जिनबिम्बों, की पूजा करने आये।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र के, चरण हृदय में बैठाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान से हीन रहे हम, तन की तपन मिटाई है।
चन्द्र चाँदनी से भी शीतल, निज की याद ना आई है।।
अकृत्रिम जिनगृह जिनबिम्बों, की पूजा करने आये।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र के, चरण हृदय में बैठाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण विध्वंसी पर्यायों को, पाकर सब कुछ भूल गये।
अक्षय पद देने वाले कई, जीवन यूँ निर्मूल गये।।
अकृत्रिम जिनगृह जिनबिम्बों, की पूजा करने आये।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र के, चरण हृदय में बैठाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुगन्धित होकर, फिर भी मुरझा जाते हैं।
आतम के गुण की खुशबू को, नहीं याद में लाते हैं।।
अकृत्रिम जिनगृह जिनबिम्बों, की पूजा करने आये।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र के, चरण हृदय में बैठाए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की आशा ने हमको, इस जग में भटकाया है।
चित् चैतन्य स्वरूप हमारा, उसको जान ना पाया है।।
अकृत्रिम जिनगृह जिनबिम्बों, की पूजा करने आये।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र के, चरण हृदय में बैठाए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाए हैं अनादि से, ज्ञान दीप ना जल पाया।
मिथ्या मार्ग कषायों का ही, मार्ग आज तक अपनाया।।
अकृत्रिम जिनगृह जिनबिम्बों, की पूजा करने आये।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र के, चरण हृदय में बैठाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द ज्ञान पाकर के हमने, निज को ज्ञानी मान लिया।
कर्म शत्रु ने हमें सताया, चेतन का ना ध्यान किया।।
अकृत्रिम जिनगृह जिनबिम्बों, की पूजा करने आये।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र के, चरण हृदय में बैठाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव पद सर्व पदों से उत्तम, भव्य जीव वह पाते हैं।
पुण्य कर्म के फल से संयम, पाकर ध्यान लगाते हैं।।

अकृत्रिम जिनगृह जिनबिम्बों, की पूजा करने आये।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र के, चरण हृदय में बैठाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाकर के भव-भव में, पद अनर्घ्य ना पाए हैं।
अब अनर्घ पद पाने को हम, अनुपम अर्घ्य बनाए हैं।।
अकृत्रिम जिनगृह जिनबिम्बों, की पूजा करने आये।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र के, चरण हृदय में बैठाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा के लिए, क्षीर सिन्धु का नीर।
लाए तव चरणों प्रभू, हरो नाथ भव पीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा- पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लाए खुशबूदार।
अल्प समय में हे प्रभू !, होय आत्म उद्धार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- धवल गिरी दधिमुख जिसे, कहते जग के जीव।
जिनगृह जिन की अर्चना, से हो पुण्य अतीव।।

(चौपाई)

केवलज्ञान के धारी जानो, तीर्थंकर चौबिस पहिचानो।
तीन काल में होते भाई, भरत क्षेत्र में है प्रभुताई।।
पाँचों कल्याणक के धारी, मुनिवर बनते हैं अनगारी।
घोर तपस्या करने वाले, मुनिवर जग से रहे निराले।।
कर्म घातिया पूर्ण विनाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
समवशरण आ देव रचाते, चरणों में आ शीश झुकाते।।
श्रद्धा से जय जय जय गाते, गुण महिमा कोइ कह न पाते।
सौ योजन सुभिक्षता होवे, व्याधी रोग आपदा खोवे।।
समवशरण महिमा शुभकारी, होती जग में मंगलकारी।
तीन गती के प्राणी आते, दिव्य ध्वनि सुन ज्ञान जगाते।।

निकट भव्य जो होते प्राणी, सुनकर वे जिनवर की वाणी।
सम्यक् दर्शन पाते प्राणी, भव्य जीव जो होते ज्ञानी।।
देशव्रती कोई बन जाते, कोई उत्तम संयम पाते।
कोई केवलज्ञान जगाते, कोई मोक्ष महल को जाते।।
समवशरण में जाने वाले, भव्य जीव शुभ रहे निराले।
ऐरावत भी पाँच बताए, जम्बूद्वीप उत्तर में गाए।।
धातकी खण्ड में दो शुभ जानो, पुष्करार्ध में भी दो मानो।
प्रत्येक में चौबिस जिन गाए, छियालिस गुणधारी बतलाए।।
जन्म के अतिशय जो शुभ पाते, केवलज्ञान के भी दश पाते।
देवों कृत चौदह बतलाए, प्रातिहार्य शुभ अष्ट गिनाए।।
अनन्त चतुष्टय पाते स्वामी, मुक्ती पथ के शुभ अनुगामी।
भव बन्धन से मुक्ती पाते, सिद्ध शिला पर धाम बनाते।।
अव्याबाध सौख्य के धारी, सिद्ध श्री पाते शुभकारी।
होते सुख अनन्त के भोगी, निज स्वभाव के जो उपयोगी।।
सिद्धबिम्ब की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
तुमने जिस पद को प्रभु पाया, उसका हमने लक्ष्य बनाया।।
गुण गाकर हम गुण प्रगटाएँ, यही भावना हृदय सजाएँ।
मन-वच-तन से शीश झुकाते, तीन योग से तव गुण गाते।।

दोहा- तीर्थंकर पद के धनी, तुम हो पूज्य त्रिकाल।
करते चरणों वंदना, कटे कर्म जंजाल।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ दधिमुखगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-45

(स्थापना)

शुभ द्वीप नंदीश्वर मनोहर, दिशा उत्तर जानिए।
अञ्जनगिरि के पूर्व वापी, कोंण में शुभ मानिए।।
रतिकर बना है श्रेष्ठ जिस पे, शुभ जिनालय है सही।
अनुपम अलौकिक जिन प्रभु की, लोक में महिमा रही।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(भुजंग प्रयात)

नीर गंगा का शीतल सुगन्धित लिया, छानकर के जिसे श्रेष्ठ प्रासुक किया।
पूजते आज हम श्री जिनधाम को, प्राप्त करना हमें श्रेष्ठ शिवधाम को।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध चन्दन घिसा के चरण चर्चते, देह की दाह नाशो प्रभु अर्चते।
पूजते आज हम श्री जिनधाम को, प्राप्त करना हमें श्रेष्ठ शिवधाम को।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ तन्दुल शशी रश्मि सम श्वेत हैं, ढोक चरणों में आके सभी देत हैं।
पूजते आज हम श्री जिनधाम को, प्राप्त करना हमें श्रेष्ठ शिवधाम को।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सुरभित कुसुम थाल में भर लिए, जिन प्रभु के चरण आन अर्पित किए।
पूजते आज हम श्री जिनधाम को, प्राप्त करना हमें श्रेष्ठ शिवधाम को।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ नैवेद्य यह भर लिए थाल में, पूजते आत्म तृप्ति हो तत्काल में।
पूजते आज हम श्री जिनधाम को, प्राप्त करना हमें श्रेष्ठ शिवधाम को।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप ज्योती लिए आरती के लिए, मोह हर जो कही भारती के लिए।
पूजते आज हम श्री जिनधाम को, प्राप्त करना हमें श्रेष्ठ शिवधाम को।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घट में शुभम् धूप अनुपम जले, कर्म का नाश हो अन्त मुक्ती मिले।
पूजते आज हम श्री जिनधाम को, प्राप्त करना हमें श्रेष्ठ शिवधाम को।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ ताजे श्रीफल से पूजा करें, मोक्षफल प्राप्त कर भव की बाधा हरें।
पूजते आज हम श्री जिनधाम को, प्राप्त करना हमें श्रेष्ठ शिवधाम को।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों का यह अर्घ्य हम लाए हैं, श्रेष्ठ शाश्वत सुपद प्राप्ति को आए हैं।
पूजते आज हम श्री जिनधाम को, प्राप्त करना हमें श्रेष्ठ शिवधाम को।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा दे रहे, शांती पाने नाथ।
मुक्ती पथ में आपका, रहे हमेशा साथ।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पाञ्जलि करते विशद, चरण कमल में आज।
भव सिन्धू से मुक्त हो, पाने शिव पद राज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– नन्दीश्वर शुभ दीप में, रतिकर गिरि पर श्रेष्ठ।
जिनगृह में जिनबिम्ब के, होते दर्श यथेष्ठ।।

(तर्ज – हे दीन बंधु श्रीपति)

जय–जय जिनेन्द्र, वीतराग देव हमारे ।
सर्वज्ञ प्रभु जिनवर हैं, जग में सहारे ।।
जय जिनवर के बिंब का, गुणगान हम करें ।
जय वीतराग मुद्रा का, ध्यान हम करें ।।
जय–जय जिनेन्द्र के, सुचैत्य रत्नमई हैं ।
कृत्रिम–अकृत्रिम द्वय, कर्म क्षई हैं ।।
संस्थान समचतुष्क, शुभ देह का कहा ।
सुन्दर ललाम जिनवर के, बिम्ब का रहा।।
है ध्यान रूप मुद्रा, पर्यंक आसनी।
है भव्य भक्त के लिए, जो राग नाशिनी।।
जो दर्श करें भव्य जीव, भक्ति भाव से।
होते हैं पार भव से, सम्यक्त्व नाव से।।
यह वीतराग मुद्रा, जग में महान् है।
होती नहीं जगत् में, इसके समान है।।
जय ऊर्ध्व अधो मध्य, त्रय लोक में रहे।
जिन चैत्य सर्वलोक में, असंख्यात जिन कहे।।
नासाग्रदृष्टि जिनकी, शुभ निर्विकार है।
महिमा अनंत जिनकी, इसका न पार है।।
जय धातु उपल रत्न के, जिन चैत्य हमारे।
भव्यों को श्रद्धा हेतू, हैं श्रेष्ठ सहारे।।
करते हैं दर्श मूर्ति में, हम मूर्तिमान का।
हो जाय उदय पल में ही, सद् श्रद्धान का।।

जो भाव सहित चैत्य का, अभिषेक शुभ करे।
वह कोष पुण्य योग से, अपना स्वयं भरे।।
जो अष्ट द्रव्य लेकर के, पूज रचाते।
अरु भक्तिभाव से प्रभु, गुणगान भी गाते।।
वह पुण्य के सुफल से, बहु संपदा पाते।
अरु जीवन का अंत करके, स्वर्ग में जाते।।
फिर स्वर्गों से चय करके, इस लोक में आते।
अरु संयम को धारके, सब कर्म नशाते।।
वह कर्मों का नाश करके, सद्ज्ञान जगाते।
शिवपुर में जाके अविनाशी, सौख्य वो पाते।।
ऐसे जिन चैत्य की, हम वंदना करें।
शुद्ध अष्ट द्रव्य लेकर के, अर्चना करें।।
जीवन में अपने हम भी शुभ, पुण्य जगाएँ।
संयम को धार करके, हम कर्म नशाएँ।।
हम 'विशद' ज्ञान पाकर के, मोक्ष को पाएँ।
अरु शिव सुख को पाकर के, मौज मनाएँ।।

(छन्द घत्तानंद)

जय कृत्रिमाकृत्रिमा, श्री जिन प्रतिमा, को वंदन है भाव भरा।
श्री जिन गुणगाया, पूज रचाया, उनके चरणों शीश धरा।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-46

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, उत्तर दिशा रही शुभकार।
अञ्जन गिरि के पूर्व दिशा में, वापी रही सुमंगलकार।।
दूजा रतिकर रहा कोंण में, जिस पर जिनगृह जिन भगवान।
विशद हृदय के आसन पर, हम करते हैं प्रभु का आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छंद)

हमने जल बहुत पिया है, ना समरस पान किया है।
जिनगृह हम पूज रचाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव ताप नशाने आए, शुभ गंध चढ़ाने लाए।
जिनगृह हम पूज रचाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत शुभ यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी हम पाएँ।
जिनगृह हम पूज रचाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शील सम्पदा पाएँ, सुरभित यह पुष्प चढ़ाएँ।
जिनगृह हम पूज रचाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
जिनगृह हम पूज रचाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ज्ञान दीप प्रजलाएँ, मिथ्यातम दूर भगाएँ।
जिनगृह हम पूज रचाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह ताजी धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
जिनगृह हम पूज रचाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोक्ष महाफल पाएँ, फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ।
जिनगृह हम पूज रचाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अर्घ्य चढ़ाने लाए, तुमसा बनने को आए।
जिनगृह हम पूज रचाएँ, जिनपद में शीश झुकाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– तेज पुञ्ज ज्योती परम, विश्व वंद्य मुनिनाथ।
शांतीधारा दे रहे, झुका चरण में माथ।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– अष्ट कर्म रज नाशकर, बने आप जिनराज।
पुष्पाञ्जलि करते 'विशद', सुनो अरज यह आज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

जयमाला

दोहा– दीप आठवाँ जानिए, नन्दीश्वर है नाम।
जयमाला हम गा रहे, वहाँ बने जिनधाम।।

(शम्भू छन्द)

पर निमित्त व्यवहार त्याग कर, पाया निज का शुद्ध स्वरूप।
बिन कारण जग पालक हो तुम, वन्दन करते सुर–नर–भूप।।
पर सुख–दुख कारण विनाश कर, पर के सुख–दुख शक्ती धार।
नित नव जन्म रीति के नाशी, सर्व लोक व्यापी शुभकार।।1।।

लीला हास विलास नाशकर, निज स्वरूप में करें प्रकाश।
क्रिया–कलाप शयनाशन आदिक, तजकर शिवपद कीन्हें वास।।
काम दाह भोगादी विरहित, निजानन्द निर्द्वन्द अनूप।
शुद्ध निरंजन अमल ज्ञानमय, अव्यावाध हुए चिद्रूप।।2।।

कर्म मर्म वन हन कुठार से, कीन्हा सम्यक् ज्ञान प्रकाश।
वन अग्नी के हनन हेतु जल, निज शक्ती का किए विकाश।।
नभ की सीमा नहीं है कोई, नहीं काल का अन्त रहे।
सुगुण अनन्तानन्त आपके, अक्षय निधि भगवन्त कहे।।3।।

ज्ञान सूरि के मुख दृश से हो, सुधा जलधि आनन्द प्रवाह।
परम शांति की खान आप हैं, जिसकी नहीं है कोई थाह।।
आत्मलीन होके विकल्प का, किया पूर्णतः तुमने नाश।
स्वानुभूति में स्थित होकर, कीन्हा केवलज्ञान प्रकाश।।4।।

दर्शन ज्ञान सुगुण स्वाभाविक, कहे असाधारण जो स्वभाव।
राग-द्वेष आदी विभाव गुण, उनका कीन्हा पूर्ण अभाव।।
स्वाभाविक गुण पर्यायों को, पाया तुमने भली प्रकार।
स्पर्शादिक पर गुण का भी, किया आपने है परिहार।।5।।

अव्यय अविनाशी अखण्ड पद, पाया तुमने मुक्ती धाम।
नाश किया संसार भ्रमण का, प्राप्त किया शिवपद विश्राम।।
गुण अनन्त प्रगटाए तुमने, किया कर्म का पूर्ण विनाश।
सुख अनन्त में रमण किए प्रभु, निज स्वभाव में कीन्हा वास।।6।।

भव्य जीव तव अर्चा करके, पाते सम्यक् दर्शन ज्ञान।
आत्म तत्त्व प्रगटाने वाले, गुण गाते हैं सर्व प्रधान।।
'विशद' भावना भाते हैं हम, तव चरणों पाएँ विश्राम।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।7।।

दोहा- महामंत्र गुणगान तव, नर जीवन का सार।
विघ्न विनाशक लोक में, सब गुण का दातार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-47

(स्थापना)

द्वीप नंदीश्वर अष्टम जान, दिशा उत्तर जिसकी पहिचान।
बीच में अञ्जन गिरि के पूर्व, तीसरा रतिकर रहा अपूर्व।।
बने जिसके ऊपर जिनगेह, विशद जिनबिम्ब से मेरा सनेह।
करें पूजा सुर असुर महान, हृदय में हम करते आह्वान।।

दोहा- नंदीश्वर शुभ द्वीप के, जिनगृह रहे महान।
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (शम्भू छंद)

भव भोगों में फँसकर स्वामी, जीवन यह व्यर्थ गँवाया है।
ना जन्म मरण से छुटकारा, हमको अब तक मिल पाया है।।
हे प्रभू ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अन्तरमन शीतल करने, चन्दन घिसकर के लाए हैं।
क्रोधादि कषाए पूर्ण नाश, निज शान्ती पाने आए हैं।।
हे प्रभू ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन की निर्मलता पाने, हम चरण शरण में आए हैं।
शास्वत अक्षय पद पाने को, यह अक्षय अक्षत लाए हैं।।

हे प्रभू ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु काम वासना से वासित, होकर सारा जग भटकाए।
अब काम अग्नि का रोग नशे, हम पुष्प चढ़ाने को लाए।।
हे प्रभू ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा दुख देती है हमको, छुटकारा पाने हम आए।
अब क्षुधा मिटाने को प्रभुवर, नैवेद्य चढ़ाने यह लाए।।
हे प्रभू ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति जले अनुपम, अंधियारा दूर भाग जाए।
यह दीप जलाकर हे स्वामी, हम मोह नशाने को आए।।
हे प्रभू ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप जलाते अग्नी में, क्षय कर्मों का प्रभु हो जाए।
शिवपद के राही बन जाएँ, मम् मन मयूर शुभ हर्षाए।।
हे प्रभू ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ा रहे यह शुभकारी, भव सिन्धु से हम मुक्ती पाएँ।
हे करुणा सागर दया करो, हम मोक्ष महाफल पा जाएँ।।
हे प्रभू ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू, दीपक शुभ धूप जलाए हैं।
फल रखकर अनुपम अर्घ्य बना, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
हे प्रभू ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– निज आतम के ध्यान से, मिले आत्म आनन्द।
शांतीधारा दे रहे, पाने सहजानन्द।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– आत्म ज्योति प्रगटित किए, अखिल विश्व के नाथ।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, चरण झुकाते माथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– शास्वत है रतिकरगिरि, हैं जिनबिम्ब त्रिकाल।
शास्वत पद पाने यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

हे शुद्ध सनातन अविकारी, हे नित्य निरंजन मोक्ष धाम।
हे महाधैर्य ! हे अविनाशी !, तव चरणों में शत्–शत् प्रणाम।।
हे मोहजयी ! हे कर्मजयी !, तुमने कषाय पर जय पाई।
मोहित करने को मोह कर्म, ने अपनी शक्ती अजमाई।।1।।
उदयागत कर्मों ने अपना, शक्तिशः जोर लगाया था।
पर नाथ आपकी समता के, आगे न जोर चल पाया था।।
कभी क्रोध ने जोर लगाया था, कभी मान उदय में आया था।
माया कषाय अरु लोभोदय, का भी न जोर चल पाया था।।2।।

मिथ्यात्व ने मति मिथ्या करने, हेतू भी जोर लगाया था।
क्षायिक सम्यक्त्व के आगे वह, क्षणभर भी न रह पाया था।।
ज्ञानावरणी जो कर्म रहा, आवरण ज्ञान पर डाल रहा।
अज्ञान महातम के कारण, जग में रहकर बहु कष्ट सहा।।3।।
यह कर्म दर्शनावरण उदय में, आ दर्शन गुण घात करे।
अन्तराय कर्म कई विघ्नों की, इस जीवन में बरसात करे।।
वेदनीय सुख-दुख का वेदन, करने में सहयोग करे।
राग-द्वेष निर्मित कर अपने, चेतन गुण को पूर्ण हरे।।4।।
गतियों में भटकाने वाला, आयू कर्म निराला है।
तीन लोक में जन्म-जरादिक, के दुख देने वाला है।।
नाम कर्म तन की रचना कर, नाना रूप बनाता है।
कर्म और नो कर्म वर्गणा, पर अधिकार जमाता है।।5।।
उच्च नीच कुल में ले जाने, वाला गोत्र कर्म गाया।
हे नाथ आपके आगे कर्मों, की न चल पाई माया।।
चिन्मूरत आप अनन्त गुणी, तुममें आनन्द समाया है।
सब ऋद्धि सिद्धियों ने झुककर, आश्रय तव पद में पाया है।।6।।
सूरज को देख गगन में ज्यों, कई फूल जमीं पर खिल जाते।
अपनी सुगन्ध सौरभ द्वारा, जन-जन के मन को महकाते।।
हे प्रभु आपका दर्श 'विशद', जग जन में प्रेम जगाता है।
शुभ ध्यान आपका भव्यों को, सीधा शिवपुर पहुँचाता है।।7।।

दोहा- जिन सिद्धों की अर्चना, करते जो धर ध्यान।
अल्प समय में जीव वह, पाते पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद- जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-48

(स्थापना)

अष्टम द्वीप रहा नंदीश्वर, जिसकी उत्तर दिशा महान्।
अञ्जन गिरि के दक्षिण रतिकर, का हम करते हैं गुणगान।।
जिनगृह में जिनबिम्ब मनोहर, जिनकी रही निराली शान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते हैं हम भी आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शंभू छंद)

भर जाएँ तीनों लोक प्रभु, हमने इतना जल पिया अहा।
न प्यास बुझी हे नाथ मेरी, चेतन कर्मों से मलिन रहा।।
अब चेतन को धोने हेतू, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।
हम जिनबिम्बों की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मोह राग का दावानल, सदियों से झुलसाता आया।
किंचित् मन की न दाह मिटी, हे नाथ ! शरण को अब पाया।।
भवताप नाश करने स्वामी, यह चंदन पद में लाए हैं।
हम जिनबिम्बों की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जीवन क्षण भंगुर पाके, कई जीव बहुत इतराते हैं।
सुख भोग पुण्य से जो मिलते, आखिर वह सब छुट जाते हैं।।
अब अक्षय पद पाने स्वामी, यह अक्षत पद में लाए हैं।
हम जिनबिम्बों की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की सुरभी से केवल, यह तृप्त नाशिका होती है।
आतम के गुणमय पुष्पों की, दुर्गन्ध वाटिका खोती है।।
अब कामबाण विध्वंस हेतु, यह पुष्प सुपद हम लाए हैं।
हम जिनबिम्बों की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस व्यंजन शुभ खाने से, इस तन का पोषण होता है।
भक्ती मय व्यञ्जन श्रेष्ठ सरस, निज क्षुधा रोग को खोता है।।
अब क्षुधारोग के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
हम जिनबिम्बों की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दीपक की मालाओं से, प्रभु जग का तिमिर नशाते हैं।
है मोह-तिमिर अन्तर्मन में, वह तिमिर मिटा न पाते हैं।।
अब मोहांधकार विनाश हेतु, यह पावन दीप जलाएँ हैं।
हम जिनबिम्बों की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषार्थ सदा करते आये, पर योग्य आचरण नहीं किया।
वसु कर्म अनादी दुख देते, हमने ना कभी यह ज्ञान लिया।।
अब अष्टकर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।
हम जिनबिम्बों की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ योग ऋतु आ जाने से, उपवन फल से भर जाते हैं।
फल योग्य ऋतु के जाते ही, वह फल सारे झड़ जाते हैं।।

अब महा मोक्षफल पाने को, ताजे फल यहाँ चढ़ाए हैं।
हम जिनबिम्बों की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ में आने वाली बाधा, हमको व्याकुल कर जाती है।
किन्तू व्याकुलता इस मन की, कर्मों का बंध कराती है।।
अब पद अनर्घ्य पाने हेतू, यह पावन अर्घ्य चढ़ाए हैं।
हम जिनबिम्बों की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- निज आतम के ध्यान से, मिले आत्म आनन्द।
शांतीधारा दे रहे, पाने सहजानन्द।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा- आत्म ज्योति प्रगटित किए, अखिल विश्व के नाथ।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, चरण झुकाते माथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- श्री जिनेन्द्र के चरण का, करते हम प्रच्छाल।
रतिकरगिरि की हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छंद)

अर्हत् पञ्च कल्याणकधारी, श्रीयुत तीर्थंकर भगवान।
शेष केवली सर्व लोक के, अतिशयकारी रहे महान्।।
वागातम हे भाग्य विधाता !, अर्चनीय हैं जिन अविकार।
विघ्नों को उपशांत करो प्रभु, आप लोक में मंगलकार।।1।।
मूल और उत्तर गुणधारी, संज्ञा तुम पाये अनगार।
चर्या है निरवद्य मुनि की, शुद्ध ध्यान के हैं आधार।।
भवि जीवों के भाग्य विधाता, अर्चनीय हैं जिन अविकार।
विघ्नों को उपशांत करो प्रभु, आप लोक में मंगलकार।।2।।
अणिमादी शुभ अष्ट ऋद्धियाँ, अरु अक्षीण विक्रियावान।
राजऋषी सुर नर से पूजित, अतिशयकारी महिमावान।।

कोष्ठ बुद्धयादि चउ विधि शुभ, आमर्षौषधि ऋद्धीवान।
ब्रह्म ऋषीश्वर नित्य अहर्निश, आत्म ब्रह्म का करते ध्यान।।3।।
जल आदिक नाना विधि चारण, अंबर चारण ऋद्धीधार।
देव ऋषी नव देव वृंद शुभ, अतिशय पाते मंगलकार।।
बोधानंत परम ज्योती युत, लोकालोक प्रकाशी नाथ।
ऋषियों से जो वंदनीय हैं, परम ऋषी कहलाए साथ।।4।।
श्रेणी द्वय आरोहण करते, सावधान होकर अविकार।
वे सब महामुनि वंदित हैं, कर्मोपशांत करें क्षयकार।।
जो समग्र या एक देश में, प्रत्यक्षात्यक्ष महान्।
सुख में जो अनुरक्त मुनीश्वर, जगत् मान्य हैं महिमावान।।5।।
उग्र दीप्त तप महातपोतप, घोर महाघोराति घोर।
उक्त साधना करने वाले, मुनिवर होते भाव विभोर।।
श्रेष्ठ वचन बल काय मनोबल, अष्टांग निमित्तक महति महान्।
क्षीरामृतस्रावी भवि मुनिवर, ऋद्धीधारी अति गुणवान।।6।।
प्रमुख रहे प्रत्येक बुद्ध मुनि, शेष विविध ऋद्धी संयुक्त।
सर्व मोक्ष के राही अनुपम, सभी विकारों से उन्मुक्त।।
हैं जिनबिम्ब प्रभू के अनुपम, वीतरागता से संयुक्त।
जिनकी अर्चा करने वाले, भव्य जीव होते भव मुक्त।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-49

(स्थापना)

नंदीश्वर की उत्तर दिश में, अञ्जनगिरी मध्य शुभकार।
जिसके दक्षिण में रतिकर शुभ, जिनगृह सहित रहा मनहार।।
जिनबिम्बों की महिमा अनुपम, जिनका कौन करे गुणगान।
पूजा करने हेतु हृदय में, करते यहाँ विशद आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(भुजंग प्रयात)

महातीर्थ गंगा का जल हम चढ़ाएँ, लगे रोग तीनों अनादी नशाएँ।
जिनबिम्ब ये अकृत्रिम पावन कहाए, पूजा को उनके हम चरणों में आए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूरादि चंदन को जल में घिसाते, मिटे ताप मन का हम पूजा रचाते।
जिनबिम्ब ये अकृत्रिम पावन कहाए, पूजा को उनके हम चरणों में आए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल क्षीर समश्वेत अक्षत बनाए, मिले नाथ अक्षत पद पूजा को आए।
जिनबिम्ब ये अकृत्रिम पावन कहाए, पूजा को उनके हम चरणों में आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बनाई सुगन्धित ये सुमनों की माला, प्रभो ! काम का नाश हो पूर्ण जाला।
जिनबिम्ब ये अकृत्रिम पावन कहाए, पूजा को उनके हम चरणों में आए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मिष्ट नैवेद्य हमने बनाए, क्षुधा रोग हो नाश हमने चढ़ाए।
जिनबिम्ब ये अकृत्रिम पावन कहाए, पूजा को उनके हम चरणों में आए।।5।।
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम दीप की हम शिखा ये जलाते, नशे मोहतम नाथ पूजा रचाते।
जिनबिम्ब ये अकृत्रिम पावन कहाए, पूजा को उनके हम चरणों में आए।।6।।
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धी बहे धूप खेने से भाई, सभी कर्म हों नाश हैं दुःखदायी।
जिनबिम्ब ये अकृत्रिम पावन कहाए, पूजा को उनके हम चरणों में आए।।7।।
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सुपारी सुबादाम लाए, विशद मोक्षफल नाथ ! पाने को आये।
जिनबिम्ब ये अकृत्रिम पावन कहाए, पूजा को उनके हम चरणों में आए।।8।।
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चन्दनादि मिला अर्घ्य भाई, चढ़ाते प्रभु पाद में सौख्यदायी।
जिनबिम्ब ये अकृत्रिम पावन कहाए, पूजा को उनके हम चरणों में आए।।9।।
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– शांतीधारा नाथ, करते हैं तव पद युगल।
चरण झुकाते माथ, मुक्ती हो संसार से।। शान्तये शांतिधारा...

सोरठा– सुरभित लाए फूल, पुष्पाञ्जलि के लिए हम।
कर्म होंय निर्मूल, शिव पदवी हमको मिले।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

जयमाला

दोहा– उत्तर दिश में जानिए, रतिकर गिरी विशेष।
पूज रहे जिस पर सभी, जिनगृह तथा जिनेश।।

छंद–तोटक

जय परम जिनेश्वर आदि जिनं, जय महि परमेश्वर शीलधरं।
जय नमित सुरासुर सौख्य करं, जय जन्म–मरण दुख पूर्णहरं।।
जय महित् सदन के ईश परम, प्रभु पाए अपना लक्ष्य चरम।
प्रभु ने प्रगटाए मूलगुणं, फिर धारे द्वादश श्रेष्ठ गुणं।।1।।
जय चन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र जयं, जय–जय उपदेशक उभय नयं।
जय जन्म महोत्सव प्राप्त करं, जय शत् इन्द्रों से पूज्य परं।।
जय इन्द्र न्हवन कर मेरु गिरं, जय देह पाँच सौ धनुष परं।
जय कोटी पूरब श्रेष्ठ परं, जग में कहलाए आयु धरं।।2।।
जय धर्म प्रवर्तन किए वरं, जय कर्मोपदेशक आप परं।
प्रभु जिन योगीश्वर हुए प्रथम, जय संयमधारी हैं उत्तम।।
जय सेवित व्यंतर नाग सुरं, जय नमित सुरासुर भानु परं।
जय–जय जगति पति क्लेश हरं, जय मनोकामना पूर्ण करं।।3।।
जय ज्ञान रूप जय धर्म रूप, जय चन्द्र वदन अकलंक रूप।
जय भव्य दयाकर भव्य हंस, जय प्रगटित शुभकर चारुवंश।।
जय ईश्वर गुण गण महतिमान, जय–जय श्रीपति जयश्रीवान।
जय पाप तिमिर हन चन्द्र रूप, जय दोष निवारक जिन अनूप।।4।।
जय मोक्षमार्ग के प्रथम ईश, तव पद में झुकते नराधीश।
जय गणधर यतिपति सेव्य पाद, जय शारद नीरद दिव्यनाद।।
जय जन–जन के दुखहरणहार, हे पूर्ण ! दिगम्बर निराकार।
जय नित्य निरंजन अवनि पाल, जय नाशन हारे कर्म जाल।।5।।
जय–जय जिन स्वामी पूज्यपाद, तव शासन अतिशय निरावाद।
जय–जय हे जिनवर मूर्तिमान, तुमसे इस जग की रही शान।।
जय शरणागत के शरण रूप, तुम तीर्थ रहे अतिशय अनूप।
हम 'विशद' जोड़कर दोय हाथ, नत वंदन करते चरण नाथ।।6।।

जिनबिम्ब बताए निराकार, जो पूजें सुर-नर अनागार।
अकृत्रिम हैं जो वीतराग, कहते हे प्राणी ! त्याग राग।।
जिनकी पूजा जग में महान्, जो करें कर्म की शीघ्र हान।
हम पूजा करते यहाँ आन, अब प्राप्त हमें हो 'विशद' ज्ञान।।7।।

घत्तानंद छंद

जय-जय जिनचंदं, आनंद कंदं, नाशी भव-भव के फंदं।
जिनबिम्ब जिनंदं, दोष निकंदं, चौबिस जिनवर पद वंद्यं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-50

(स्थापना)

नंदीश्वर की उत्तर दिश में, अञ्जन गिरि का पश्चिम भाग।
छटवाँ रतिकर कंचन वर्णी, जिससे जीव करें अनुराग।।
जिसके ऊपर जिनगृह अन्दर, जिन प्रतिमाएँ रहीं महान।
आज यहाँ करते हम जिनका, हृदय कमल में शुभ आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(चौपाई)

नाथ आपको हम सब ध्याते, चरणों में यह नीर चढ़ाते।
शिवपथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवक बनकर हम सब आए, चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए।
शिवपथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त बने भक्ति को आए, अक्षय पद को अक्षत लाए।
शिवपथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प चढ़ाकर हम हर्षाएँ, काम रोग को पूर्ण नशाएँ।
शिवपथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छंद)

नैवेद्य चढ़ाने लाएँ, हम क्षुधा नशाने आएँ।
हम आठों कर्म नशाएँ, अब शिव पदवी को पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम दीप जलाते स्वामी, हो मोह नाश शिवगामी।
हम आठों कर्म नशाएँ, अब शिव पदवी को पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सुरभित धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम आठों कर्म नशाएँ, अब शिव पदवी को पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाने लाए, हम शिवफल पाने आए।
हम आठों कर्म नशाएँ, अब शिव पदवी को पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो है मुक्तीपथ दायी।
हम आठों कर्म नशाएँ, अब शिव पदवी को पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा के लिए, क्षीर सिन्धु का नीर।
लाए तव चरणों प्रभू, हरो नाथ भव पीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लाए खुशबूदार।
अल्प समय में हे प्रभू !, होय आत्म उद्धार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– रतिकर अष्टम द्वीप में, सोहें मंगलकार।
उसमें जिनवर के चरण, वन्दन बारम्बार।।

(शम्भू छन्द)

सिद्ध प्रसिद्ध रहे इस जग में, जो अनन्त गुणवान कहे।
भक्तों के आराध्य कहाए, सिद्धि प्रदायक नाथ रहे।।
चतुर्गती में जीव रहे जो, सब निगोद से आते हैं।
गतियों में जा जाकर सारे, दुःख अनेकों पाते हैं।।1।।
पुण्य उदय से नर गति पाई, गुरुओं ने संदेश दिया।
शिक्षा दीक्षा पाकर अनुपम, संयम व्रत को धार लिया।।
अनुप्रेक्षा का चिंतन करके, निज स्वभाव को ध्याया है।
सम्यक् श्रद्धा को प्रगटाकर, वीतराग पद पाया है।।2।।
शीत ऋतु में सरिता तट पर, शीत योग को धारा है।
ग्रीष्म ऋतु में आतापन शुभ, तुमने योग सम्हारा है।।

वृक्ष मूल वर्षा में जाकर, योग धारकर खड़े रहे।
ध्यान योग में लीन रहे तब, मुनिवर परिषह कई सहे।।3।।
धर्म ध्यान अरु शुक्ल ध्यान से, कर्मों का कीन्हा संहार।
जड़–चेतन उपसर्ग सहनकर, पाया है आतम का सार।।
जड़ को जड़ चेतन को चेतन, तभी समझ में आया है।
शुद्ध ध्यान करके आतम का, निज स्वरूप को पाया है।।4।।
कर्मों की शक्ती हीन हुई, तप ने जब जोर दिखाया है।
कर्मों के भू का हनन हुआ, न चली कोई भी माया है।।
क्षायिक श्रेणी पर चढ़कर के, फिर विशद ज्ञान को प्रगटाया।
इन्द्रों ने चरणों में आकर, जयकारा प्रभु का लगवाया।।5।।
शुभ समवशरण बनता प्रभु का, सौ इन्द्र वहाँ पर आते हैं।
पूजा अर्चा वन्दन करते, नत हो चरणों झुक जाते हैं।।
फिर ॐकारमय दिव्य ध्वनि, खिरती जिनेन्द्र की मंगलमय।
सुनकर जीवों में हर्ष बढ़े, होता है कई कर्मों का क्षय।।6।।
हो आयु कर्म का अन्त समय, फिर समुद्घात करते स्वामी।
फिर शेष कर्म का नाश किए, बन जाते प्रभु अन्तर्यामी।।
शास्वत स्वाश्रित सुख पाकर के, प्रभु गुणानन्त को पाते हैं।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह 'विशद' भावना भाते हैं।।7।।

दोहा– अन्तिम है यह भावना, ज्ञान कली खिल जाय।
सिद्धों का गुणगान कर, सिद्ध श्री मिल जाय।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा षष्ठम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-51

(स्थापना - चाल छंद)

नंदीश्वर द्वीप कहाये, उत्तर दिश में शुभ जाए।
है अञ्जनगिरि मनहारी, जिसके उत्तर शुभकारी।।
सप्तम रतिकर बतलाया, जिसपे जिनगृह शुभ गाया।
जिनबिम्ब रहे सुखदायी, आह्वानन् करते भाई।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(हरिगीता छंद)

निज आत्मा को रत्नत्रय जल, से धुलाने आये हैं।
भव रोग जन्मादिक मिटाने, को शरण में आये हैं।।
शास्वत जिनालय हैं अकृत्रिम, और जिन भगवान हैं।
शास्वत सुपद पाने चरण में, आपका गुणगान है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव ताप निज का दूर करने, की लगन मन में लगी।
तव शांत मुद्रा देखकर प्रभु, चेतना की शुधि जगी।।
शास्वत जिनालय हैं अकृत्रिम, और जिन भगवान हैं।
शास्वत सुपद पाने चरण में, आपका गुणगान है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम राग में संसार के उलझे, ना शिवपद पाए हैं।
अब सुपद अक्षय प्राप्त करने, नाथ चरणों आए हैं।।

शास्वत जिनालय हैं अकृत्रिम, और जिन भगवान हैं।
शास्वत सुपद पाने चरण में, आपका गुणगान है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषय भोगों में फँसकर, भ्रमर बन भरमाए हैं।
हम काम बाधा नहीं अपनी, नाश प्रभु कर पाए हैं।।
शास्वत जिनालय हैं अकृत्रिम, और जिन भगवान हैं।
शास्वत सुपद पाने चरण में, आपका गुणगान है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा व्याधी से व्यथित, त्रय काल में होते रहे।
घन घात कर्मों के अनादी, काल से हमने सहे।।
शास्वत जिनालय हैं अकृत्रिम, और जिन भगवान हैं।
शास्वत सुपद पाने चरण में, आपका गुणगान है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या तिमिर में विद्ध होकर, दोष अनगिनते किए।
अब तिमिर मिथ्या नाश करने, लाये जला करके दिए।।
शास्वत जिनालय हैं अकृत्रिम, और जिन भगवान हैं।
शास्वत सुपद पाने चरण में, आपका गुणगान है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्भावनाओं ने जलाए, सुगुण आतम के सभी।
निज गुण स्वयं के स्वयं में हैं, जान पाए ना कभी।।
शास्वत जिनालय हैं अकृत्रिम, और जिन भगवान हैं।
शास्वत सुपद पाने चरण में, आपका गुणगान है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल धर्म का अनुपम अपूरव, प्राप्त ना कर पाए हैं।
चैतन्य चिन्तन का सुफल, पाने श्रीफल लाए हैं।।
शास्वत जिनालय हैं अकृत्रिम, और जिन भगवान हैं।
शास्वत सुपद पाने चरण में, आपका गुणगान है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! महिमा आपकी हम, जानकर आये यहाँ।
यह अर्घ्य अर्पित कर रहे हैं, पाने सुपद शास्वत महाँ।।
शास्वत जिनालय हैं अकृत्रिम, और जिन भगवान हैं।
शास्वत सुपद पाने चरण में, आपका गुणगान है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा के लिए, क्षीर सिन्धु का नीर।
लाए तव चरणों प्रभू, हरो नाथ भव पीर।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लाए खुशबूदार।
अल्प समय में हे प्रभू !, होय आत्म उद्धार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– गिरि के ऊपर जिन भवन, जिन के होते दर्श।
सुर सुरेन्द्र नागेन्द्र सब, विशद मनायें हर्ष।।

(चाल–टप्पा)

ज्ञानावरणी नाश हुए प्रभु, त्रिभुवन के स्वामी।
पाकर केवलज्ञान बने हैं, मुक्ती पथगामी।।
जिनेश्वर हे अंतर्यामी.....
केवलज्ञान प्राप्त कर भगवन्, बने मोक्षगामी।। जिने.

सम्यक्दर्शन चतुर्गती में, पाते हैं प्राणी।
श्री जिनेन्द्र ने कथन किया यह, कहती जिनवाणी।। जिनेश्वर हे अंतर्यामी !.
निज आतम की शक्ती जग में, जिसने पहिचानी।
सम्यक्दृष्टी देवशास्त्र गुरु, के हों श्रद्धानी।। जिनेश्वर हे अंतर्यामी !...
सम्यक्दर्शन पाने वाले, हों सम्यक्ज्ञानी।
द्रव्य भाव श्रुत के ज्ञाता फिर, बनते निजध्यानी।। जिनेश्वर हे अंतर्यामी !
अनुक्रम से बन जाते हैं फिर, चारित के स्वामी।
रत्नत्रय को पाने वाले, मुक्ती पथगामी।। जिनेश्वर हे अंतर्यामी !...
क्षपक श्रेण्यारोहण करके, बनते निज ध्यानी।
ज्ञानावरणी कर्म नाश वह, हों केवलज्ञानी।। जिनेश्वर हे अंतर्यामी !...
अनंत चतुष्टय पाने वाले, इस जग के स्वामी।
मोक्षमार्ग दर्शाने वाले, हों त्रिभुवन नामी।। जिनेश्वर हे अंतर्यामी !...
जिन प्रतिमाओं की महिमा को, कहे कौन ज्ञानी।
त्रिभुवनपति के द्वारे आकर, झुकते सब मानी।। जिनेश्वर हे अंतर्यामी...
ज्ञान 'विशद' हम पाने आये, हे जिनवर स्वामी।
विनती मम स्वीकार करो अब, हे शिवपुर गामी।। जिनेश्वर हे अंतर्यामी...

दोहा– जिन जिनबिम्बों की रही, महिमा अपरम्पार।
पूजा करके जीव इस, जग से होते पार।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा सप्तम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनपूजा-52

(स्थापना)

अष्टम दीप रहा नंदीश्वर, जिसकी उत्तर दिशा विशाल।
अञ्जन गिरि के उत्तर दिश में, रतिकर का अब जानो हाल।।
चित्र विचित्र रत्नमय मंदिर, जिसके ऊपर रहे महान।
जिनबिम्बों का जिसके हम भी, करते 'विशद' यहाँ आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(त्रिभंगी छंद)

जय धर्म सरोवर, महा मनोहर, भव्य भ्रमर प्रमुदित कारी।
जय जन्म जरादिक, रोग अनादिक, हे जिनेन्द्र पीड़ा हारी।।
गुण छियालिस धारी, दोष निवारी, केवल ज्ञान जगाया है।
प्रभु पूज रचाने, तव गुण गाने, भक्त शरण में आया है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव ताप जलाए, द्वेष बढ़ाए, नाथ ! हमें शीतल कर दो।
हम चन्दन लाए, चरण चढ़ाए, भवाताप मेरा हर लो।।
गुण छियालिस धारी, दोष निवारी, केवल ज्ञान जगाया है।
प्रभु पूज रचाने, तव गुण गाने, भक्त शरण में आया है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद धारी, जिन अविकारी, अक्षय पद का दान करो।
अक्षय निधि स्वामी, अन्तर्यामी, हमको नाथ प्रदान करो।।
गुण छियालिस धारी, दोष निवारी, केवल ज्ञान जगाया है।
प्रभु पूज रचाने, तव गुण गाने, भक्त शरण में आया है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जग में भटकाए, विषय शताए, भोगों ने हमें लुभाया है।
प्रभुवर शीलेश्वर, हे परमेश्वर, भक्त शरण में आया है।।
गुण छियालिस धारी, दोष निवारी, केवल ज्ञान जगाया है।
प्रभु पूज रचाने, तव गुण गाने, भक्त शरण में आया है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नित क्षुधा सताए, कष्ट बढ़ाए, रोग बड़ा भयकारी है।
नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा नशाएँ, मुक्ती की आश हमारी है।।
गुण छियालिस धारी, दोष निवारी, केवल ज्ञान जगाया है।
प्रभु पूज रचाने, तव गुण गाने, भक्त शरण में आया है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे आतम ज्ञानी, भेद विज्ञानी, मोह महातम के नाशी।
हम दीप जलाएँ, ज्ञान जगाएँ, बन जाएँ शिवपुर वासी।।
गुण छियालिस धारी, दोष निवारी, केवल ज्ञान जगाया है।
प्रभु पूज रचाने, तव गुण गाने, भक्त शरण में आया है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के मारे, जग से हारे, चतुर्गती में दुख पाये।
हम धूप जलाएँ, कर्म नशाएँ, चरण शरण में हम आये।।
गुण छियालिस धारी, दोष निवारी, केवल ज्ञान जगाया है।
प्रभु पूज रचाने, तव गुण गाने, भक्त शरण में आया है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जन हितकारी, शिवफल धारी, मोक्ष महाफल हम पाएँ।
यह जग है निष्फल, सरस लिए फल, पूजा करने हम लाएँ।।

गुण छियालिस धारी, दोष निवारी, केवल ज्ञान जगाया है।
प्रभु पूज रचाने, तव गुण गाने, भक्त शरण में आया है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन लाए, पुष्प मिलाए, अर्घ्य बनाया यह भाई।
वसु कर्म नशाने शिवपद पाने, चढ़ा रहे मंगलदायी।।
गुण छियालिस धारी, दोष निवारी, केवल ज्ञान जगाया है।
प्रभु पूज रचाने, तव गुण गाने, भक्त शरण में आया है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जिनवर की महिमा अगम, कोई ना पावे पार।
शांती धारा दे यहाँ, बन्दू बारम्बार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा– श्री अरहंत जिनेश के, गुणानन्त गंभीर।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, मिटे विभव की पीर।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

जयमाला

दोहा– रतिकरगिरि रति सम शुभम्, शास्वत रहे सदैव।
पूजा करते द्रव्य ले, चतुर्गती के देव।।

(पद्धड़ी छंद)

जय–जय अखण्ड चैतन्य रूप, तुम ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप।
रागादि विकारी भाव हीन, तुम हो चित् चेतन ज्ञान लीन।।
निर्द्वन्द निराकुल निर्विकार, निर्मम निर्मल हो निराधार।
कर राग द्वेष नो कर्म नाश, स्वभाविक गुण में किए वास।।
जय शिव वनिता के हृदय हार, प्रभु नित्य निरंजन निराकार।
कर निज परिणति का सत्य भान, सद्धर्म रूप शुभ तत्त्व ज्ञान।।
प्रभु अशरीरी चैतन्यराज, अविरुद्ध शुद्ध शिव सुख समाज।
सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञानवान, सूक्ष्मत्व अगुरुलघु सुगुण खान।।
अवगाह वीर्य सुख निराबाध, प्रभु धर्म सरोवर है अगाध।
प्रभु अशुभ कर्म को मान हेय, माना चित् चेतन उपादेय।।

रागादि रहित निर्मल निरोग, स्वाश्रित शाश्वत् शुभ सुखद भोग।
कुल गोत्र रहित निष्कुल निश्छल, मायादि रहित निश्चल अविकल।।
चैतन्य पिण्ड निष्कर्म साध्य, तुम हो प्रभु भविजन के अराध्य।
मनसिज ज्ञायक प्रतिभाष रूप, हे स्वयं सिद्ध ! चैतन्य भूप।।
चैतन्य विलासी द्रव्य प्रमाण, नाशे प्रभु सारे कर्म वाण।
प्रभु जान सका मैं तुम्हें आज, हो गये सफल सम्पूर्ण काज।।
प्रगट्यो मम् उर में भेद ज्ञान, न तुम सम है कोई महान।
तुम पर के कर्त्ता नहीं नाथ, हम जोड़ प्रार्थना करें हाथ।।
तुम ज्ञाता सबके एक साथ, तव चरणों में झुक गया माथ।
ये भक्त खड़ा है विनयवन्त, प्रभु करो शीघ्र भव का सुअन्त।।
अब हमने भी यह लिया जान, तुम करते सबको निज समान।
जय वीतराग चैतन्य वान, जय–जय अनन्त गुण के निधान।।
तुममें पर का कुछ नहीं लेश, तुम हो जग के ज्ञायक जिनेश।
जो करें आपका विशद ध्यान, वह पाता है कैवल्य ज्ञान।।
फिर करें कर्म का पूर्ण अन्त, हो जाए क्षण में श्री संत।
तब सिद्ध सिला पर हो विश्राम, निज पद ही हो आनन्द धाम।।
मेरे मन आवे यही देव, बन जाऊँ मैं भी 'विशद' एव।
मिट जाए आवागमन नाथ, वह पद पाने पद झुका माथ।।

(छन्द घत्तानन्द)

श्री सिद्ध अनन्ता, शिव तिय कन्ता, वीतराग विज्ञान परं।
जय जग उद्धारं, शिव दातारं, सर्व मनोहर सौख्य करं।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा अष्टम् रतिकरगिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य– ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ जिन बिम्बेभ्यो नमः स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा– नन्दीश्वर वर दीप में, जिनगृह बने त्रिकाल।
अर्चा करते हम यहाँ, गाकर के जयमाल।।

(चौबोला छंद)

तीर्थंकर पद के धारी जिन, शत इन्द्रों से पूज्य चरण।
समवशरण के स्वामी होते, प्रभु चरणों में विशद नमन।।
सप्त भूमियाँ समवशरण की, सप्त तत्त्व जो दर्शाएँ।
सप्त भयों से मुक्ति दिलाए, वात्सल्यता सिखलाएँ।।1।।

समवशरण के बाह्य भाग में, धूलिशाल शुभ कोट बना।
अन्दर मानस्तम्भ बने हैं, जिसमें सोहें जिन प्रतिमा।।
चार कोट अरु पञ्च वेदियाँ, दिव्य स्वर्णमय शुभकारी।
सप्त भूमि श्री मण्डप भू के, मध्य शोभती मनहारी।।2।।

गंध कुटी है मध्य में अनुपम, तीन पीठिका युक्त महान।
कमलासन पर अधर विराजे, जिसके ऊपर जिन भगवान।।
दिव्य देशना खिरती अनुपम, झेला करते गणधर देव।
भव्य जीव नत होकर चरणों, भक्ती करते जहाँ सदैव।।3।।

वीतराग जिनवर की मुद्रा, श्रेष्ठ रही जग में पावन।
बिन बोले उपदेश सुनाती, भवि जीवों को मन–भावन।।
नंदीश्वर है दीप आठवाँ, काल अनादी महति महान।
चतुर्दिशा में बने जिनालय, ऐसा कहते हैं भगवान।।4।।

मध्य बना अंजनगिरि जिसको, श्रेष्ठ वापिका घेर रही।
जल से युक्त रत्नमय अनुपम, मंगलकारी श्रेष्ठ कही।।

जिसके चतुष्कोण पर अनुपम, दधिमुख शोभा पाते हैं।
जिनपर जिनगृह जिनबिम्बों की, महिमा सुर–नर गाते हैं।।5।।

दधिमुख के द्वय बाह्य कोंण पर, रतिकर सोहें मनहारी।
जिनके ऊपर बने जिनालय, अकृत्रिम अतिशयकारी।।
कृत्रिम रचना करते मानव, मण्डल की रचना करते।
स्थापित कर जिनबिम्बों को, भाव सहित जो आचरते।।6।।

कृतकारित अनुमोदन द्वारा, भाव सहित करते अर्चन।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, करते हैं सविनय पूजन।।
'विशद' भावना भाते हम भी, ऐसी अब शक्ती पावें।
नंदीश्वर में जाकर जिनवर, के चरणों में सिरनावें।।7।।

भक्ती का फल रहा अलौकिक, भव्य जीव मुक्ती पाते।
कर्म नाशकर अपने सारे, भव्य जीव शिवपुर जाते।।
इसी भावना से जिन पद में, आज यहाँ करते अर्चन।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हैं शत्–शत् वन्दन।।8।।

दोहा– नंदीश्वर शुभ दीप की, रचना रही महान।
उसमें जिनगृह बिम्ब पद, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टम द्वीप नन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य भक्ती से विशद, यह नंदीश्वर पूजा करें।
वे आत्मा में लगा कल्मष, शीघ्रता से परिहरें।।
शुभ योग मंगल रिद्धि नव निधि, प्राप्त कर शिवपद धरें।
वह 'विशद' ज्ञानी हो रहें, आनन्द के झरना झरें।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नन्दीश्वर की आरती *(तर्ज : शांति अपरम्पार है ..)*

नन्दीश्वर अविराम है, बावन शुभ जिन धाम हैं,
जिन चरणों की आरति करके, करते विशद प्रणाम हैं।

प्रथम आरती अंजनगिरि की, चतुर्दिशा में सोहें जी-2
जिन चैत्यालय चैत्य हैं उन पर, सबके मन को मोहें जी-2 ।। नन्दीश्वर...
अंजनगिरि के चतुर्दिशा में, बावड़िया शुभ जानो जी-2
स्वच्छ नीर से भरी हुई हैं, अतिशय कारी मानो जी। नन्दीश्वर...
मध्य बावड़ी के हैं दधिमुख, अतिशय मंगलकारी जी-2
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी-2 ।। नन्दीश्वर...
बावड़ियों के बाह्य कोंण पर, रतिकर विस्यमकारी जी-2
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी-2 ।। नन्दीश्वर...
शाश्वत जिनगृह जिनबिम्बों की, आरती करने आये हैं-2
'विशद' अर्चना के परोक्ष ही, हमने भाव बनाएँ हैं।। नन्दीश्वर...

श्री नन्दीश्वर द्वीप स्तुति (तर्ज - श्री सिद्धचक्र का पाठ करो...)

श्री नन्दीश्वर का पाठ, करो दिन आठ, विशद मनहारी। जो रहा कर्म क्षयकारी।। टेक।।

जब पर्व अठाई आते हैं, सुर नन्दीश्वर में जाते हैं।
सब प्रभु की भक्ति करते अतिशयकारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।1।।
हैं अकृत्रिम जिन प्रतिमाएँ, जो वीतरागता दर्शाएँ।
जिनकी मुद्रा है पावन शुभ अविकारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।2।।
सुर प्रभु का न्हवन कराते हैं, जो जय-जयकार लगाते हैं।
जो करते हैं जिन पूजा मंगलकारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।3।।
नर-मुनि ऋद्धीधर ना जावें, ना विद्याधर शक्ति पावें।
वे कृत्रिम रचना करते हैं शुभकारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।4।।
नन्दीश्वर पूजा यह भाई, होती है पावन फलदायी।
जिन अर्चा करते हैं सुर नर अनगारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।5।।
हम जिन पूजा करने आये, यह द्रव्य बनाकर के लाए।
प्रभु न्हवन हेतु यह भरकर लाए झारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।6।।
हे नाथ ! आपको हम ध्यायें, शिवपथ के राही बन जाएँ।
हो 'विशद' भावना पूरी आज हमारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।7।।

प्रशस्ति

(चौपाई)

मध्य लोक में भारत देश, जिसमें गाया मध्य प्रदेश।
जिला छतरपुर रहा महान्, ग्रामकुपी जिसमें स्थान।।
सरिता बहे वराना पास, करें गाँव में सभी निवास।
वहाँ सेठ के जानो हाल, जिनका नाम भरोसे लाल।।
पुत्र हुए दो उनके श्रेष्ठ, रामचन्द्र कहलाए ज्येष्ठ।
छोटे पुत्र थे नाथूराम, सभी जानते जिनका नाम।।
जिनके पुत्र का नाम रमेश, ज्ञानी ध्यानी हुए विशेष।
विमल सिन्धु के शिष्य विराग, धर्म से जिनको था अनुराग।।
जिनका पाकर के उपदेश, दीक्षा धारे भाई रमेश।
सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि धाम, विशद सिन्धु पाए शुभ नाम।।
जगह-जगह मुनि किए विहार, किया आपने धर्म प्रचार।
जयपुर में जब रहा प्रवास, भरत सिन्धु के पहुँचे पास।।
जिनने दिया सुपद आचार्य, लेखन का फिर कीन्हें कार्य।
विशद सिन्धु कई लिखे विधान, जिनकी रही अलग पहिचान।।
नन्दीश्वर में हैं जिन ईश, सुर-नर पूजें जिन्हें ऋशीष।
उनकी पूजा हेतु विधान, लिखें जगा यह भाव महान्।।
दिल्ली शहर में यमुना पार, कई जगहों पर किया विहार।
नवीन शाहदरा रहा प्रवास, गौतमपुरी है जिसके पास।।
पार्श्वनाथ जिन के पद आन, पूर्ण हुआ यह श्री विधान।
पच्चिस सौ उन्तालिस जान, कहलाया यह वीर निर्वाण।।
तीज कृष्ण वैसाख महान्, रविवार दिन रहा प्रधान।।
अक्षर पद मात्रा की भूल, ज्ञानी जन बाचें अनुकूल।
ज्ञानी जन आगम अनुसार, करें भूल का पूर्ण सुधार।।

दोहा- लघु धी से जो भी लिखा, जानो यही प्रमाण।
जिनवाणी के कथन पर, किया विशद गुणगान।।

अष्टाह्निका (नन्दीश्वर पर्व) चालीसा

दोहा– पर्व अठाई में सदा, देव करें प्रस्थान।
नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, करें प्रभू गुणगान।।
चालीसा गाते यहाँ, जिनका हम शुभकार।
जिनबिम्बों के चरण में, वन्दन बारम्बार।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, अन्तहीन आकाश कहाया।।1।।
मध्यलोक जिसमें शुभकारी, जिसकी है कुछ महिमा न्यारी।।2।।
जिसके मध्य सुमेरू गाया, जम्बूद्वीप प्रथम कहलाया।।3।।
द्वीप को सागर घेरे जानो, सागर को फिर दीप बखानो।।4।।
अष्टम है नन्दीश्वर भाई, जिसकी फैली जग प्रभुताई।।5।।
एक सौ त्रेसठ कोटि प्रमाणा, लाख चुरासी योजन माना।।6।।
पर्व अढ़ाई जब भी आवें, देव वहाँ पूजन को जावें।।7।।
जिनबिम्बों का न्हवन करावें, गंधोदक निज माथ लगावें।।8।।
चूड़ी सदृश गोला जानो, चारों दिश में जिनगृह मानो।।9।।
इक–इक दिश में तेरह गाये, बावन जिनगृह सर्व बताये।।10।।
चारों दिश की रचना भाई, शास्त्रों में ऐसी बतलाई।।11।।
मध्य में अञ्जन गिरि शुभकारी, अञ्जन जैसी सोहे कारी।।12।।
योजन सरस चुरासी भाई, अञ्जन गिरि की है ऊँचाई।।13।।
रही वापिका घेरे भाई, निर्मल जल से युक्त बताई।।14।।
चारों दिश में दधिमुख सोहे, दधि समान मन को जो मोहे।।15।।
दश हजार योजन ऊँचाई, दधिमुख गिरियों की बतलाई।।16।।
जिसके बाह्य कोण में भाई, रतिकर गिरियाँ हैं अतिशायी।।17।।
लाल रंग जिनका मनहारी, योजन एक उच्च शुभकारी।।18।।
ढोल की पोल समान बताए, सब प्रकार के पर्वत गाए।।19।।

बावड़ियाँ चउ दिश में जानो, एक लाख योजन की मानो।।20।।
फूल खिले जिनमें मनहारी, रत्नमयी हैं शोभा भारी।।21।।
अञ्जन गिरि शुभ चार बताए, दधिमुख सोलह पावन गाए।।22।।
रतिकर बत्तिस हैं मनहारी, जिन पे जिनगृह मंगलकारी।।23।।
स्वर्ण रत्नमय आभा वाले, जिनगृह गाए श्रेष्ठ निराले।।24।।
ध्वजा कंगूरे कलशा भाई, घंटा तोरण युत अतिशायी।।25।।
एक सौ आठ गर्भ गृह जानो, प्रति जिनगृह में सोहें मानो।।26।।
सिंहासन पर जिनवर सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।।27।।
प्रति जिनगृह में जिन प्रतिमाएँ, एक सौ आठ–आठ जिन गाएँ।।28।।
नयन श्याम अरु श्वेत बताए, नख मुख लाल रंग के गाए।।29।।
भौंह केश काले बतलाए, स्वर्ण मयी जिनबिम्ब बताए।।30।।
बत्तिस युगल यक्ष शुभकारी, चँवर ढुराते मंगलकारी।।31।।
श्रीदेवी श्रुतदेवी जानो, पास मूर्तियाँ जिनकी मानो।।32।।
सर्वाह्ण यक्ष पास में गाए, सनतकुमार भी शोभा पाए।।33।।
मंगल द्रव्य अष्ट है जानो, पास में श्री जिन के हों मानो।।34।।
धूप घड़े सोहें शुभकारी, मणिमालाएँ मंगलकारी।।35।।
मुखप्रेक्षा मण्डप भी सोहें, नर्तन क्रीड़ा गृह मन मोहें।।36।।
चित्र भवन वन्दन गृह गाये, न्हवन और गुण गृह बतलाए।।37।।
हम परोक्ष वन्दन को आए, दर्शन पाएँ भाव बनाए।।38।।
यहाँ बैठ हम अर्चा करते, नाथ चरण में माथा धरते।।39।।
धन्य सुअवसर हम ये पाएँ, कर्मनाश कर शिवपद पाएँ।।40।।

दोहा– चालीसा पढ़ के 'विशद', हो अतिशय आनन्द।
जीवन सुखमय शांत हो, कर्माश्रव हो मन्द।।
पर्व अठाई में पढ़ें, सुने सुनाएँ जोय।
रोग शोक क्लेशादि भी, दूर शीघ्र ही होय।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः।

श्री नन्दीश्वर द्वीप स्तुति

(तर्ज – श्री सिद्धचक्र का पाठ करो...)

श्री नन्दीश्वर का पाठ, करो दिन आठ, हृदय हर्षाई। सब पातक जाँय नसाई।। टोक।।

यह दीप आठवाँ गाया है, जो गोलाकार बताया है।
जिसकी फैली है इस जग में प्रभुताई, सब पातक जाँय नसाई।।1।।
है मध्य में अञ्जन गिरि काली, जो जन-मन को हरने वाली।
योजन चौरासी सहस रही ऊँचाई, सब पातक जाँय नसाई।।2।।
अञ्जन गिरि के चउ दिश सोहें, दधिमुख दधिसम मन को मोहें।
दश सहस रही योजन की शुभ ऊँचाई, सब पातक जाँय नसाई।।3।।
दधिमुख के बाह्य कोंण जानो, दो-दो रतिकर सोहें मानो।
है इक योजन की जिनकी भी ऊँचाई, सब पातक जाँय नसाई।।4।।
यह तेरह एक दिशा गाए, चउ दिश में बावन बतलाए।
जिनके ऊपर जिनगृह सोहें सुखदायी, सब पातक जाँय नसाई।।5।।
जिनबिम्ब एक सौ आठ कहे, प्रति जिनगृह में मन मोह रहे।
है वीतराग मुद्रा जिनकी शिवदायी, सब पातक जाँय नसाई।।6।।
जब पर्व अठाई आते हैं, सुर नन्दीश्वर में जाते हैं।
जो 'विशद' न्हवन अर्चन करते हैं भाई, सब पातक जाँय नसाई।।7।।

हम महावीर की वाणी से मिलते उपदेश की पूजा करते हैं।
हम नाम नहीं चाम नहीं वीतरागी भेष की पूजा करते हैं।।
जो ज्ञान सूर्य चरित्र वीर अज्ञान तिमिर को हरते हैं।
उन विशद संत चरणों में नत हो शत् शत् वंदन करते हैं।।

नहीं अर्हंत का जग में, पुनः अवतार होता है।
बने त्यागी दिगम्बर जो, विशद अनगार होता है।।
संत भगवंत का जिसको, सदा आशीष मिलता है।
उसी बन्दे का जीवन में, विशद उद्धार होता है।।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंॐ
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननॐ

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाॐ

विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्व.स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥

तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता ।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया ।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा ।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे ।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।। गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुन्ना, श्योपुर